ISSN 2349-6614

अक्टूबर 2022 मूल्य 50 रु

प्रत्यूष

हिन्दी मासिक पत्रिका

लाभ-शुभ की, घरों में बहुलता रहे।
धान्य-धन, सम्पदा, नित्य बढ़ती रहे॥
चक्र समृद्धि का नित्य चलता रहे।
दीप यह जलता रहे॥

प्रकाशन की तिथि प्रत्येक माह की 23 तारीख वर्ष 20 अंक 6, Postal Registration No. RJ/UD/29-62/2021-23 Posting Date: 27th-28th of Every Month RNI No. RAJHIN/2003/9297 Posting Office: Chetak Circle, Udaipur

Happy Diwali

Ankit Jain
Director

Galaxy
Infrastucture

GALAXY EMERALD APARTMENT, Near Aiyappa Temple,
Pragari Nagar, Shobhagpura, Udaipur (Raj.) Mob.: +91 9887056669

विजयादशमी और दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं

अक्टूबर 2022 वर्ष: 20, अंक: 6

प्रत्यूष

मूल्य 50 रू
वार्षिक 600 रू

'प्रत्यूष' के प्रेरणा स्रोत मात श्रीमती प्रमिला देवी शर्मा एवं तात श्री आनन्दी लाल जी शर्मा
प्रत्यूष परिवार का शत्-शत् नमन चरणों में पुष्प समर्पण

अंदर के पृष्ठों पर...

युग पुरुष
स्वतंत्रता आंदोलन और महात्मा गांधी

08

धर्म क्षेत्रे
धर्म और सत्य की प्रतिष्ठा का उत्सव विजयादशमी
14

नवांकुर

क्षेत्रीय दलों को खदेड़ आगे हुई दस साल की 'आप'
20

चिंतन
खुदकशी की दर नए रिकॉर्ड पर

24

लौह पुरुष

राष्ट्रीय एकता के शिल्पी सरदार पटेल
36

प्रधान सम्पादक विष्णु शर्मा हितैषी

सम्पादक रेणु शर्मा

विपणन प्रबंधक नितेश कुमार, नंदकिशोर मदन, भूमिका, उषा चन्द्रप्रभा, संगीता

टाइप सेटिंग जगदीश सालवी

सलाहकार मण्डल
गोपाल शर्मा (गोपजी), वैभव गहलोत
पवन खेड़ा, नीरज डांगी
कुलदीप इंदौरा, कृष्णकुमार हरितवाल
धीरज गुर्जर, अभय जैन
लालसिंह झाला, ओम शर्मा
अजय गुर्जर, आदित्य नाग
हेमंत भागवानी, डॉ. राव कल्याणसिंह
अशोक तम्बोली, सुंदरदेवी सालवी

चीफ रिपोर्टर : उमेश शर्मा

जिला संवाददाता
बांसवाड़ा - अनुराग चेलावत
चित्तौड़गढ़ - संदीप शर्मा
नाथद्वारा - लोकेश दवे
डूंगरपुर - सारिका राज
राजसमंद - कोमल पालीवाल
जयपुर - राव संजय सिंह
मोहसिन खान

प्रत्यूष में प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं, इनसे संस्थापक-प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।

प्रत्यूष
हिन्दी मासिक पत्रिका
प्रकाशक - संस्थापक:
Pankaj Kumar Sharrma
''रक्षाबंधन'', धानमण्डी, उदयपुर-313 001

कार्यालय पता : 2, 'रक्षाबन्धन' धानमण्डी, उदयपुर (राज)
दूरभाष एवं फैक्स: 0294-2427703 वाट्सएप 9414077697
मोबाइल : 94141-57703(विज्ञापन), वाट्सएप 75979-11992(समाचार-आलेख), 98290-42499(वाट्सएप), 94141-66737
Email:pankajkumarsharma2013@gmail.com, Visit us at: www.pratyushpatrika.com

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, संस्थापक, स्वामी पंकज शर्मा की ओर से मुद्रक आशीष बापना द्वारा मैसर्स पायोनाइट प्रिन्ट मीडिया प्रा. लि. एम.आई.ए., उदयपुर से मुद्रित तथा 'रक्षाबन्धन' धानमण्डी उदयपुर से प्रकाशित।

उदयपुर के पर्यटन का आकर्षण

मंशापूर्ण करणी माता रोप–वे

सॉई राम एसोसिएट्स टिकिटसेल एवं मार्केटिंग

श्री कैलाश खण्डेलवाल : अद्वितीय प्रतिभा, कर्मठ एवं कुशल व्यक्तित्व के धनी, इस शख्सियत का जन्म 23 जुलाई, 1970 को श्री ओमप्रकाश खण्डेलवाल के यहां हुआ। इनकी माता प्रेम देवी एवं पत्नी श्रीमती पूनम खण्डेलवाल हैं। एक पुत्र व एक पुत्री हैं। कैलाश जी ने बाल्यावस्था से ही नौकरी न करके पिता की तरह व्यापार करने का संकल्प लिया और अग्रसर हो गये। इनके द्वारा स्थापित कम्पनी मंशापूर्ण करणी माता रोप–वे प्रा.लि. उदयपुर में पर्यटन को बढ़ावा देने की दृष्टि से नींव का पत्थर बनी।

मंशापूर्ण करणी माता रोप–वे दूध तलाई

दूध तलाई और पिछोला झील के ऊपर सूर्य को चूमती अरावली की पहाड़ियों पर राजस्थान का पहला B.O.T. केबल कार–**मंशापूर्ण करणी माता रोप–वे** माछला पहाड़ी पर स्थित है। जहां मंशापूर्ण करणी माता मन्दिर और एकलिंग का किला स्थित है। यह रोप–वे आपको पूरी घाटी के मनोरम दृश्य को निहारने का आनन्द प्रदान करते हुए पूर्व का वेनिस व झीलों की नगरी उदयपुर के शीर्ष स्थल पर ले जाता है। जहां अस्ताचल सूर्य के साथ शहर की प्राकृतिक सुन्दरता को निहारा जा सकता है।

Sai Ram Associates, Mo. No.: 9829466365, 9782100104

Ticket Prices Rope-way
1. वयस्क : 107 रूपये प्रति टिकिट
2. बच्चें : 54 रूपये प्रति टिकिट

Note : Ticket Price With GST

Ticket Prices Aquarium
1. भारतीय वयस्क : 147 रूपये प्रति टिकिट
2. बच्चें : 73 रूपये प्रति टिकिट

Google Map location link - https://g.page/r/CZieeoY_GCmzEBA

Facebook Link - https://www.facebook.com/karnimata.ropeway

श्री कैलाश खण्डेलवाल की प्रमुख उपलब्धियां एवं पुरस्कार :

1. राजस्थान की प्रमुख महत्वाकांक्षी एवं प्रथम BOT (Built Operate and Transfer) रोप–वे परियोजना का निर्माण एंव संचालन ।
2. रोप–वे परियोजना रिकार्ड 11.5 माह में पूर्ण की।
3. रोप–वे परियोजना को विगत 11 वर्ष से बिना किसी दुर्घटना व रूकावट के सफलतापूर्वक संचालित कर रहे हैं।
4. करणीमाता रोप–वे परियोजना में अब तक लगभग 40 लाख से अधिक लोगों को सफलतापूर्वक यात्रा करवा दी गई है।
5. Under The Sun Aquarium का निर्धारित समय 12 माह से पूर्व रिकार्ड 7 माह में कार्य पूर्ण किया।
6. विगत 2 वर्ष से Aquarium का सफल संचालन कर रहे हैं।
7. वर्ष 2012 में प्रमुख मीडिया समूह 'केशव नवनीत' द्वारा आयोजित कार्यक्रम में महामहिम राज्यपाल महोदय द्वारा सम्मानित।
8. Best innovative project के अन्तर्गत 'समय उद्यमी अवार्ड 2015' श्री कलराज मिश्र, माननीय मंत्री सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम विभाग राजस्थान सरकार द्वारा सम्मानित।
9. वर्ष 2018 में Best innovative project हेतु Zee business Dare to dream award से सम्मानित।
10. सर्वश्रेष्ठ नवीन परियोजना के तहत 'केडीएफ कनेक्ट अवार्ड 2019' श्रीमान के.के. पाठक आयुक्त उद्योग विभाग राजस्थान सरकार द्वारा सम्मानित।
11. Federation of Rajasthan Trade and industry (FORTI) के सचिव के पद पर निर्वाचित। (FORTI) सम्पूर्ण राजस्थान के व्यापार और उद्योग की अग्रणी संस्था है जिसमें लगातार दूसरे वर्ष हेतु उद्योग एवं व्यापार से लगभग 10,000 सदस्य है।
12. CII Rajasthan द्वारा गठित startup task force 2019-20 के सदस्य है।

चुनावी चंदे पर मौज मांडते सियासी पंडे

पिछले दिनों आयकर विभाग ने कुछ पंजीकृत गैर-मान्यता प्राप्त राजनैतिक दलों (आरयूपीपी) और उनके कथित संदिग्ध वित्तीय लेन-देन को लेकर कई राज्यों में छापेमारी की तो दूसरी तरफ निर्वाचन आयोग ने बड़ी संख्या में राजनीतिक दलों को निष्क्रिय किया और कईयों को अपनी सूची से हटा भी दिया। ऐसा माना जाता है कि निर्वाचन आयोग की सिफारिश पर ही आयकर विभाग ने इतना बड़ा और अप्रत्याशित कदम उठाया। जिसकी प्रशंसा होना लाजिमी है। आयकर विभाग ने आरयूपीपी, उनसे सम्बद्ध संस्थाओं, संचालकों और अन्य के खिलाफ उनके आय-व्यय को लेकर जो समन्वित कार्रवाई की वह चौंकाने वाली है। उल्लेखनीय है कि निर्वाचन आयोग ने आयकर विभाग की इस कार्यवाही से पूर्व नियमों और चुनाव सम्बंधी कानूनों का उल्लंघन करने वाले 2,100 से अधिक पंजीकृत गैर-मान्यता राजनैतिक दलों के खिलाफ जल्दी ही कठोर कदम उठाने के संकेत दिए थे। आयोग को राज्यों के मुख्य चुनाव अधिकारियों (सीईओ) से रिपोर्ट भी मिली थी कि सत्यापन के दौरान उक्त पंजीकृत गैर-मान्यता प्राप्त राजनैतिक दल अस्तित्वहीन पाए गए।

देश में राजनीति के नाम पर तो अंधेरगर्दी और धौसंपट्टी चल ही रही है। ऊपर से नीचे स्तर तक। शहर से लेकर गांव, गली-मोहल्ले में नेताओं की भरमार है जो किसी न किसी राजनैतिक दल से जुड़ा बताकर अवैध तरीकों से वसूली में लिप्त हैं, अब आयकर विभाग की कार्रवाई ने उन राजनैतिक दलों का भी भंडाफोड़ किया है, जो लाखों-करोड़ों अरबों रूपयों का चन्दा उगाहकर राजनीति को कारोबार के रूप में इस्तेमाल कर अपना घर भर रहे हैं। सन्तोष की बात है कि राजनीति की आड़ में अब तक जो काला-सफेद हो रहा था, निर्वाचन आयोग और आयकर विभाग ने उससे आवरण हटाने का बड़ा काम किया है। आयकर विभाग ने छापेमारी का यह अभियान दिल्ली, उत्तर प्रदेश, कर्नाटक, गुजरात, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, हरियाणा और छत्तीसगढ़ में चलाया। इन राज्यों में दो सौ अधिक तथाकथित राजनीतिक ठिकानों पर छापे मारे गए, जिनमें राजनीतिक दलों और उनके सफेदपोश नेताओं द्वारा पैसा वसूली के कारनामे उजागर हुए। आयकर विभाग बड़े-बड़े औद्योगिक घरानों के बहुमंजिला प्रतिष्ठानों, भ्रष्ट राजनीतिज्ञों, तस्करों और आर्थिक अपराधियों के यहां तो इस तरह की कार्रवाई करता आया ही है, लेकिन ऐसा पहली बार हुआ है कि झुग्गी-झोपड़ी और गुमटियों में चल रहे राजनैतिक दलों पर छापेमारी कर करोड़ों के वारे-न्यारे का खुलासा किया गया है। उत्तर प्रदेश के सुलतानपुर में तो एक ऐसे पंजीकृत, किन्तु गैर मान्यता प्राप्त राजनैतिक दल की असलियत सामने आई, जो घड़ी बेचने और सुधारने की छोटी सी एक दुकान से संचालित था और इसने पिछले तीन साल में दान-चंदे के रूप में 370 करोड़ रूपए अपनी गांठ में बांधे। मुम्बई की एक झुग्गी में ऐसी पार्टी संचालित थी, जिसे दो साल में 100 करोड़ रूपये चंदे में मिले, मतलब इस तथाकथित पार्टी के सुप्रीमों महज दो-तीन साल में करोड़पति बन गए और समाज की बेहतरी में उनका धेलाभर भी योगदान नहीं। इस तरह की राजनैतिक पार्टियों और उनके प्रमुखों के खिलाफ कठोरतम कार्रवाई अपेक्षित थी, लोकतंत्र के नाम पर राजनीति को कारोबार नहीं बनने दिया जा सकता। यह गंभीर अपराध है। जरूरत इस बात की भी है, जो छोटे या बड़े राजनीतिक दल हैं, उनकी गतिविधियों, उनके संचालकों व सदस्यों पर सतत कड़ी नज़र रखी जाए जो राजनीति की आड़ में न सिर्फ वसूली में लिप्त हैं, अपितु जिन्होंने आर्थिक स्त्रोत के अनेक स्थाई ठिकाने भी कायम कर लिए हैं। कहा जाता है कि इन राजनैतिक दलों को धन शोधन के एवज में धन्नासेठों से पांच-दस प्रतिशत अथवा उससे अधिक का कमिशन मिल जाता है और उनकी ब्लेकमनी बड़ी आसानी से व्हाईट हो जाती है।

कहने का अर्थ यह कि यदि कोई एक राजनैतिक पार्टी का पंजीकरण ही करा ले तो उसकी सात पुश्तें ऐशो-आराम से जिन्दगी बिताने लायक हो जाएंगी। इसमें जरूरी नहीं कि चुनाव लड़ा ही जाए। ब्लेक मनी चन्दे के रूप में मिलती रहेगी, और सामने वाले के पास उस राशि का अधिकांश व्हाईट होकर पहुंचता भी रहेगा। राजनैतिक पार्टियों को जब कोई चंदा देता है तो उतनी राशि पर उसे आयकर में छूट मिल जाती है। चंदाखोरी के इस मामले में राजनैतिक दल तो आगे हैं ही, कागजों में सिमटी स्वयंसेवी संस्थाए भी पीछे नहीं हैं। हर गली-मोहल्ले में सेवा संस्थाओं के बोर्ड टंगे हुए हैं। जिनपर भी कार्रवाई अपेक्षित है। राजनैतिक दलों के पास जो पैसा आता है, उसके स्त्रोत का खुलासा भी नहीं करना पड़ता। वे इसे चतुराई से छिपा लेते हैं, जब-जब चंदे की पारदर्शिता की बात उठती है, तब छोटे-बड़े सभी दलों के नेता एक स्वर से लोकतंत्र और अबाध आर्थिक स्वतंत्रता की जोरशोर से दुहाई देने लगते हैं। इस तरह संस्थागत रूप में फल-फूल रहा भ्रष्टाचार लोकतंत्र के लिए धीमा ज़हर साबित हो रहा है।

चुनाव आयोग ने अपने स्तर पर बड़ी कार्रवाई करते हुए नियमों का पालन नहीं करने वाली देश की करीब 253 छोटी राजनैतिक पाटियों को निष्क्रिय कर दिया है। जिन छोटे दलों को निष्क्रिय किया गया है, उनमें कई राज्यों में चुनाव लड़ती रहीं पार्टियां भी शामिल हैं। इसके साथ ही 86 छोटी पार्टियों के नाम भी चुनाव आयोग ने राजनैतिक दलों की सूची से हटा दिए हैं। ये पार्टियां चुनाव चिह्न हासिल करने के बाद कभी सक्रिय नहीं रहीं। पिछले कई चुनावों में इनकी उपस्थिति नगण्य रही या इनका कोई प्रत्याशी चुनाव मैदान में उतरा ही नहीं।

इन हालातों को देखते हुए चुनाव सुधार की दिशा में अब सार्थक कदम उठाने की जरूरत है। राजनैतिक पार्टियों और उनके नेताओं के माध्यम से यदि भ्रष्टाचार की बेल फलती-फूलती है, तो यह देश की लोकतांत्रिक प्रणाली के लिए घातक है। चुनाव आयोग और आयकर विभाग ने इस सिलसिले में साहसिक काम किया है। लेकिन जब तक सरकार के स्तर पर छोटे-बड़े सभी दलों के खातों की पड़ताल जैसे निर्णय नहीं लिए जाते तब तक राजनैतिक भ्रष्टाचार का यह खेल बंद नहीं होने वाला।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने किया राष्ट्र को समर्पित

आईएनएस विक्रांत नौसेना के बेड़े में शामिल हो गया। विक्रांत का अर्थ विजयी और वीर होता है। अत्याधुनिक सुविधाओं से लैस यह युद्धपोत देश में बने एडवांस्ड लाइट हेलीकॉप्टर के अलावा मिग-29 के लड़ाकू विमान सहित 30 विमान संचालित करने की क्षमता रखता है।

समुद्री सरहदों का निगहबां स्वदेशी विक्रांत

मनीष उपाध्याय

देश की समुद्री सरहदों की रक्षा के लिए पहला स्वदेशी विमानवाहक पोत आईएनएस विक्रांत प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने केरल के कोच्चि में 2 सितम्बर को देश को समर्पित कर दिया। उन्होंने कहा कि यह गर्व का मौका है। विक्रांत सिर्फ युद्धपोत नहीं बल्कि 21वीं सदी के भारत के परिश्रम, प्रतिभा, प्रभाव और प्रतिबद्धता का प्रमाण है। भारत के पास अब दो विमानवाहक पोत हो गए हैं, जिससे नौसेना की ताकत और बढ़ गई है।

अब भारत अमेरिका, ब्रिटेन, रूस, चीन और फ्रांस जैसे देशों में शामिल हो गया, जिनके पास स्वदेशी रूप से डिजाइन करने और विमानवाहक पोत बनाने की क्षमता है। यह भारत सरकार की 'मेक इन इंडिया' पहल का एक वास्तविक प्रमाण है। इस जहाज का नाम नौसेना के पूर्व जहाज 'विक्रांत' के नाम पर रखा गया है, जिसने 1971 के भारत-पाकिस्तान युद्ध में अहम भूमिका निभाई थी।

करीब 16 सौ सदस्यो वाले चालक दल के लिए तैयार किया गया यह युद्धपोत एक प्रकार से समुद्र में चलती-फिरती वायु और जलसेना छावनी की तरह काम करेगा। इस पर एक समय में करीब 30 हल्के लड़ाकू विमान और हेलीकॉप्टर तैनात किए जा सकेंगे। देश के इस सबसे बड़े विमान वाहक पोत में 22 सौ कक्ष हैं और इसे 20 हजार करोड़ की लागत से तैयार किया गया है। इसकी लम्बाई 262.5 मीटर, ऊंचाई 18 मंजिल के बराबर और चौड़ाई 62.5 मीटर है। हालांकि अमेरिका, चीन और रूस के पास इससे कुछ अधिक क्षमता वाले पोत हैं, पर विक्रांत भी अपनी क्षमता को लेकर कम नहीं है। भारत के पास एक और विमान वाहक पोत विक्रमादित्य पहले से मौजूद है, लेकिन अब भारत के पास ऐसे दो विमान वाहक पोत हो गए हैं और इससे भारत की सामरिक ताकत बढ़ गई है। चीन के पास भी इतने ही पोत हैं।

अनोखी क्षमता के साथ शामिल हो गया है। यह पोत स्वयं ही इतनी ऊर्जा पैदा करने में सक्षम है, जिससे 5,000 से ज्यादा घरों को रोशन किया जा सकता है। इसमें जितने केबल और तार इस्तेमाल हुए हैं, वे कोच्चि से शुरू हों, तो काशी तक पहुंच सकते हैं।

भारत एक समय नौसेना के मामलें में बहुत सक्षम था। मध्यकालीन इतिहास को अगर देखें, तो 1650 के आसपास छत्रपति शिवाजी ने अपनी नौसेना का निर्माण किया था। वह नौसेना की जरूरत को समझ गए थे, लेकिन जब देश पर अंग्रेजों का वर्चस्व बढ़ा, तो उन्होंने भारतीय नौसेना विज्ञान और उद्योग को एक तरह से प्रतिबंधित कर दिया। भारत नौसेना ही नहीं,

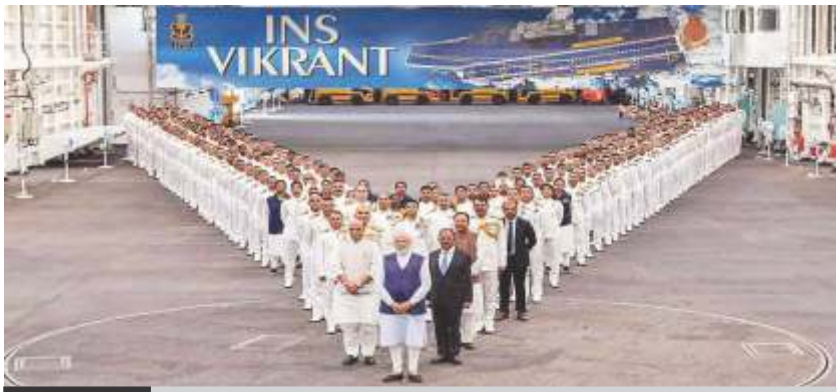

सबकुछ स्वदेशी

- 76 प्रतिशत स्वदेशी संसाधनों से बना, कुछ कलपुर्जे बाहर से मंगाए
- युद्धपोत का स्टील डीआरडीएल-एसएआईएल ने तैयार किया
- नौसेना के संगठन युद्धपोत डिजाइन ब्यूरो ने इसका डिजाइन किया

देश की समुद्री सरहदों की रक्षा के लिए पहला स्वदेशी विमानवाहक पोत आईएनएस विक्रांत प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने केरल के कोच्चि में 2 सितम्बर को देश को समर्पित कर दिया। उन्होंने कहा कि यह गर्व का मौका है। विक्रांत सिर्फ युद्धपोत नहीं बल्कि 21वीं सदी के भारत के परिश्रम, प्रतिभा, प्रभाव और प्रतिबद्धता का प्रमाण है। भारत के पास अब दो विमानवाहक पोत हो गए हैं, जिससे नौसेना की ताकत और बढ़ गई है।

अब भारत अमेरिका, ब्रिटेन, रूस, चीन और फ्रांस जैसे देशों में शामिल हो गया, जिनके पास स्वदेशी रूप से डिजाइन करने और विमानवाहक पोत बनाने की क्षमता है। यह भारत सरकार की 'मेक इन इंडिया' पहल का एक वास्तविक प्रमाण है। इस जहाज का नाम नौसेना के पूर्व जहाज 'विक्रांत' के नाम पर रखा गया है, जिसने 1971 के भारत-पाकिस्तान युद्ध में अहम भूमिका निभाई थी।

विक्रांत की ताकत

- खास प्रणाली से लैस जो लेजर गाइडेड मिसाइल को लक्ष्य से भटका देता है
- नौसेना के कुछ विध्वंसक और कलवरी पनडुब्बी भी विक्रांत के बेड़े में चलेंगी
- 32 मध्यम दूरी की सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइल होंगी।
- 23 हजार टन वजन, 02 फुटबॉल मैदानों के आकार के बराबर एक फ्लाइट डेक
- 51 किलोमीटर प्रतिघंटा रफ्तार, इसकी सामान्य गति 33 किमी/ प्रति घंटा
- 7500 समुद्री मील तक की दूरी तय करने में सक्षम, 18 मंजिल ऊंचा
- 262.5 मीटर लंबा और 62.5 मीटर चौड़ा है आईएनएस विक्रांत

विक्रांत विशिष्ट है, विक्रांत विशेष भी है। ये स्वदेशी सामर्थ्य, संसाधन और कौशल का प्रतीक है। यदि लक्ष्य दुरंत है, यात्राएं दिगंत हैं, समंदर और चुनौतियां अनंत हैं तो भारत का उत्तर है विक्रांत। भारत ने गुलामी के एक निशान, एक बोझ को सीने से उतार दिया है। इसमें तिरंगा और अशोक चिह्न है। अंग्रेजों की निशानी क्रॉस का लाल निशान हटा दिया गया है।

– नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

दुनिया में छह ऐसे देश हैं जो एयरक्राफ्ट बनाते हैं, भारत 7 वां देश बना है। कैरियर एयरक्राफ्ट बनाने में हमें कामयाबी हासिल हुई है। भारत रक्षा के क्षेत्र में ही नहीं बल्कि हर क्षेत्र में आत्म निर्भर बन रहा है।

– राजनाथ सिंह, रक्षामंत्री

भारतीय नौसेना, नौसेना डिजाइन ब्यूरो और कोचीन शिपयार्ड को कई वर्षों की कड़ी मेहनत के लिए बधाई, जिससे आईएनएस विक्रांत का सपना साकार हुआ। यह समुद्री सुरक्षा की दिशा में अहम् कदम है।

– राहुल गांधी, पूर्व अध्यक्ष, राष्ट्रीय कांग्रेस

दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं

卐 ॐ जय भोलेनाथ 卐

खाली बोतलें, काँच शीशी,
पेपर रद्दी, ओल्ड स्क्रेप
एवं अन्य डिस्पोजल
वस्तुओं के क्रेता एवं विक्रेता

विजय पंजवानी (विजु भाई)
मो. 7737746140, 9950271626
राकेश पंजवानी
मो. 9352524901, 7568267951

श्रीराम ओल्ड स्क्रेप

यूआईटी, शॉप नं. 8-9, आई.ओ.सी. डिपो के सामने,
हिरणमगरी सेक्टर 11, उदयपुर

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को सहिष्णुता और मानवता के प्रति आदर, भारत की स्वतंत्रता, सामाजिक तथा आर्थिक न्याय के मुद्दों को आगे लाने के लिए याद किया जाता रहेगा। उनके सिद्धांत और आदर्श सर्वकालीन हैं। सत्य और अहिंसा उनके ऐसे हथियार थे, जिनमें राज्य के दमन के सारे तर्क विफल हो जाते हैं। पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री भी गांधी जी की तरह ही सरल हृदय किन्तु राष्ट्र की अस्मिता के लिए दृढ़तापूर्वक निर्णय लेने वाले थे। वे हमेशा लोगों से चरित्र और अनुशासन को जीवन में ढालने और राष्ट्रीय एकता व देश की उन्नति के लिए कार्य करने की प्रेरणा देते रहे। वे आम आदमी के पैरोकार थे। दोनों ही महापुरूषों को 2 अक्टूबर को उनकी जयंती पर सादर नमन। प्रस्तुत है– विशेष आलेख।

स्वतंत्रता आंदोलन और महात्मा गांधी

डॉ. महेश त्रिपाठी

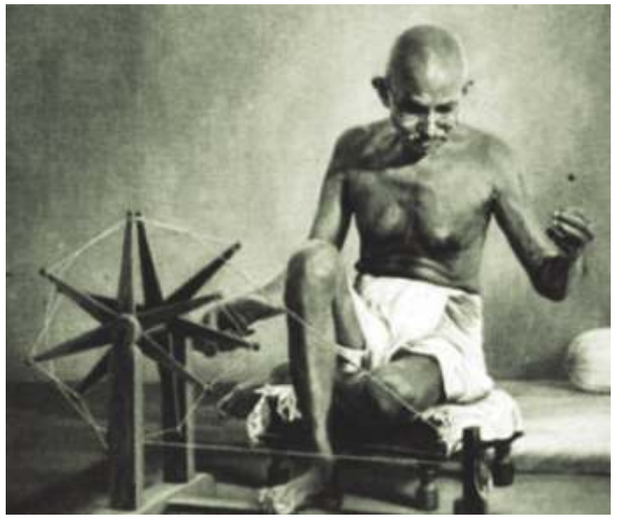

महात्मा गांधी *का पूरा नाम मोहनदास कर्मचन्द गांधी था। इनका जन्म पोरबन्दर (गुजरात) में हुआ था। पिता कर्मचन्द गांधी पोरबन्दर रियासत के दीवान थे। साढे 13 वर्ष की उम्र में इनका विवाह 1883 में कस्तूरबा से हुआ। गांधी जी ने पोरबन्दर से मिडिल तथा राजकोट से हाई स्कूल परीक्षा पास की। इंग्लैण्ड से बेरिस्टरी पास कर भारत आकर बम्बई में वकालत शुरू की। बाद में राजकोट आकर जरूरतमंद लोगों के लिए अर्जिया लिखने का कार्य प्रारम्भ किया। राजकोट से एक मामले में वकालत के लिए दक्षिण अफ्रीका चले गये। वहां इन्हे रंगभेद का सामना करना पड़ा। गांधी जी ने 1893 से 1914 तक दक्षिण अफ्रीका में नागरिक अधिकारों के लिये आन्दोलन किया। अंग्रेजों की भेद नीति के कारण उनके पास प्रथम श्रेणी का टिकट होने पर भी उन्हें तृतीय श्रेणी में रेल यात्रा करनी पड़ी। एक बार अदालत में न्यायाधीश ने उन्हें पगड़ी उतारने का आदेश दिया। अफ्रीका के होटलों में भारतीयों का प्रवेश वर्जित था। इन सब से विचलित होकर गांधी जी ने ब्रिटिश अत्याचारों के खिलाफ आवाज उठायी। 1906 में जुलु युद्ध में गांधीजी की महत्वपूर्ण भूमिका रही। 1915 में गांधीजी दक्षिण अफ्रीका से भारत लौट आये। यहां उन्होंने कांग्रेस के राष्ट्रीय अधिवेशनों में अपने विचार रखे तथा देश की स्वतंत्रता की रूपरेखा तैयार कर आंदोलनों का नेतृत्व किया।*

चंपारण और खेड़ा आन्दोलन

गांधीजी ने 1918 में भारत में किसानों के पर अत्याचार के विरोध में चम्पारण में आन्दोलन छेड़ दिया। यहॉ ब्रिटिश सरकार समर्थक जमीदारों द्वारा किसानों को मजदूरी का उचित पारिश्रमिक न देकर केवल मामूली भत्ता राशि ही दी जा रही थी जबकि मजदूर-किसान खाद्य पदार्थो की मांग कर रहे थे। भीषण अकाल में ब्रिटिश सरकार ने जनता पर और अधिक टैक्स बढ़ा दिए। इस जुल्म के खिलाफ गांधीजी ने गुजरात खेड़ा एवं चंपारण में आवाज उठायी। जिसमें सफलता मिली। इस अवधि में गांधीजी ने गांवों में जनता के सहयोग से अस्पताल एवं स्कूल खोले तथा सफाई अभियान चलाया तथा सामाजिक बुराईयों को समाप्त करने के लिए जनता को प्रेरणा दी। इसे देखते हुए पुलिस ने उनको अशान्ति फैलाने के आरोप में गिरफ्तार कर लिया तथा उन्हें प्रांत छोड़ने के आदेश दिये। हजारों की तादाद में लोगों ने विरोध किया। जेल, अदालतों एवं पुलिस स्टेशनों के बाहर जनता ने प्रदर्शन किये तथा रैलियां निकाल कर गांधी जी को बिना शर्त रिहा करने की मांग की। जमीदारों के खिलाफ विरोध प्रदर्शन, राजस्व कर बढ़ोतरी रद्द करने व अधिक क्षति पूर्ति राशि दिलाने के कारण गांधी जी को जनता ने बापू की उपाधि दी। राजस्व संग्रहण से मुक्ति तथा कैदियों की रिहायी से गांधी जी को सम्पूर्ण भारत में ख्याति मिली।

असहयोग आन्दोलन

विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार कर स्वदेशी वस्त्रों का उपयोग करने का एक अभियान चलाया जिसमें विदेश से आने वाले वस्त्रों की होली जलायी गई तथा स्वदेशी वस्त्र (खादी) का निर्माण किया गया। लोगों ने घरों में चरखे से सूत कातकर उसके कपड़े बनाकर पहने। अमृतसर में जलियावाला बाग में हजारों निहत्थे लोगों पर अंग्रेजों ने गोलियां चलाई जिस कारण जनता में जबरदस्त आक्रोश फैल गया। पूरे देश में इस काण्ड की भर्त्सना की गई। विशेषकर अंग्रेजों द्वारा निर्मित वस्तुओं का बहिष्कार किया गया। गांधीजी ने ब्रिटिश स्थापित शिक्षण संस्थानों के बहिष्कार का आह्वान किया। इस पर 1922 में गांधीजी पर मुकदमा चलाया गया तथा 6 वर्ष की सजा दी गई। 1924 में बीमार होने के कारण ऑपरेशन के लिये इन्हें छोड़ दिया गया।

स्वराज और नमक आन्दोलन

1928 में कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में गांधीजी ने एक प्रस्ताव द्वारा ब्रिटिश सरकार को जिसमें भारतीय समाज को सत्ता प्रदान करने अन्यथा असहयोग आंदोलन का सामना करने के लिये तैयार रहने की चेतावनी दी गई। इन विचारों ने देश के क्रांतिकारियों में एक उत्साह एवं नया जोश भर दिया। 31 दिसम्बर 1929 में नेहरूजी एवं सरदार पटेल ने लाहौर अधिवेशन में झण्डा लहराया। 26 जनवरी 1930 को लाहौर में इंडियन नेशनल कांग्रेस ने भारतीय स्वतंत्रता दिवस के रूप मनाया। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के लिये संघर्ष 1916 से 1945 तक किया।

नमक आन्दोलन

नमक पर कर के विरोध में गांधीजी ने 12 मार्च से 6 अप्रेल तक 400 किलोमीटर तक की दाण्डी यात्रा निकाली। इसमें लाखों लोगों ने भाग लिया। करीब 80000 लोगों की गिरफ्तारी हुई। इसके बाद गांधी-इर्विन समझौते व गोलमेज सम्मेलन के माध्यम से भी भारत की आजादी के आन्दोलन को बल मिला।

गांधी-शास्त्री जयंती पर विशेष

02 अक्टूबर

रचनात्मक कार्य

साम्प्रदायिक एकता
मद्य निषेध
ग्राम स्वच्छता
प्रौढ शिक्षा
विद्यार्थी मार्गदर्शन
आदिवासी उत्थान
कृषि विकास
राष्ट्र भाषा प्रचार
अस्पृश्यता निवारण
खादी निर्माण व प्रचार
कुटीर उद्योग
महिला सशक्तिकरण
कुष्ठ रोगी सेवा
श्रमिक कल्याण
आर्थिक समानता

सिद्धांत

सत्य–अहिंसा
ब्रम्हचर्य
विश्वास
शाकाहार
सादगी

लेखन एवं प्रकाशन

पत्रिकाएं
हिन्द स्वराज्य
दक्षिण अफ्रीका के सत्याग्रह का इतिहास
सत्य का प्रयोग आत्म कथा
गीता महात्म्य
सम्पूर्ण गांधी वांडमय

चंपारण और खेड़ा आन्दोलन

गांधीजी ने 1918 में भारत में किसानों के पर अत्याचार के विरोध में चम्पारण में आन्दोलन छेड़ दिया। यहॉ ब्रिटिश सरकार समर्थक जमीदारों द्वारा किसानों को मजदूरी का उचित पारिश्रमिक न देकर केवल मामूली भत्ता राशि ही दी जा रही थी जबकि मजदूर-किसान खाद्य पदार्थो की मांग कर रहे थे। भीषण अकाल में ब्रिटिश सरकार ने जनता पर और अधिक टैक्स बढ़ा दिए। इस जुल्म के खिलाफ गांधीजी ने गुजरात खेड़ा एवं चंपारण में आवाज उठायी। जिसमें सफलता मिली। इस अवधि में गांधीजी ने गांवों में जनता के सहयोग से अस्पताल एवं स्कूल खोले तथा सफाई अभियान चलाया तथा सामाजिक बुराईयों को समाप्त करने के लिए जनता को प्रेरणा दी। इसे देखते हुए पुलिस ने उनको अशान्ति फैलाने के आरोप में गिरफ्तार कर लिया तथा उन्हें प्रांत छोड़ने के आदेश दिये। हजारों की तादाद में लोगों ने विरोध किया। जेल, अदालतों एवं पुलिस स्टेशनों के बाहर जनता ने प्रदर्शन किये तथा रैलियां निकाल कर गांधी जी को बिना शर्त रिहा करने की मांग की। जमीदारों के खिलाफ विरोध प्रदर्शन, राजस्व कर बढ़ोतरी रद्द करने व अधिक क्षति पूर्ति राशि दिलाने के कारण गांधी जी को जनता ने बापू की उपाधि दी। राजस्व संग्रहण से मुक्ति तथा कैदियों की रिहायी से गांधी जी को सम्पूर्ण भारत में ख्याति मिली।

पाक को नाकों चने चबवाए

अशोक तम्बोली

भारत की आजादी के आन्दोलन में जिस तरह भगतसिंह, चन्द्रशेखर आज़ाद, महात्मा गांधी, पण्डित जवाहरलाल नेहरू, सुभाष चन्द्र बोस, लाला लाजपत राय, बाल गंगाधर तिलक, गणेश शंकर विद्यार्थी, आदि क्रांतिकारियों ने अपनी अहम् भूमिका का निर्वाह किया, उसी तरह 2 अक्टूबर 1903 में एक गरीब परिवार में शारदा प्रसाद के घर रामदुलारी देवी के कोख से जन्मे एक ऐसे व्यक्ति की राष्ट्र निर्माण में भूमिका को भी नहीं भुलाया जा सकता, जिन्होंने देश के खातिर अपनी जन्म भूमि से बहुत दूर प्राणों का उत्सर्ग कर दिया। यह महापुरूष थे- लाल बहादुर शास्त्री। बचपन में ही पिता का साया सिर से उठ जाने के बाद मां ने कदम-कदम पर आर्थिक संघर्षों से जूझते हुए अपने 'लाल' का लालन-पालन किया। आत्म विश्वास के धनी लाल बहादुर जी की आत्मा अंग्रेजों के जुल्म व शोषण से कराह उठी। उनके अत्याचारों के मुकाबले के लिए महात्मा गांधी के अहिंसक आन्दोलन का बिगुल बजने पर वे उसमें सक्रिय हो गए। काशी से शास्त्री की परीक्षा उत्तीर्ण कर प्रयाग लौटे और वहां अपने क्रांतिकारी विचारों के चलते नेहरू परिवार के सम्पर्क में आकर पूरी तरह राजनैतिक-सामाजिक कार्यों में जुट गए। भारत की आजादी के बाद 1951-52 में उत्तर प्रदेश विधान सभा के सदस्य बने। उन्हीं दिनों केन्द्र में पं.जवाहरलाल नेहरू के प्रधान मंत्रित्व में मंत्रिमण्डल का गठन हुआ। शास्त्रीजी को रेल मंत्री की जिम्मेदारी संभालने के लिए दिल्ली बुलवा लिया गया। इसके बाद से वे लगातार केन्द्र में महत्वपूर्ण विभागों के मंत्री रहे। ईमानदारी,सादगी, लगन और कर्तव्य निष्ठा के कारण वे जन-जन के लाडले हो गए। मई 1964 में प्रधानमंत्री पं.नेहरू के निधन के बाद उन्हें प्रधानमंत्री पद के योग्य माना गया। वर्ष 1965 में पाकिस्तान ने भारत पर आक्रमण किया था और शास्त्रीजी ने देश को 'जय जवान-जय किसान' का नारा देते हुए पाकिस्तान को नाकों चने चबवाए। तभी पाक्स्तिान ने समझोते की पेशकश की और सोवियत संघ ने उसकी मध्यस्थता स्वीकार की। इसी समझौते के लिए वे फरवरी 1966 के प्रारंभ में ताशकंद गए। जहां 11 फरवरी को उनका निधन हो गया। उन्हे उसी वर्ष 'भारत-रत्न' से सम्मानित किया गया।

ब्रिटेन को पछाड़ हासिल की उपलब्धि

भारत पांचवीं बड़ी अर्थव्यवस्था

भारत ब्रिटेन को पछाड़कर दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है। अब सिर्फ अमेरिका, चीन, जापान और जर्मनी ही हमसे आगे हैं। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आइएमएफ) ने यह अनुमान जताया है। एक दशक पहले तक भारत बड़ी अर्थव्यवस्थाओं के मामले में 11वें पायदान पर था, जबकि ब्रिटेन पांचवें स्थान पर था, लेकिन अप्रैल-जून तिमाही में भारतीय अर्थव्यवस्था में विस्तार होने से यह ब्रिटेन से आगे निकल गया है और ब्रिटेन छठे पायदान पर खिसक गया है।

अमित शर्मा

भारत के ब्रिटेन से आगे निकलने का अनुमान ब्लूमबर्ग को गणनाओं पर आधारित है, जिसे उसने आइएमएफ के डेटाबेस और ऐतिहासिक विनिमय दरों के आधार पर तैयार किया है। ब्लूमबर्ग की एक रिपोर्ट में इस निष्कर्ष के साथ कहा गया, 'समायोजित आधार पर और प्रासंगिक तिमाही के अंतिम दिन डालर विनिमय दर को ध्यान में रखते हुए मार्च में खत्म तिमाही में भारतीय अर्थव्यवस्था का आकार 'सांकेतिक'नकदी के साथ 854.7 अरब डालर था। इसी पैमाने पर ब्रिटेन की अर्थव्यवस्था का आकार 816 अरब डालर था।' दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्था भारत द्वारा अगले कुछ वर्षों में ब्रिटेन को और भी पीछे छोड़ देने की संभावना है।

इंटरनेशनल मॉनिटरी फंड (आईएमएफ) के एक अनुमान की मानें तो 2022-23 में भारतीय अर्थव्यवस्था की वृद्धि दर 7.4 फीसदी रहने का अनुमान है। इस तरह भारत इस साल भी सबसे तेज वृद्धि करने वाली प्रमुख अर्थव्यवस्था बना रहेगा। दूसरी ओर आरबीआई ने कहा था कि जून तिमाही में भारत की जीडीपी 16.2 फीसदी की रफ्तार से बढ़ सकती है। हाल ही में वर्ल्ड इकोनॉमिक आउटलुक द्वारा एक रिपोर्ट जारी की गई थी। जिसके मुताबिक, भारत की जीडीपी वित्त वर्ष 2022 में 7.4 और 2023 में 6.1 रहने की उम्मीद है, जो अन्य बड़ी अर्थव्यवस्थाओं जैसे अमेरिका, यूरो एरिया, जर्मनी, फ्रांस, इटली, स्पेन, जापान व यूनाइटेड किंगडम की तुलना में कहीं बेहतर है। लेटेस्ट वर्ल्ड इकोनॉमिक आउटलुक ग्रोथ प्रोजेक्शन में भारत 2021 में भारत एक बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में उभरकर सामने आया है। 2021 में बड़ी अर्थव्यवस्थाओं की तुलना में भारत की जीडीपी सबसे ऊपर 8.7 रही, जिससे पता चलता है कि भारत की स्थिति अन्य विकसित देशों की तुलना में बेहतर है।

इस तिमाही में कुछ और उत्साहजनक चीजें दर्ज हुई हैं, जिनमें निजी व्यय का बढ़ना और सरकारी खर्च में कटौती शामिल है। चालू वित्त वर्ष में निजी व्यय में करीब छब्बीस फीसद की बढ़ोतरी दर्ज हुई है, जो कि बाजार में रौनक लौटने का संकेत देती है। इसी तरह सरकारी खर्च महज 1.3 फीसद बढ़ा है, यानी सरकार ने अपने हाथ रोक कर इसमें संतुलन लाने का प्रयास किया। इससे महंगाई पर काबू पाने की दिशा में सरकार की दृढ़ इच्छाशक्ति जाहिर होती है। मगर महंगाई को संकेतित करने वाले आंकड़े फिर निराश करते हैं। स्थिर कीमत पर आधारित सकल मूल्य वृद्धि यानी जीवीए पहली तिमाही में 12.7 फीसद बढ़ा है, जबकि सामान्य जीडीपी में 26.7 फीसद दर्ज की गई, जो कि मुद्रास्फीति की ऊंची दर को संकेतित करती है। कुछ विशेषज्ञों का मानना है कि आधार प्रभाव के धीरे-धीरे समाप्त होने के बाद विकास दर में नरमी आएगी, जो कि जोखिमभरी हो सकती है। फिर भी विशेषज्ञों का अनुमान है कि अगली तिमाहियों में यह दर कम होगी और वृद्धि का यही रुख बरकरार रहा तो इस साल के अंत में विकास दर सात फीसद तक रह सकती है।

अनेक देशों में मंदी को लेकर चिंता है, यहां तक कि चीन में भी अप्रैल-जून 2022

में 0.4 प्रतिशत की आर्थिक वृद्धि दर्ज की गई है। ऐसे में, भारतीय विकास की गति बहुतों को आश्चर्य में डाल सकती है, लेकिन यह सच है कि कोरोना से लंबे समय तक आहत रहा देश इस वित्त वर्ष में बुनियादी तेजी पकड़ने की ओर अग्रसर है। निश्चित रूप से हमारी विकास गति ज्यादा होती, अगर वैश्विक मंदी की आशंकाएं हमें घेर न रही होतीं और अगर पिछले दिनों कर्ज लेना कुछ महंगा न हुआ होता। फिर भी 13.5 प्रतिशत की विकास दर पर संशय जताने वालों को भी यह ध्यान रखना चाहिए कि भारत तुलनात्मक रूप से ज्यादा युवा और विकास की ज्यादा संभावनाओं वाला देश है। हां, यह जरूर कहा जा सकता है कि हमारा विकास हमारी क्षमता व जरूरत के अनुरूप अभी भी नहीं हो रहा। अभी जो विकास हो रहा है, उसमें निजी क्षेत्र की भूमिका सबसे ज्यादा है।

गत अप्रैल जून में निजी निवेश एक साल पहले की तुलना में 20.1 प्रतिशत बढ़ा है, जबकि सरकारी खर्च में 1.3 फीसदी की बढ़ोतरी हुई है। भारतीय अर्थव्यवस्था में सुधार के लिए ज्यादा पारदर्शिता, सरलता, निवेश की जरूरत है। फिर भी हम कह सकते हैं कि देश ने आपदा या मुश्किलों में भी अवसर तलाशने शुरू कर दिए हैं।

अनुमानः 2030 तक तीसरे स्थान पर होंगे

■ **कोरोना** महामारी की वजह से 2020 में भारतीय अर्थव्यवस्था एक पायदान नीचे खिसक कर छठे स्थान पर आ गई थी, लेकिन महंगाई और आर्थिक झटके की वजह से ब्रिटेन एक बार फिर भारत से पिछड़ गया।

■ **ब्रिटेन** के प्रमुख आर्थिक अनुसंधान संस्थान सेंटर फार इकोनॉमिक एंड बिजनस रिसर्च (सीईबीआर) की वार्षिक रपट में अनुमान जताया गया है कि भारतीय अर्थव्यवस्था 2030 तक तीसरे स्थान पर पहुंच जाएगी।

■ **रिपोर्ट** में अनुमान जताया गया था कि भारत की आर्थिक वृद्धि 2022 में 7 प्रतिशत रहेगी। आकार में भारत 2025 में ब्रिटेन से, 2027 में जर्मनी से और 2030 में जापान से आगे निकल जाएगा

■ **संस्थान** का अनुमान है कि चीन 2028 में अमेरिका से ऊपर निकल कर विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था हो जाएगा।

चालू वित्त वर्ष में सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में वृद्धि के दहाई अंकों में बने रहने की उम्मीद है। अन्य देशों की तुलना में भारत मजबूत स्थिति में है और जरूरतमंद वर्गों को मदद देने के लिहाज से जिम्मेदार भी है।

*– **निर्मला सीतारमण**, वित्तमंत्री*

Virender Kabra
Director
+ 91 93525 00759

Happy Diwali

SATISFACTION 100% GUARANTEE

Rakesh Kabra
Director
+ 91 94621 68691

JAI SHREE TRADERS

Authorised Distributor

HIKOKI Power Tools • Garg Machine • Keapoxy • Lethal Rtu/TC • Araldite Adhesive • FOSROC (Cons. Solu.) • Bond Tite Adhesive • AKEMI (Stone Chemical) • Lapox (Epoxi Ch.) • MRF Special Coatings • Abro Masking Tape • Dow Silicon • MRF Vapocure Paints • Reliance RecronTM 3S • Grindwell Norton Ltd

34, Ashwini Bazar, Udaipur - 313 001 (Raj.) Ph.: 0294-2415387 (O), 2484898 (R)
E-mail: jaishreetrader@gmail.com Website: www.jaishreetrader.nowfloats.com

साहित्यकार हैं तो पूछिए स्वयं से - लेखन कितना प्रासंगिक ?

वेदव्यास

आतंकवाद, राष्ट्रवाद और उपभोक्तावाद के शोर में आजकल 'साहित्य का उदेश्य और सामाजिक सरोकार' एक गहरे संकट में है। संवेदना और समय का सच हाशिये पर खड़ा है। अकेला लेखक सत्ता-प्रतिष्ठान, मीडिया के तिलस्मान और बाजार के चक्रव्यूह में फंसा है। विचारधारा और विवेक राजनीति का पिछल्लगू बन गया है तथा तब से अब तक हमारे और साहित्य के बीच निश्चित ही बहुत कुछ बदल गया है। भारत अंग्रेजों की दासता से मुक्त होकर प्रभुसत्ता सम्पन्न गणतंत्र बन चुका है, पाकिस्तान और बांग्लादेश का निर्माण हो चुका है, जापान पर शांति के विरुद्ध परमाणु युद्ध का परीक्षण हो चुका है, लम्बे शीत युद्ध के बाद सोवियत संघ का विभाजन हो चुका है तथा भारत में सम्पूर्ण राष्ट्रवाद का परचम दिल्ली की संसद पर लहरा चुका है। इस अर्थ में यह समय बेहद जटिल है और निर्मम है क्योंकि साहित्य ने अपने लिए मानसिक अवस्थाओं और भावों का क्षेत्र चुन लिया हैं। हम जीवन में जो कुछ देखते हैं या जो कुछ हम पर गुजरती है, वही अनुभव और वही चोटें कल्पना में पहुंचकर साहित्य सृजन की प्रेरणा करती है। कवि या साहित्यकार में अनुभूति की जितनी तीव्रता होती है उसकी रचना उतनी की आकर्षक और ऊंचे दर्जे की होती है।

लेकिन साहित्य में लेखक की स्थिति आज इससे ठीक उलट है तथा साहित्यकार वह न तो मीरां बाई की तरह राजपाट छोड़ रहा है और न ही तस्लीमा नसरीन की तरह घर बार से निष्कासित होकर अंधेरे बंद कमरों की खिड़कियां खोल रहा है। एक व्यक्तिवाद और आत्ममुग्धता से वह इस तरह पीड़ित है कि उसने अपने भीतर सुख-सुविधाओं के सपनों का जाल बुन लिया है। उसकी स्वतंत्र चेतना का क्षरण हो चुका है तथा नव-साम्राज्यवाद को समझना तो दूर की बात है न्याय और स्वाभिमान के लिए एक प्रकाशक से भी नहीं लड़ पा रहा है। अपने हक के पारिश्रमिक की जगह वह अपने पैसे देकर अपनी पुस्तकें छपवा रहा है। यह एक सच है कि मुंशी प्रेमचंद ने साहित्य का जो उदेश्य और प्रतिमान स्थापित किया था वह कुछ अपवादों को छोड़कर लेखक की संरचना से नदारद है। जिस तरह पुराने जमाने में समाज की लगाम मजहब के हाथ में थी। मनुष्य की आध्यात्मिकता और नैतिक सभ्यता का आधार धार्मिक आदेश था। वह भय या प्रलोभन से काम लेता था-पुण्य पाप के मसले उसके साधन थे।

आज इसी तरह की समझ के साथ लेखक प्राय: सभी सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक परिद्रश्य से गायब होता जा रहा है। उसने शुतुरमुर्ग की तरह कुछ ऐसा समझ लिया है कि मैदान छोड़कर भागने से ही दुनिया बदल जाएगी और किसी दूसरे के मरने से ही उसे स्वर्ग मिल जाएगा। हम अक्सर राजनीति और सत्ता-व्यवस्था में सारी कमियां ढूंढते हुए भी जो निजी संभावनाएं तलाशते रहते हैं उसी का आज यह परिणाम है कि एक ही विचारधारा की टोपियां पहनकर लेखक समुदाय अनेकानेक संगठनों, गुटों और श्रेणियों में विभाजित हो गया है तथा पूरे देश में विशेषकर हिंदी प्रदेशों में सांस्कृतिक मोर्चा, अभियान और आंदोलन जैसी सभी अवधारणाएं नष्ट-भ्रष्ट हो गई हैं।

लेखक बिरादरी में विचारधारा और सामाजिक सरोकारों की जगह सब कुछ जोड़तोड़ और गाली गलौच में बदल गया है तथा लेखक संगठन भी प्रति क्रांति के उपनिवेश बन गए हैं। वस्तुत: प्रेमचंद ने साहित्य का उद्देश्य बताते हुए जिस महान् अर्न्तदृष्टि का एक लेखक के लिए भाषा, शिल्प और सामाजिक सौन्दर्यशास्त्र का तानाबाना प्रस्तुत किया था और सज्जाद जहीर ने जिसे परवान चढ़ाया था वह पूरा सपना आज एक विभाजित मानसिकता के दौर से गुजर रहा है। शहीद भगतसिंह की तरह-मैं नास्तिक क्यों हूं। जैसा घोषणा पत्र लिखने का साहस अब किसी साहित्यकार और लेखक में नहीं है। आदिवासी, दलित, स्त्री और अल्पसंख्यक के मानवाधिकार जैसे प्रश्नों पर लेखक बड़बड़ाता तो है लेकिन खुलकर बोलता नहीं है। इस तरह हमारे समय की सांस्कृतिक जागरूकता पूरी तरह खुली छत पर सो रही है और नींद में चल रही है।

क्या हमें पूरी दुनिया में तेजी से फैल रही बाजार के नव साम्राज्यवाद की आग से अपने भारत में धर्मनिरपेक्षता, लोकतंत्र और समाजवाद को बचाने की चिंता नहीं करनी चाहिए? और यदि करनी चाहिए तो फिर हम अपनी बात कहते हुए अपने शब्दों को निगल क्यों रहे हैं? हम शाश्वत से तात्कालिक क्यों होते जा रहे हैं तथा अपने ही समाज, साहित्य और समय की मानवीय विडम्बनाओं तथा सत्ता-व्यवस्था के शोषक चरित्र को बेनकाब क्यों नहीं कर रहे हैं। हम साहित्य की परिभाषा को जानते हुए 'जीवन की आलोचना' क्यों नहीं लिख रहे हैं।

साहित्य का उद्देश्य हमें यही तो बताता है कि- भाषा साधन है, साध्य नहीं है। अब हमें 'बागो बहार' और 'बैताल पचीसी' से आगे निकलकर शास्त्र और विज्ञान के प्रश्नों की विवेचना भी करनी चाहिए क्योंकि लेखक अपनी संवेदना और अनुभूति के सरोकारों से बनता है और किसी के द्वारा बनाया नहीं जाता है। इसलिए ऐसा कोई मनुष्य नहीं है-जो असुन्दर, अभद्र और मनुष्यता से रहित सामाजिक-आर्थिक असमानता पर चोट नहीं करे और दलित, पीड़ित और वंचित की वकालत नहीं करे। क्योंकि समाज ही लेखक की अदालत है और प्राकृतिक न्याय की पाठशाला है। शब्द की साधना ही उसका पहला फर्ज है।

मुझे लगता है कि 'वैश्विक महाजनी सभ्यता' की इस शताब्दी में जब सभी तरह की विचारधाराएं और व्यवस्थाएं अपनी अस्तित्व की लड़ाई लड़ रही है तब एक लेखक को भी मनुष्य और समय के सरोकारों की भीतरी और बाहरी संघर्ष यात्रा को धार देनी चाहिए। क्योंकि लेखक का तटस्थ रहना भी उसका एक अपराध है। लेखक को एक बार यह तय करना चाहिए कि वह किसके साथ है। साहित्य की विकास चेतना में महत्व इस बात का है कि आप क्या कर रहे हैं? यह हमारे समय की एक ऐसी दारुण कथा हैं जिसमें महानगर का लेखक ग्रामीण अंचलों के रचनाकारों की उपेक्षा कर रहा है और हॉलीवुड के दंगल में रंगमंच पिट रहा है। हम साहित्यकारों में कर्म शक्ति और विचार शक्ति का अभाव है। हम नाम, यश, महत्व और सम्मान की छोटी-छोटी लड़ाइयां लड़ रहे हैं। सत्ता-प्रतिष्ठानों की रेवड़ियों का रोना रो रहे हैं और अपने समय को तो क्या लेकिन अपने गिरहबान तक को नहीं देख रहे हैं। अत: 'हमारी कसौटी पर वही साहित्य खरा उतरेगा जिसमें उच्च-चिंतन हो, स्वाधीनता का भाव हो, सौन्दर्य का सार हो, सृजन की आत्मा हो, जीवन की सच्चाईयों का प्रकाश हो और जो हममें गति, संघर्ष और बेचैनी पैदा करे, सुलाये नहीं, क्योंकि अब ज्यादा सोना मूर्खता का लक्षण है।' अत: प्रलेस, जलेस, जसमं आदि को इस पर भी सोचना चाहिए।

आज लेखक को समय की चेतावनी पढ़नी चाहिए क्योंकि हमारा समाज और लेखक साहित्य के अभी आदर्श ऊद्योशों को अब भूलता जा रहा है तथा कौरव दल की तरह सामाजिक संस्कृति के सभी मोर्चों से विलुप्त होता जा रहा है। उसकी कहीं कोई दखल नहीं है क्योंकि वह अपनी एकता और विश्वसनीयता को खोने पर आमादा है। विचारधारा की महाभारत में-भगोड़ों की अराजकता है और आम रचानाकार सृजन तथा संघर्ष की भाषा छोड़कर सुविधा-सम्पर्क और साधनों की बैसाखियां लेकर सामाजिक परिवर्तन और न्याय पर्वत पर चढ़ रहा है। ऐसे में अपने आप से कभी पूछिये कि समय के इस वर्तमान में आप कितने प्रासंगिक हैं।

ऐसे में साहित्य और आत्ममुग्ध नायिकाओं को बदलते समय के आईने में अपने यथार्थ को जानना चाहिए क्योंकि पहचान, मान्यता, स्थापना और स्मरणीय बनने की उसकी साहित्यिक महत्वकांक्षा में शॉर्टकट कर कहीं कोई स्थान नहीं है। **(लेखक की पुस्तक 'अब नहीं तो कब बोलोगे' से साभार)**

दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं

रणवीरसिंह चुण्डावत
डायरेक्टर, Mob.: 7742791508

स्व. किशन सिंह जी चुण्डावत

चुण्डावत रेस्टोरेंट एण्ड
चुण्डावत लस्सी कॉर्नर

पुराना रेलवे स्टेशन रोड, ठोकर चौराहा, उदयपुर

धर्म और सत्य की प्रतिष्ठा का उत्सव विजयादशमी

ज्ञानेन्द्र रावत

आश्विन शुक्ल दशमी को तारा उदय होने के समय 'विजय मुहूर्त' होता है और यह काल सर्व सिद्धिदायक होता है, इसलिए इस दिवस को विजयादशमी कहते हैं। इसी दिन श्रीरामचन्द्र जी ने लंका विजय के लिए प्रस्थान किया था- 'अथ विजय दशम्यामाश्विने शुक्लपक्षे दशमुखनिधनाय प्रस्थितों रामचन्द्रः।' इस पर्व को लोकमाता भगवती विजया के पूजन के नाम पर भी विजयादशमी कहते हैं।

भारतीय संस्कृति वीरता की पूजक है, शौर्य की उपासक है। इसे यदि यूं कहें कि भारतीय संस्कृति सदा-सदा से ही वीरता व शौर्य की समर्थक रही है, तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। प्रत्येक व्यक्ति और समाज के रुधिर में वीरता का प्रादुर्भाव हो, दशहरा या विजयादशमी का उत्सव मनाए जाने के पीछे यही भावना अहम् है। दरअसल इस पर्व को लोकमाता भगवती विजया के पूजन के नाम पर भी विजयादशमी कहते हैं। ऐसी मान्यता है कि आश्विन शुक्ल दशमी को तारा उदय होने के समय 'विजय मुहूर्त' होता है और यह काल सर्व सिद्धिदायक होता है, इसलिए इस दिवस को विजयादशमी कहते हैं।

विजयादशमी के दिन ही श्री रामचन्द्र जी ने लंका विजय के लिए प्रस्थान किया था- 'अथ विजयदशम्यामाश्विने शुक्लपक्षे दशमुखनिधनाय प्रस्थितों रामचन्द्रः।' अर्थात आश्विन शुक्ल पक्ष की दशमी को दशमुख रावण वध के लिए श्री रामचन्द्र जी ने प्रस्थान किया था। तदुपरांत रावण वध किया था। नवरात्र के शक्ति उपासना के नौ दिनों के उपरांत मनाया जाने वाला यह उत्सव मूलतः शक्ति और शक्ति का समन्वय बताने वाला प्रमुख पर्व है, जो नवरात्र के नौ दिनों में शक्ति की प्रतीक मां जगदम्बा की उपासना के उपरांत शक्ति से सराबोर व्यक्ति विजय प्राप्ति की कामना के साथ प्रस्थान करता है। साधारणतः कहा भी गया है कि दुखों के तीन मूल कारण हैं। एक है आसक्ति, दूसरा है अभाव और तीसरा है अज्ञान। यह सर्वविदित है और कटु सत्य भी कि दुर्बल व्यक्ति पर दुष्टता से लेकर रोग, शोक, संताप आदि सभी विकार या व्याधियों का हमला होता है। साधनों का अभाव हो तो दैन्य और दरिद्रता के कारण पग-पग पर बाधाएं आकर व्यक्ति को संकटों में घेर लेती हैं। फिर तीसरे कारण अज्ञान से उत्पन्न पीड़ा के बारे में सभी जानते हैं। मार्ग की जानकारी न हो तो भटकते रह जाने और तरीकों के ज्ञान के अभाव में व्यक्ति के हाथ पर हाथ धरे बैठे रहने के अनुभवों से हर कोई गुजरा होता है। नवरात्र में की गई शक्ति स्वरूपा देवी आराधना के उपरांत मिली सफलता के उपलक्ष्य में मनाया जाने वाला पर्व विजयादशमी है। यथार्थ में यह पर्व हमें दस प्रकार के पापों यथा- काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर, अहंकार, आलस्य, हिंसा और चोरी के परित्याग की सद्प्रेरणा प्रदान करता है।

भारतीय इतिहास भी ऐसे कथानकों से भरा पड़ा है, जब इस दिन हिन्दू राजाओं ने युद्ध में विजय प्राप्ति के लिए रणभूमि के लिए प्रस्थान किया था। श्रवण नक्षत्र का योग रण भूमि में विजय के लिए अत्याधिक शुभ और फलदायी माना गया है। यह तो रही शक्ति, शौर्य और विजय की भावना या यूं कहें कि प्राचीन धार्मिक मान्यता की बात, जबकि कुल मिलाकर विजयादशमी या दशहरे का पर्व आपसी रिश्तों का मजबूत करने और भाईचारा बढ़ाने का पर्व है जो व्यक्ति के मन में घृणा एवं बैर को मिटाकर प्रेम, सदाचार, एक्यभाव को बढ़ाने के स्मरण का बोध कराता है। समूचे देश में अलग-अलग विधियों, रीति रिवाजों यथा- कहीं शस्त्र पूजन तो कहीं ऋतु परिवर्तन के उपरांत किसान द्वारा फसल रूपी संपत्ति के घर लाने के सांस्कृतिक उत्सव के तौर पर, महाराष्ट्र में सिलंगण नामक सामाजिक महोत्सव और विद्या की देवी सरस्वती तथा उनके तांत्रिक

प्रतीकों की पूजा के तौर पर, बस्तर में मां दंतेश्वरी की आराधना पर्व के तौर पर तो बंगाल, ओडिसा, असम में दुर्गा पूजा के रूप में, तमिलनाडु, आंध्र और कर्नाटक में लक्ष्मी, सरस्वती और दुर्गा की पूजा के रूप में, गुजरात में गरबा के रूप में, कश्मीर में खीर-भवानी माता की आराधना-दर्शन आदि के रूप में विभिन्न राज्यों में अनेकानेक तरीकों से यह पर्व मनाया जाता है। लेकिन अधिकांशत: समूचे, देश में यह पर्व युद्ध में राम की रावण पर विजय का उत्सव है, जो समूचे देश में श्रद्धा और सम्मान के साथ धूमधाम से मनाया जाता है। यही नहीं यह विजय पर्व उतने ही जोश और उल्लास के साथ दूसरे देशों में भी मनाया जाता है जहां प्रवासी भारतीय रहते हैं।विजय की भावना व्यक्ति और राष्ट्र को उल्लास और उमंग के वातावरण से सराबोर कर देती हैं। यथार्थ में विजय और पराजय, युद्ध प्रक्रिया, भले ही उसका स्वरूप कैसा भी रहा हो, के द्योतक हैं। हमारे मनीषियों ने जीवन की प्रक्रिया और उसकी विभिन्न दशाओं, अवस्थाओं पर गहन चिंतन-मनन के बाद निष्कर्ष प्रस्तुत किया कि मानव या प्राणी

मात्र का संपूर्ण जीवन ही संग्राम का प्रतिरूप है। जीवधारी संसार में आते ही रण क्षेत्र में उतर जाता है, क्योंकि जीवन भी एक रण क्षेत्र है। जीवन में हरेक प्राणी को कदम कदम पर अपने अस्तित्व की रक्षा करने, आगे बढ़ने और जीवन को सर्वोन्नत बनाने के लिए अन्य प्राणियों से संघर्ष करना पड़ता है। यह प्राणी की स्वाभाविक प्रकृति है। इसे आगे बढ़ने की लालसा कहें, स्वाभाविक प्रकृति या होड़ कहें, यथार्थ में 'जीवन संग्राम' ही है। जीवन में मानव की विजय वास्तविक रूप में इस संघर्ष में किस रूप में होती है, इसी को समूचे चराचर जगत को बताने के लिए भगवान श्रीकृष्ण ने गीता का उपदेश दिया था। गीता में मानव को लक्ष्य बनाया गया है न कि अर्जुन को, अर्जुन वहां मानव का ही प्रतीक है। महाभारत रूपी घटना से 'धर्मक्षेत्रे-कुरुक्षेत्रे' नामक शब्दों से कर्मभूमि और 'युयुत्सवः' से जीवन संग्राम को परिभाषित किया गया है।

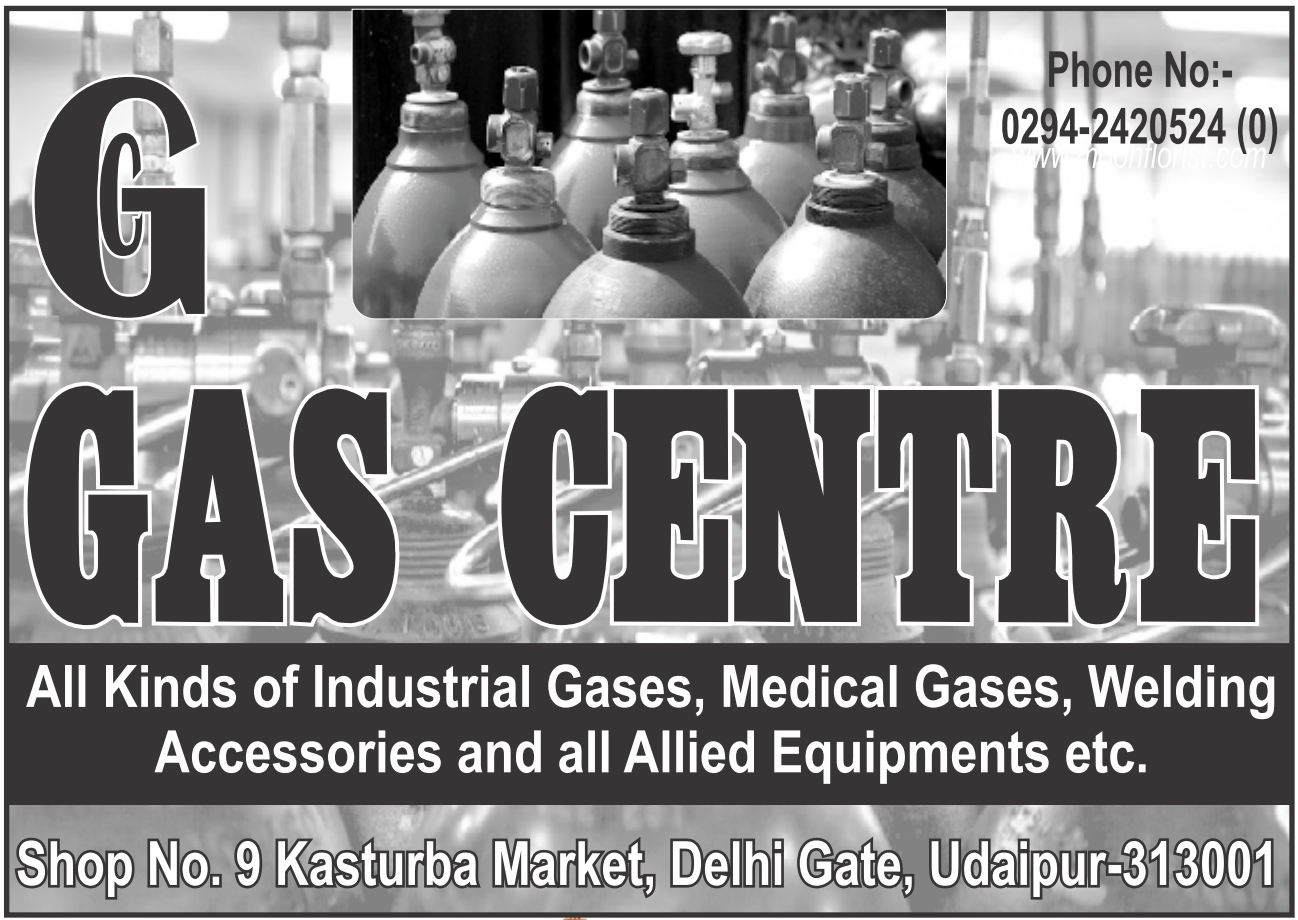

बुजुर्गों की बीमारी के इलाज में न करें जरा भी देरी

डॉ. अनिता शर्मा

13.8 करोड़ पहुंच गई 2021 में देश में बुजुर्गों (60 साल से अधिक उम्र के लोगों) की संख्या

20.1 फीसदी वृद्धि प्रस्तावित है वृद्धावस्था निर्भरता अनुपात में 2031 तक

(स्रोतः एल्डरली इन इंडिया 2021 रिपोर्ट)

घर में बच्चों या वयस्कों को कोई समस्या होती है तो वे तत्काल डॉक्टर के पास जाते हैं, लेकिन बुजुर्गों में समस्याएं होने पर ऐसा कम ही होता है। ऐसे में उनकी बीमारी बढ़ जाती है। दूसरी तरफ बुजुर्गों की रोग प्रतिरोधक क्षमता (इम्युनिटी) कमजोर होती है, इसलिए भी बार-बार बीमारियों की आशंका रहती है। अतएव घर के बुजुर्गों की सेहत पर निरंतर और विशेष ध्यान देने की जरूरत है। सर्दी बढ़ने के साथ शुरू हो जाता है शरीर में परेशानियों का सिलसिला। हम बहुत सी चीजों की अनदेखी करते हैं, जिससे हमारा शरीर बदलते मौसम और ज्यादा सर्दी को झेल नहीं पाता। हमारी जीवनशैली कुछ ऐसी हो गई है कि हम न चाहते हुए भी बीमारियों के घेरे में आ जाते हैं। यदि 50 साल पार के लोगों की बात की जाए तो सर्दी का मौसम उनके लिए किसी आफत से कम नहीं होता। गठिया, शुगर, ब्लड प्रेशर, दमा, दिल की बीमारियां आदि बढ़ती उम्र के साथ और गंभीर होती जाती हैं। ऐसे में मौसम के उतार-चढ़ाव से अपने आपको सचेत रखना बेहद जरूरी होता है।

बुजुर्गों की दिक्कत

व्यवहार में बदलावः अधिक उम्र में सबसे पहले व्यवहार पर असर पड़ता है। व्यवहार में गुस्सा, पसंदीदा काम में अरूचि, मूड ऑफ, बात न सुनना जैसे बदलाव आते हैं।

भूख में कमीः उम्र बढ़ने के साथभूख में कमी होने लगती है। यह परेशानी लम्बे समय तक होना भी बुजुर्गों में किसी समस्या की ओर इशारा करती है।

भूलनाः घर में रखी कोई चीज भूलना, खाना या दवाइयों का ध्यान न रह पाना सहित दैनिक चर्या प्रभावित होना, समस्याग्रस्त होने का संकेत है।

घाव भरने में देरीः अधिक उम्र का असर घाव या खरोंच से भी समझ सकते हैं। घाव भरने में देरी हो तो समझें कि उम्र का असर है।

फैसला लेने में कठिनाईः अधिक उम्र में सोचने-समझने पर भी असर पड़ता है। दिमाग और कार्य करने के बीच समन्वय नहीं बन पाता है।

मानसिक परेशानियांः अकेलापन, डिप्रेशन सहित अन्य मानसिक समस्याएं भी बुजुर्गों को प्रभावित करती हैं। इनसे इच्छाशक्ति भी कमजोर होती है।

इंद्रियों पर असरः जब इंद्रियों पर भी असर होने लगे, जैसे दिखाई कम देना, स्वाद या सुगंध पर प्रभाव आदि भी इसके लक्षण हैं।

भरपूर पानी पिएं

हम सर्दियां शुरु होते ही पानी पीना कम कर देते हैं, साथ ही हमें पसीना भी कम आता है, जो बीमारियों का सबसे बड़ा कारण होता है। उचित मात्रा में पानी पीने से ऊर्जा और बेहतर पाचन बना रहता है। अपने दिन की शुरूआत नाश्ते से पहले आधा लीटर पानी पीकर करें और हर एक घंटे बाद उचित मात्रा में पानी पीते रहें। इससे आप स्वस्थ रहेंगे और बीमारियों से बच सकेंगे।

मौसमी फलों-सब्जियों का सेवन

यदि आप मौसम के हिसाब से फलों और सब्जियों का सेवन करते हैं तो आप बहुत सी बीमारियों से दूर रह सकते हैं। यदि आर्थ्रराइटिस की समस्या से पीड़ित हैं तो आपको हरी पत्तेदार सब्जियों का सेवन नियमित रूप से करना चाहिए। सर्दियों में ब्रोकली और पालक बहुत फायदेमंद हैं। ऐसे लोगों को इस मौसम में संतरा, किन्नू व मौसम्बी का सेवन करना चाहिए, जिससे जोड़ों में दर्द से बचे रहेंगे।

घर में बच्चों या वयस्कों को कोई समस्या होती है तो वे तत्काल डॉक्टर के पास जाते हैं, लेकिन बुजुर्गों में समस्याएं होने पर ऐसा कम ही होता है। ऐसे में उनकी बीमारी बढ़ जाती है। दूसरी तरफ बुजुर्गों की रोग प्रतिरोधक क्षमता (इम्युनिटी) कमजोर होती है, इसलिए भी बार-बार बीमारियों की आशंका रहती है। अतएव घर के बुजुर्गों की सेहत पर निरंतर और विशेष ध्यान देने की जरूरत है। सर्दी बढ़ने के साथ शुरू हो जाता है शरीर में परेशानियों का सिलसिला। हम बहुत सी चीजों की अनदेखी करते हैं, जिससे हमारा शरीर बदलते मौसम और ज्यादा सर्दी को झेल नहीं पाता। हमारी जीवनशैली कुछ ऐसी हो गई है कि हम न चाहते हुए भी बीमारियों के घेरे में आ जाते हैं। यदि 50 साल पार के लोगों की बात की जाए तो सर्दी का मौसम उनके लिए किसी आफत से कम नहीं होता। गठिया, शुगर, ब्लड प्रेशर, दमा, दिल की बीमारियां आदि बढ़ती उम्र के साथ और गंभीर होती जाती हैं। ऐसे में मौसम के उतार-चढ़ाव से अपने आपको सचेत रखना बेहद जरूरी होता है।

रखें विशेष ध्यान

बीमारी की मॉनिटरिंग भी जरूरी

अधिक उम्र में ब्लड प्रेशर, शुगर, थायरॉइड और दूसरी क्रॉनिक बीमारियों की समस्या रहती है। ऐसी स्थिति में नियमित दवाइयां लें। बीमारियों की मॉनिटरिंग भी जरूरी है। लंबे समय तक लेने वाली दवाइयों के साइड इफेक्ट क्या हो रहें या होने वाले हैं उनके बारे में भी जानकारी करें। हैल्दी डाइट लें। हरी सब्जियां-दूध रोज लें।

जरूरत हो तो सहारा अवश्य लें

कुछ बुजुर्ग वॉकर या छड़ी आदि लेने में संकोच या शर्म महसूस करते हैं। लेकिन जरूरत है तो वॉकर या छड़ी जरूर लें। बुजुर्गों में गिरने के कारण हड्डियों के टूटने की समस्या आम है। कोई समस्या है तो कब और किससे सम्पर्क करें। इसकी भी जानकारी रखें।

इम्युनिटी बढ़ाएं

तनाव से बचें। सात-आठ घंटे की पर्याप्त नींद लें। रोजाना 30 मिनट का व्यायाम करें। अधिक उम्र में भी 8-9 गिलास पानी जरूर पीएं। पानी की कमी से थकान और फ्लू के संक्रमण हो सकते हैं। डाइट में हल्दी, अदरक, नींबू, गाजर, ब्रोकली, संतरा, अमरूद, कीवी, जामुन एवं ज्यादा प्रोटीन वाली चीजें लें।

साथ रहते हैं उनकी भूमिका बड़ी

बुजुर्ग जिनके साथ रहते हैं, उनका व्यवहार उन्हें सबसे अधिक प्रभावित करता है। दूसरे लोगों की बातों की बजाए वे साथ रहने वाले की बातों से दुखी होते हैं। ऐसे में उनकी अनदेखी या गलत व्यवहार न करें। अधिक उम्र में फिट रहने के लिए 40 वर्ष की उम्र से ही अच्छी दिनचर्या और खानपान होना चाहिए।

मेमोरी के व्यायाम रोज करें

नियमित ब्रेन एक्टिविटी करें। इसके लिए सुडोकू, पजल्स, पुराने एलबम देखें। पुरानी चीजों के बारे में परिजनों से चर्चा करें। डिमेंशिया का खतरा कम होता है।

सोना हो तो ही बिस्तर पर जाएं

दिन में एक घंटे से ज्यादा न सोएं। रात में 10 बजे सोते हैं तो 10 बजे ही बिस्तर पर जाएं। इससे अनिद्रा की समस्या नहीं होगी और अच्छी दिनचर्या भी बन जाएगी।

सूक्ष्म व्यायाम जरूर करें

इससे हाथ-पैरों की मांसपेशियां मजबूत बनती हैं। बॉडी अच्छे से स्ट्रेच हो जाती है। जोड़ों को दर्द से राहत मिलती है। सांस से जुड़े प्राणायाम व आसन भी कर सकते हैं।

Happy Diwali

Anup Kumar Jhambani
Director

Industrial Electricals

Authorised Dealer For

Schneider Electric, FLUKE Calibration, Empire CABLES, Unique CABLES, minilec, MKAY POWER CONTROLS, METRAVI, ascon, HPL, "JAYKAY" Sirens, HEX, KAYCEE, COOPER Bussmann, connectwell ...The Right Connection, m-seal, 3M

Shop No. 157-B, Shakti Nagar (In the street Near RSEB-GSS) Udaipur-313 001 (Raj.)
Phone : 0294 - 2422742, 2411879, Mob. : 9829072047
E-mail : info@industrialelectricals.com, Website : www.industrialelectricals.com

खुदकशी की दर नए रिकॉर्ड पर

सड़क हादसों में जान गंवाने वालों की संख्या में भी इजाफा

1,64,033

लोगों ने खुदकुशी की 2021 में देशभर में

1.39

लाख था आत्महत्या का आंकड़ा 2019 में

राजवीर/सनत जोशी

राष्ट्रीय अपराध रेकार्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) ने अगस्त 22 के अंतिम सप्ताह में देश में खुदकशी और सड़क हादसों में मरने वालों के जो ताजा आंकड़े जारी किए हैं, वे चौंकाने वाले तो हैं ही, चिंतित और निराश करने वाले भी है। आंकड़े बता रहे हैं कि 2021 में खुदकुशी करने वालों की संख्या और इसकी दर दोनों में वृद्धि हुई है। साल 1967 के बाद पहली बार ऐसा हुआ जब आत्मघाती कदम उठाने की प्रवृत्ति इतनी तेजी से बढ़ी। एनसीआरबी के अनुसार वर्ष 2021 में आत्महत्या करने वालों का आंकड़ा प्रति 10 लाख पर 120 तक पहुंच गया जो 2020 की तुलना में 6.1 प्रतिशत ज्यादा रहा। लेकिन इससे भी चिंताजनक जो बात सामने आई हैं, वह यह कि पिछले साल खुदकशी करने वाला हर चौथा व्यक्ति दिहाड़ी मजदूर था। इससे पहले सबसे ज्यादा आत्महत्या की दर वर्ष 2010 में रिकॉर्ड गई थी। तब प्रति 10 लाख लोगों पर 113 लोगों ने आत्महत्या की थी।

आंकड़े बता रहे हैं कि साल 2019 से 2021 के बीच गरीब तबके में खुदकुशी की घटनाएं ज्यादा तेजी से बढ़ीं। इससे पता चलता है कि देश का गरीब तबका किस कदर बदहाली में जी रहा है। खुदकुशी के ये आंकड़े सरकार और समाज के समक्ष गंभीर सवाल खड़े करते हैं। अगर लोग मौत को गले लगाने को मजबूर हो रहे हैं तो निश्चित ही कहीं न कहीं इसके जिम्मेदार कारण हमारे समाज और सरकारों की नीतियों के भीतर ही मौजूद हैं।

एनसीआरबी के आंकड़े बता रहे हैं कि 2019 से 2021 के दौरान खुदकुशी करने वालों में दिहाड़ी मजबूरों के अलावा छात्रों, स्वरोजगार में लगे लोगों, वेतनभोगियों और सेवानिवृत्त लोग भी कम नहीं थे। साल 2021 में एक लाख चौसठ हजार तैंतीस लोगों ने खुदकुशी की। इनमें दिहाड़ी मजदूरों की संख्या बयालीस हजार के लगभग रही, यानी खुदकुशी करने वालों की कुल संख्या का एक चौथाई। इससे पिछले साल यानी 2020 में सैंतीस हजार छह सौ छियासठ दिहाड़ी मजदूरों ने खुदकुशी की थी। गौरतलब है कि 2019 से 2021 की अवधि कोरोना महामारी वाली थी। उस दौरान देश में पूर्णबंदी और फिर लंबे समय तक चले आंशिक प्रतिबंधों ने छोटे-बड़े कारोबारों को चौपट कर डाला था। मार्च-अप्रेल 2019 में तो करोड़ों प्रवासी कामगारों को अपने घरों को लौटने को मजबूर होना पड़ा था। एक साथ करोड़ों लोगों का रोजगार से हाथ धो बैठना कोई मामूली घटना नहीं कही जा सकती। इसमें सबसे ज्यादा दिहाड़ी मजदूर ही थे। हालांकि निजी क्षेत्र में काम करने वाले लाखों वेतनभोगी भी महामारी से उत्पन्न हालात के शिकार हुए। इस बदहाली का असर आज भी बना हुआ है। जाहिर सी बात है कि अगर लोगों के पास रोजगार नहीं होगा तो पैसा कहां से आएगा और लोग खाएंगे क्या? दिहाड़ी मजदूरों के सामने यहीं संकट दो साल पहले भी था और कमोबेश आज भी बना हुआ है।

आंकड़े बता रहे हैं कि दिहाड़ी मजदूरों, स्वरोजगार से जुड़े, पेशेवरों आदि में खुदकुशी करने वालों में दो तिहाई लोग ऐसे थे जिनकी सालाना आय एक लाख रुपए या इससे भी कम थी। भले केन्द्र और राज्य सरकारें दावे करती रहें कि गरीब तबके को बचाने के लिए उन्होंने कोई कसर नहीं छोड़ी, करोड़ों लोगों को महीनों तक मुफ्त राशन या खाना दिया, लेकिन असलियत किसी से छिपी नहीं है। अभी भी सरकारों की तरफ से रोजगार के मोर्चे पर हालात बेहतर होने के दावे किए जा रहे हैं। अगर वाकई रोजगार के हालात अच्छे हैं तो लोग जान देने पर क्यों मजबूर हैं?

इन हालातों से स्पष्ट है कि एक कल्याणकारी राज्य कहलाने वाले देश में सरकारें अपने नागरिकों के प्रति किस कदर लापरवाही और संवेदनहीन हैं। गरीब का चूल्हा आज भी महंगाई के दौर में कभी जल पाता है और कभी नहीं। सत्ता की सियासत में व्यस्त और मस्त नेताओं को हालात का पता है, लेकिन न इन्हें तरस आता है और न ही शर्म। ये अपने और रिश्तेदारों के पोषण में लिप्त हैं।

रिपोर्ट के मुताबिक न सिर्फ आत्महत्या की दर में इजाफा हुआ, बल्कि सड़क हादसों में भी बीते वर्ष डेढ़ लाख से अधिक लोगों ने जान गंवाई। कुछ वर्ष पहले तक यह आंकड़ा एक लाख मौतों के करीब था। सड़क दुर्घटनाओं में मरने वालों की संख्या बढ़ना इसलिए गंभीर

चिंता का विषय है, क्योंकि कई ऐसे देशों के मुकाबले भारत में वाहनों की संख्या उतनी नहीं, जहां कहीं कम सड़क हादसे होते हैं। एनसीआरबी के अनुसार करीब 60 प्रतिशत सड़क हादसे वाहनों की तेज गति के कारण होते हैं। इस कारण के मूल में जाने की आवश्यकता है, क्योंकि यातायात नियमों की अनदेखी, गलत और कई बार तो उलटी दिशा में वाहन चलाने, अतिक्रमण एवं सड़कों की खराब डिजाइन के कारण भी हादसे होते हैं।

इसी तरह सड़कों के गड्ढे भी मार्ग दुर्घटना का कारण बनते हैं। प्राय: प्रमुख सड़कों पर भी महीनों तक गड्ढे बने रहते हैं। एनसीआरबी के आंकड़े यह भी कह रहे हैं कि सड़कों की लंबाई में केवल 2.1 प्रतिशत की हिस्सेदारी वाले राष्ट्रीय राजमार्गों में 30 प्रतिशत से अधिक सड़क दुर्घटनाएं होती हैं। इसका मतलब है कि जैसे-जैसे राष्ट्रीय राजमार्ग बन रहे हैं, वैसे-वैसे मार्ग दुर्घटनाओं का आंकड़ा भी बढ़ रहा है। ऐसे में यह आवश्यक है कि सड़क हादसों के मूल कारणों की पहचान कर उनका प्राथमिकता के आधार पर निवारण किया जाए। सड़क सुरक्षा जैसे आयोजन मात्र खाना पूर्ति

विडंबना है कि एक साल में आतंकवाद, आपराधिक हत्या, उग्रवाद, नक्सलवाद आदि सभी कारणों से जितने लोगों की मौतें होती हैं, उससे कहीं अधिक सड़क हादसों में लोगों की असमय मौतें हो जाती है। एक तरफ देश में राष्ट्रीय राजमार्गों का जाल बिछाया जा रहा है तो दूसरी तरफ सड़क हादसों की घटनाएं बढ़ रही हैं। 4 लेन, 6 लेन, 8 लेन के राजमार्ग बन रहे हैं, जिन पर कम से कम अवरोधक हैं, इसके चलते लोग ऐसी सड़कों पर अधिक लापरवाह हो जाते हैं और वाहन तेज गति से चलाते हैं। इससे सड़क हादसों में वृद्धि हो रही है। केन्द्रीय सड़क परिवहन मंत्रालय को इस पर ध्यान देने की जरूरत है। इसके अलावा राज्य सरकारों द्वारा निर्मित राज्य राजमार्ग टू लेन और फोर लेन तो बन गए हैं, लेकिन उनका रख-रखाव काफी खराब है।

सिद्ध हो रहे हैं। इन हादसों में अधिकतर वे लोग जान गंवा देते हैं, जिन पर गृहस्थी की गाड़ी को आगे बढ़ाने की जिम्मेदारी होती है। वह घर-परिवार भारी संकट में पड़ जाते हैं। उम्मीद की जानी चाहिए कि केन्द्र, राज्य सरकारें, स्थानीय निकाय, यातायात विभाग और पुलिस सहित इन हालातों के लिए जिम्मेदार लोग व प्रतिष्ठान इस पर चिंतन करके हालात सुधारने की चेष्टा करेंगे।

Anoop Srivastava
Director, 94141 68643

Happy Diwali

Ajay Kumar
Director, 98290 42643

PRINCE ENTERPRISES

(Winner of Best Corporate Partner 2009 & 2022

Authorised Channel Partner/Showroom

Canon COPIER-FAX PRINTERS SCANNER | DELL | Lenovo | BenQ LCD PROJECTOR | hp Invnet

RED TOWER
32, Gurudwara Road, Delhi Gate, Udaipur 313 001
Ph.L 0294-2415643, 2425898 E-mail: princeudr1@gmail.com
website: www.princeenterpriseuudaipur.com

क्षेत्रीय दलों को खदेड़ आगे हुई दस साल की 'आप'

राष्ट्रीय पार्टी के मुकाम से ज्यादा दूर नहीं

सीख गई गिरकर उठना, उठकर चलना और आगे बढ़ना

भगवान प्रसाद गौड़

अन्ना हजारे के 2011 में 'इंडिया अगेन्स्ट करप्शन' आंदोलन से दीक्षित एक्टिविस्ट अरविंद केजरीवाल ने 'आम आदमी पार्टी' का गठन किया था। जो इसी वर्ष गांधी जयंती के दिन दस वर्ष पूर्ण कर लेगी। निर्वाचन आयोग से इसे चुनाव चिह्न मिला झाड़ू। तब शायद ही किसी ने सोचा होगा कि अल्पावधि में ही यह पार्टी दो राज्यों में क्लीन स्वीप करते हुए अपनी सरकार बना लेगी। आम आदमी पार्टी देश के 54 राजनैतिक दलों में सबसे तेजी से आगे बढ़ने वाली पार्टी बन गई है। यदि आने वाले वक्त में आम आदमी पार्टी राष्ट्रीय पार्टियों में शुमार होने का दावा पेश करे तो कोई आश्चर्य नहीं। आजादी के बाद करीब 2 दशक तक पूरे देश में कांग्रेस का दबदबा था, लेकिन 1967 के बाद से जिन राज्यों में कांग्रेस की पकड़ कमजोर होने लगी, वहां क्षेत्रीय दलों को उभरने का मौका मिला। चाहे उत्तरप्रदेश में समाजवादी पार्टी और बसपा हो, बिहार में जदयू या राजद हो या पश्चिम बंगाल में टीएमसी हो, हर पार्टी ने राज्य स्तर पर अपने करियर की शुरूआत की और बाद में एक से ज्यादा राज्यों में अपनी जड़ें मजबूत कीं, लेकिन रफ्तार के स्तर पर केजरीवाल की पार्टी का मामला थोड़ा अलग नजर आता है। आम आदमी पार्टी का राजनीतिक सफर 2 अक्टूबर 2012 से शुरु हुआ और यह अपनी पॉलिटिकल करियर के 10 साल पूरे कर रही है। 'आप' दिल्ली में हुए भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन से निकली थी, पार्टी ने अपना राजनीतिक डेब्यू भी दिल्ली से ही किया। साल 2013 में दिल्ली विधानसभा चुनाव के पहले पार्टी ने बिजली-पानी आंदोलन चलाया। केजरीवाल ने तब कांग्रेस की शीला दीक्षित सरकार के खिलाफ धरना दिया और 14 दिनों तक भूख हड़ताल की। पार्टी को पहली बड़ी सफलता हाथ लगी 2013 के दिल्ली विधानसभा चुनाव में। 'आप' ने 70 में से 28 सीटें जीतकर सभी को चौंका दिया। इसके बाद कांग्रेस के साथ मिलकर सरकार बनाई, लेकिन वो ज्यादा नहीं चल सकी। फरवरी 2014 में केजरीवाल ने पूर्ण बहुमत की सरकार ना होने की वजह से इस्तीफा दे दिया। 14 फरवरी 2015 को पुनः चुनाव हुए जिनमें आप को पूर्ण बहुमत मिला। 16 फरवरी 2020 को हुए चुनाव में पार्टी ने 70 में से 67 सीटें जीतकर तीसरी बार अपनी सरकार बनाई। निर्वाचन आयोग के सितम्बर 2021 के डेटा के मुताबिक देश में कुल 2858 रजिस्टर्ड राजनैतिक दल हैं। चुनाव आयोग ने सिर्फ 8 पार्टियों को राष्ट्रीय पार्टी का दर्जा दिया है और करीब 54 राजनीतिक दल को राज्य स्तरीय पार्टी की मान्यता प्राप्त है। आम आदमी पार्टी को भी राज्य स्तरीय पार्टी का ही दर्जा मिला हुआ है। वहीं 2796 ऐसी पार्टियां है, जो रजिस्टर्ड तो हैं, लेकिन उन्हें मान्यता हासिल नहीं हैं।

आजादी से पहले थीं दो क्षेत्रीय पार्टियां

भारत में क्षेत्रीय पार्टियों का इतिहास आजादी से भी पहले से शुरू होता है। स्वतंत्र भारत में चुनाव राजनीति की शुरुआत 1952 से होती है, लेकिन दो क्षेत्रीय पार्टियां ऐसी हैं, जो ब्रिटिश काल में ही बन चुकी थीं। ये पार्टियां हैं– शिरोमणि अकाली दल (एसएडी) और जम्मू कश्मीर नेशनल कॉन्फ्रेंस (जेकेएनसी)। इसके बाद अलग–अलग राज्यों में क्षेत्र, पहचान, भाषा, संस्कृति, समुदाय, जाति और धर्म के आधार पर पार्टियों का गठन होता रहा, जो क्षेत्रीय पार्टियों में शुमार होती चली गई। आप के पहले डीएमके और एआईडीएमके ही ऐसी दो पार्टियां रही हैं, जिन्होंने दो राज्यों (तमिलनाडु और पुडुचेरी) में अपनी सरकार बनाई, लेकिन आप और इन दो पार्टियों में एक बड़ा फर्क ये है कि आम आदमी पार्टी ने पहले छोटा और फिर बड़ा राज्य जीता, वहीं डीएमके और एआईडीएमके ने पहले बड़े और फिर छोटे राज्य में सरकार बनाई।

शराब नीति पर सवाल

आप के ग्यारहवें वर्ष प्रवेश की खुशी दिल्ली सरकार के उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया से सीबीआई की पूछताछ और घर की जांच पड़ताल से फिकी हो गई। उन पर सरकार की नई शराब नीति में भ्रष्टाचार के आरोप को लेकर एफआईआर दर्ज की गई है। हालांकि सिसोदिया ने तमाम आरोपों से इनकार करते हुए कहा है कि सीबीआई या ईडी जो भी जांच करना चाहें, वो कर लें। मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने भी उनका बचाव करते हुए कहा कि सार्वजनिक जीवन में लोगों को हर जांच के लिए तैयार रहना चाहिए। इसी बात के मद्देनजर उन्होंने विधानसभा में भी विश्वास मत प्राप्त कर लिया। इसी बीच जिस आंदोलन के गर्भ में आप का जन्म हुआ, उसके शिखर पुरुष अण्णा हजारे ने एक पत्र लिखकर केजरीवाल सरकार की शराब नीति को लेकर तीखा सवाल उठाया है। केजरीवाल अण्णा हजारे के भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन के प्रमुख समर्थक एवं संचालक थे। यह आंदोलन पूर्ण शराबबंदी का समर्थक भी था। अण्णा ने इस

जुगल जोड़ीः केजरीवाल व सिसोदिया

मसले पर साफ लहजे में केजरीवाल को यह कहकर कठघरे में खड़ा किया कि आपकी शराब नीति दरअसल कथनी और करनी में फर्क का उदाहरण है। निश्चित रूप से ऐसे समय में जब केजरीवाल अपनी पार्टी को गुजरात और हिमाचल के आसन्न चुनावों के मैदान में उतारने के लिए उत्साहित हैं, निश्चित रूप से आप के लिए अण्णा का पत्र एक असहज स्थिति उत्पन्न करता है। यह छिपा तथ्य नहीं है कि दिल्ली की सरकार ने शराब के मामले में किस हद तक उदार नीति लागू की। सच यह है कि आसान शर्तों पर शराब की दुकानें खोलने को लेकर इसे पीने की उम्र 25 से घटाकर 21 करके सरकार ने इसके सेवन के दायरे का भी विस्तार किया। विचित्र यह है कि अरविंद केजरीवाल ने अपनी ही किताब स्वराज्य में लिखा है कि शराब की दुकान खोलने का लाइसेंस तभी दिया जाना चाहिए, जब ग्रामसभा में मौजूद 90 प्रतिशत महिलाओं की मंजूरी हो। अपने ही लिखे पर लकीर फेरने से तो सवाल उठेंगे ही।

Madanlal Chaanra
#92144 53304

Happy Diwali

MOTOROLA
Dealers : 2-Way Radios

Mobile Communications
WIRELESS ENGINEERS (Free Warranty Services)

243/17, "Nundee", Ashok Nagar, (Maya Misthan)
Opp. Vigyan Samiti, UDAIPUR-313001 (Raj.)
Ph. : 0294-2420455 E-mail : mobcom@gmail.com

Ministry of Communicaions & IT Lic. No. AJR/DPL/04/2000
PAN# : ADJPC3852C TIN #08164003800

प्रत्यूष

ज्योर्तिमय जीवन पुष्कर मुनि

राजस्थान की माटी में शूरवीर, त्यागवीर, दानवीर, तपवीर एवं कर्मवीर, उत्पन्न हुए हैं। जिन्होंने अपने तप, त्याग, अध्यात्म और औदार्य, कला और संस्कृति के माध्यम से इस धरा का गौरव बढ़ाया है।

धर्म और कर्म की इस अद्भुत मेवाड़ भूमि के सेमटाल (वर्तमान में पुष्कर नगर) गांव के निवासी ब्राह्मण सूरजमल पालीवाल की धर्मपत्नी वाली बाई ने अश्विन शुक्ला चौदस वि.सं. 1967 को (17 अक्टूबर 1910) को अपनी कुक्षी से अंबालाल को जन्म दिया। संघर्षमय जीवन यात्रा का प्रथम पड़ाव माता के स्वर्गवास से शुरू हुआ। अंबालाल के मन में विचार आया कि संसार असार है और उनके मन में वैराग्य भाव जागृत हो जाता है। महास्थविर ताराचंद जी म. के श्री चरणों में पहुंचते हैं। जैन धर्म का अध्ययन करते हुए मात्र 14 वर्ष की अल्पायु ज्येष्ठ शुक्ला 10 वि.सं.1981 (12 जून 1924) को गढ जालौर में जैन भागवती दीक्षा अंगीकार कर अपना नाता गुरू से सदा-सदा के जोड़ लेते हैं। यहां उन्हें नया नाम मिलता है, पुष्कर मुनि। भारतीय संस्कृति में तीन धाराएं हैं- वैदिक, जैन और बौद्ध। जैन एवं बौद्ध धाराओं को श्रमण संस्कृति के प्रवाह में उल्लिखित किया जा सकता है। गुरूदेव ताराचंद महाराज वैदिक एवं श्रमण संस्कृति की दो धाराओं के अनूठे सेतु थे। बाह्मण कुल में जन्म लेकर पुष्कर मुनि ने वैदिक संस्कार प्राप्त किए और जैन दीक्षा ग्रहण कर जैन साधना पद्धति पर बढते गए। गीता एवं उपनिषद् के घोषों के बीच आगम की गाथाओं एवं नमोक्कार महामंत्र का निनाद उनके व्यक्तित्व को एक विशिष्टता प्रदान करता था।

मात्र 19 वर्ष की अल्पायु में संस्कृत अध्ययन के साथ-साथ वैदिक, बौद्ध, न्याय आदि दर्शनों का पठन-पाठन किया। तर्क शक्ति

श्रमण डॉ. पुष्पेन्द्र मुनि

अद्भुत एवं ग्रहणशील होने के कारण 9 भाषाओं के ज्ञाता हो गए और साहित्य लेखन प्रारम्भ हुआ।

पुष्कर मुनि ने 135 पुस्तकों की रचना की। जिनमें जैन कथा नामक 111 भाग का लेखन हिन्दी साहित्य में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इनके उपदेश प्रेम, अहिंसा, सहिष्णुता पर आधारित होते थे। भाद्रपद शुक्ला 6 वि.सं. 2033 (30 अगस्त 1976)संवत्सरी महापर्व के पावन दिवस पर पुष्कर मुनि उपाध्याय पद से सुशोभित हुए। उदयपुर के श्री तारक गुरू जैन ग्रन्थालय के अलावा सम्पूर्ण भारत में शिक्षा, धर्म एवं सामाजिक क्षेत्रों में आपश्री द्वारा किए गए विशाल व्यापक तथा ठोस कार्यों की संख्या 72 से भी अधिक है। पूना विश्वविद्यालय में 'जैन दर्शन पीठ' की स्थापना का भी इन्हें श्रेय है। शिक्षा के लिए आपका जीवन पूर्ण समर्पित था। इन्होंने 75 बालक-बालिकाओं को दीक्षा प्रदान कर पुण्य का संचय किया। सन् 1984 में दिल्ली चातुर्मास के दौरान गुरूदेव की हीरक जन्म जयन्ती पर तत्कालीन राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह ने इनकी शालीनता, विद्वता तथा साधना से प्रभावित होकर 'विश्व संत' की उपाधि से सम्मानित किया। सुदृढ़ प्रलम्ब काया, गम्भीर घोषयुक्त वाणी और बालकों जैसी निर्दोष मुस्कुराहट आपके व्यक्तित्व का प्रमुख आकर्षण था। साधना को प्रमुख स्थान देकर लोक-कल्याण में प्रवृत थे। दूसरों को उपदेश देने या तारने की चिन्ता में अपनी साधना नहीं भूलते थे।

उपाध्याय पुष्कर मुनि ऐक्य के सुदृढ़ समर्थक थे। श्रमण संघ की रचना में सदा ही मौलिक भूमिका अदा की। एक ओर कबीर जैसे फक्कड़ थे तो दूसरी ओर सूर जैसे भक्त हृदय भी थे। असहाय, दु:खी और पीड़ित जनमानस के लिए हृदय माधुर्य से ओत-प्रोत था तो अन्याय, अत्याचार के प्रति कठोर भी थे। अध्ययन अध्यापन के साथ-साथ अपने सिद्धान्तों को जन-जन तक पहुंचाने का जो कार्य सन्यासी का होता है, वह उपाध्याय श्री ने एक यायावर की भांती सन् 1924 (वि.सं. 1981) से जीवन के अंतिम क्षणों तक सन् 1993 (वि.सं. 2049) तक लगभग 69 वर्ष तक बिना रूके, बिना झुके व बिना थके किया। इस देश के विभिन्न प्रान्तों की माटी को अपने पगतलों का स्पर्श कर उसे चंदन सा सुरभित करते हुए जन जागरण का अलख जगाते रहे। स्वदेश प्रेम के कारण जीवन पर्यान्त खादी को धारण किया। विश्व भर में चमत्कारी महासंत के रूप में पहचाने जाने वाले इस सिद्धयोगी के मुख से जो भी उच्चरित हो जाता वह निष्फल नहीं होता था। प्रतिदिन प्राय: मध्यान्ह और रात्रि में नवकार महामंत्र का जाप करने के पश्चात् मंगलपाठ श्रवण हेतु उस शहर, नगर, गांव में जनसमूह आपश्री के पास दौड़ा चला आता था। आप मंगलपाठ सुनाते ओर दुखियारों के दुख दूर हो जाते। श्रद्धा का सैलाब और जादू इतना था कि श्रद्धालुओं को आपके चेहरे के सिवाय कुछ भी दिखाई नहीं देता था।

गुरूदेव श्री को 'नवकार महामंत्र का महान आराधक' भी कहा जाता है। उन्होंने नवकार की सतत् आराधना से समाज को एकता का सन्देश दिया और स्वयं का जीवन भी एकता को समर्पित रहा। समाधिमरण को वरण करने के लिए इन्होंने उदयपुर में 2 अप्रेल 1993 को संथारा ग्रहण किया और अविचल योग स्थिति में 48 घंटे पश्चात् जीवन दीप शांत हो गया। जहाँ पर आपका पार्थिव शरीर अग्नि को समर्पित किया गया वह स्थल स्मारक के रूप में 'श्री पुष्कर गुरू पावन धाम' के नाम से उदयपुर में विश्रुत है। उपाध्याय श्री 83 वर्ष जिए पर शान से जिए। जीवन का आदि, मध्य और अंत ज्योतिर्मय रहा। ऐसे मनोयोगी युगपुरूष ने समाज, राष्ट्र तथा सम्पूर्ण मानव समाज को जो अमर और चिर स्थायी देन दी है उसका सम्पूर्ण आंकलन असम्भव है। **नमन।**

Happy Diwali

Hotel
Raj Shree Palace

The Royal & Luxury Stay

Opp. Garden Hotel, Gulab Bagh Road, Udaipur - 313001, Ph. : 0294-6505060
E-mail : hotelrajshreepalaceudr@gmail.com, Website : www.hotelrajshreepalace.com

आयुर्वेद के जनक हैं धन्वन्तरि

डॉ. समीता कालरा

दीपपर्व के पहले दिन धनतेरस को मनाने के पीछे कई कथानक हैं। देवासुर संग्राम में देवताओं की पराजय के पश्चात हुए समुद्रमंथन में भगवान विष्णु के 24 अवतारों में से एक भगवान धन्वन्तरि, अमृत, विष एवं रत्नों का प्रादुर्भाव हुआ। धन्वन्तरि देवताओं के चिकित्सक हुए जिन्हें चिकित्सा का जनक एवं आदि चिकित्सक माना जाता है, अमृत का पान देवगणों ने किया, विष का पान भगवान शिव ने किया जिसके कारण वे नीलकण्ठ कहलाए। समुद्र मंथन में उत्पन्न रत्नों का आभूषण एवं ऐश्वर्यप्रदायक के अतिरिक्त आयुर्वेद में चिकित्सा के रूप में किया जाता है।

आयुर्वेद में प्राय: पुराणों की तरह ही नौ महारत्न माने गए हैं

माणिक्यमुक्ताफलविद्रुमाणि
तार्क्ष्यंच पुष्यं खिदुरंच नीलम् ।
गोमेदकञ्चाथ विदूरकंच क्रमेण
रत्नानि नवग्रहाणाम् ।।

अर्थात् माणिक्य, मुक्ता, प्रवाल, पन्ना, पुखराज, हीरा, नीलम, गोमेद एवं वैदूर्य यह नव रत्न हैं। इसके साथ ही रत्नों से कुछ न्यून गुणों वाले उपरत्न सूर्यकान्त, चन्द्रकान्त, वैक्रान्त, राजावर्त, पैरोजक, स्फटिक इत्यादि कहे गए हैं। मानव स्वास्थ्य अक्षुण्ण रहे, उसका सतत् बृहण होता रहे, यह प्रयास आयुर्वेद में आदिकाल से होता रहा है। आयुर्वेद में सृष्टि के समस्त द्रव्यों का उचित संस्कार के पश्चात उचित मात्रा में स्वास्थ्य रक्षा एवं रोग निवारण के लिए व्यवहार में लाने का कार्य अतीव वैज्ञानिक ढंग से किया गया है।

रत्न चूंकि दुर्लभ, आकर्षक होते हैं, के गुणों का वैज्ञानिक विवेचन कर आयुर्वेद में शरीर के तीन दोषों, सात धातुओं एवं मलों पर प्रभाव का अध्ययन कर इनका विभिन्न कल्पनाओं में प्रयोग रसायन कर्म एवं रोग दूर करने के लिए किया जाता है। प्रत्येक रत्न की औषधीय गुणधर्मों का रोग पर उसके प्रभाव को देखते हुए करना तत्कालीन समय की अतिमहत्वपूर्ण आविष्कार था। एड्स, कैंसर जैसे भयंकर रोगों से लेकर दोषों की समता बनाए रखने एवं रसायन प्रयोग के लिए आयुर्वेद में रत्नों का प्रयोग किया गया है। धनतेरस पर नवीन वस्त्र खरीदने, नए बर्तन, सोने चांदी के आभूषण खरीदने के पीछे भी हमारा अन्तर्चेतन में छिपा उद्देश्य यह है कि भगवान धन्वन्तरि को विष्णु का अवतार माना गया है। भगवान नारायण ऐश्वर्य, समृद्धि, धन, आरोग्य के अधिष्ठाता माने जाते हैं। धनतेरस उनका प्राकट्य दिवस होने के कारण हम धन्वन्तरि की पूजा अर्चना के साथ उनके माध्यम से ऐश्वर्य, समृद्धि, धन, आरोग्य का प्रवेश हमारे घरों में हो एवं भगवान नारायण की कृपा हम पर बनी रहे, ऐसी कामना करते हैं।

लघुकथा

डबडबाई आंखें

अचानक *स्कूटी खराब होने से सीमा को पैदल ही घर के लिए निकलना पड़ा। रात अधिक होने एवं बारिश से अंधेरा भी घना था। सुनसान सड़क पर दूर-दूर तक कोई नहीं था, केवल काले सायों के। तभी बिजली की कड़कड़ाहट की रोशनी में कुछ मनचलों की नजर सीमा पर पड़ी। वे तेजी से उसकी तरफ बढ़े, कहीं हाथ से शिकार निकल ना जाए। उन्हें देख डर के मारे सीमा का गला रूंध गया। वे सीमा तक पहुंचते, उससे पहले एक नवयुवक दौड़ता हुआ अचानक सामने आकर सीमा से बोला, मैं आपके साथ हूं, डरे नहीं। उसे देखकर लड़कों के कदम रूक गए। उधर एक अजनबी नवयुवक के मुंह से यह सुनकर सीमा हैरान हो गई किंतु उसे नवयुवक पर भी विश्वास नहीं हुआ।... पर डूबते को तिनके का सहारा। नवयुवक भला लग रहा था। मनचले लड़कों ने भी अपने कदम दूसरी ओर मोड़ लिए। कुछ दूर तक साथ चलने के बाद सीमा का घर आ गया था। उसने उस अजनबी नवयुवक से कहा, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। इसमें धन्यवाद की कोई बात नहीं है। मैंने तो सिर्फ एक भाई का फर्ज निभाया है। यह सुन सीमा स्तब्ध रह गई, आपने मुझे बहन कहा... । न जान... न पहचान... । कहते हुए सीमा की आंखें डबडबा आईं। आज उसके भाई की कमी सच्चे मायनों में पूरी हो गई।*

दीपक मेनारिया 'दीपू'

St. Anthony's Sr. Sec. School

Affiliated to CBSE, New Delhi

Wishing you all a

Happy Diwali

&

A Happy Peaceful & Prosperous New Year 2023

478/479, Sector-4, Hiran Magri, Udaipur
School Ext. Goverdhan Vilas, Udaipur

Happy Deepavali

Dharmendra Mandot
Director

Dulux

NAKODA
PAINTS & DECOR

THE TRUE COLOUR SHOP

100 Feet Road, Near SBI Bank, Opp. Ashoka Palace, Shobhagpura, Udaipur 313 004
Mob. : 98281 40456, E-mail : nakodapaints.udr@gmail.com

प्रकाश की अवधारणा को करें आत्मसात

नरपतदान चारण

दीपोत्सव का आध्यात्मिक और दार्शनिक भाव है- असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय। यानी अज्ञानता के अंधकार से मुक्त करके ज्ञानरूपी प्रकाश की ओर ले जाने का पर्व। लेकिन यह पर्व संकल्प का पर्व भी है और सबसे बड़ा संकल्प है अपने आप को भीतर से बदलने का संकल्प हर साल का दीपपर्व हमें नैतिकता को धारण करने का सतत अवसर उपलब्ध करवाता है। वहीं आध्यात्मिक रूप से यह पर्व बंधन से मुक्ति का पर्व माना जाता है। दीपक प्रतीक है आत्मा के उज्जवल रूप का और हमारे द्वारा प्रज्वलित ज्योति सद्गुण का भाव है। दीपावली क्षणिक खुशी का कारण नहीं है, बल्कि जीवनभर की खुशहाली का संचार है।

मूल संदेश को जीवन में उतारें

आज समाज जिस मोड़ पर खड़ा है उस लिहाज से दीपावली के मूल संदेश को जीवन में उतारना बेहद प्रासंगिक हैं। यह बात ध्यान रखें कि दिवाली का मकसद सिर्फ लक्ष्मी के आगे दीपक जलाकर धन मांगना, पटाखे फोड़ना और मिठाई खाना नहीं है। दीपक आत्म ज्योति का प्रतीक है जो हमें भीतर के बुरे विचारों, बुरे आचरण और बुरे कर्मों को मिटाकर पवित्र बनने का संकेत देता है। इसे समझना है हमें। यदि जीवन का एक भी पहलू अंधकारमय होगा तो जीवन कभी भी पूर्णता अभिव्यक्त नहीं कर सकेगा। दीयों की श्रृंखला का संदेश देती है कि यदि हमारे भीतर सेवा का भाव है तो उससे संतुष्टि न हो, बल्कि उस भाव को ओर अधिक विस्तार दें। अपने अस्तित्व के सभी पहलुओं को प्रकाशित करने का प्रयास करें।

जलाना मतलब दिल के अंदर सदवृत्ति और सदाचार को बसा लेना। इस तरह यह जागरूकता और भीतर के जश्न का उत्सव है। अच्छे स्वास्थ्य, सम्पत्ति और समृद्धि की साझा मनोकामना को फलीभूत करने का दिवस है यह प्रकाश का पर्व।

आत्मविश्वास असली पूंजी

जीवन में कई अवसर पटाखों के समान होते हैं, हताशा, अवसाद, क्रोध, ईर्ष्या आदि के साथ फूट पड़ने की सीमा तक पहुंचे हुए होते हैं। पटाखों को फोड़ने की क्रिया लोगों की भावनाओं को अभिव्यक्ति देने का एक मनोवैज्ञानिक अभ्यास का रूप है। विस्फोट का मतलब हुआ अपनी दबी हुई भावनाओं से मुक्त होना। हृदय से खाली हो जाना। यदि परिवार का एक भी सदस्य अंधकार में है तो कोई खुश नहीं रह सकता। सोने, चांदी की पूजा बाहरी प्रयोग मात्र है। बुद्धिमत्ता और उच्च नैतिक आचरण ही वास्तविक धन है। हमारा चरित्र, शांत स्वभाव और आत्म विश्वास असली पूंजी है। यह त्योहार सदियों से प्रत्येक व्यक्ति को शांति और सौहार्द सिखाता आ रहा है। इस शुभ अवसर पर बुराई का त्याग और अच्छाई का सत्कार करना होता है, मगर ऐसा अपने जीवन में कर पाना, असली चुनौती है। दीप जलाना मतलब दिल के अंदर सद्वृति और सदाचार को बसा लेना। इस तरह यह जागरूकता और भीतर के जश्न का उत्सव है। अच्छे स्वास्थ्य, सम्पत्ति और समृद्धि की साझा मनोकामना को फलीभूत करने का दिवस है यह प्रकाश का पर्व। मनुष्य के साथ समाज और अपने राष्ट्र के अंधकार को समाप्त करके भातृत्व, प्रेम और आनंद का संदेश देता है यह पर्व। अपने घर और आसपास की स्वच्छता के साथ अपने मन की सफाई भी करनी है। मन से आशीर्वाद, बुद्धि और धन धान्य प्राप्त करने की अभिलाषा के साथ ही उसका जनकल्याण में उपयोग करना ही सच्ची पूजा है। घर की सजावट और रंगोली यह प्रेरणा देती है कि हम अपने आचरण से इसी तरह आनंदमय बनें। अपने आप को लोक कल्याण की भावना से सजाएं।

दीपकों की कतार ज्ञान का प्रकाश

कतारबद्ध दीपकों से सहयोग का सबक सीखकर उसकी पृष्ठभूमि में छिपे हुए दर्शन को व्यावहारिक रूप में ढालने और संसार को उससे आलोकित करने की शपथ लें। जिससे जीवन अच्छे लक्ष्य के लिए समर्पित कर सकें। सामान्यतया काम, क्रोध, लाभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या आदि अवगुण अपनी सीमाओं को पार करके अन्धकार का आवरण धारण करके हमारे हृदय पर छा जाते हैं आत्मा के प्रकाश को इस तरह से रोक देते हैं जैसे कि सूर्य की रोशनी को बादल रोक लेता है। इससे मुक्ति पाने का उपाय ही है–लौ। हमें लौ के उजाले को अपने आत्मा के उजाले से इस तरह से जोड़कर रखना होगा ताकि प्रकाश का पुंज और तीव्र होकर भ्रम के कोहरे को पार कर हमारे भीतर को प्रदीप्त कर सके।

जरूरतमंद की सेवा ही पूजा

अपने हृदय में द्वेष, ईर्ष्या, अहंकार और मोह को त्यागकर बेसहारों का सहारा बनें। किसी जरूरतमंद की सेवा ही असली पूजा है। हमारे शास्त्रों में भी कहा गया है कि – नर सेवा ही नारायण सेवा है। यथा आपके भीतर ऐसा प्रकाश छुपा है जिसे बाहर लाकर आप गुमनाम जीवन जी रहे लोगों के जीवन को रोशन कर सकते हैं।।

अयोध्या में जगमग होंगे 14.50 लाख दीप

अयोध्या *में दीपोत्सव का नया विश्व रेकॉर्ड बनेगा। रामनगरी में तैयारियां शुरू हो गई हैं। इस बार सरयू तट को 14.50 लाख दीपों से रोशन करने का लक्ष्य है। 2021 में 12 लाख दीयों से रामनगरी को जगमग कर विश्व रेकॉर्ड बनाया गया था।*

दीपोत्सव की यात्रा

वर्ष	दीप
2017	51,000
2018	3,01,152
2019	4,04,226
2020	6,06,569
2021	12,00,000

5 साल पहले हुई शुरूआत

यूपी के सीएम योगी आदित्यनाथ की पहल पर दीपोत्सव की शुरूआत 2017 में की गई थी। हर साल दीप जलाने का रेकॉर्ड बनाया जा रहा है।

यमुना-यम का स्नेह पर्व भैया दूज

पांच *दिन के दीपावली त्योहार में भाई दूज या यम द्वितीया भी प्रमुख पर्व है। कार्तिक कृष्णपक्ष की त्रयोदशी यानी धनतेरस से ही यम की शक्ति का पृथ्वीमंडल में आविर्भाव होने लगता है। यह शक्ति यम द्वितीया को चरम पर होती है। पौराणिक कथाओं के अनुसार भी यम-द्वितीया के दिन स्वयं यमराज पृथ्वी पर सूर्यपुत्री अपनी बहन यमी (यमुना) से मिलने आते हैं। यम को काल व धर्मराज भी कहा जाता है और वे मृत्यु व न्याय के देवता हैं। मृत्यु के बाद मनुष्यों को उनके कर्मों के अनुसार फल देने का दायित्व भी इन्हीं का है, इसलिए पृथ्वीमंडल में इनकी प्रत्यक्ष उपस्थिति के समय साधकों को अपने मानसिक, वाचिक व शारीरिक कर्मों के प्रति विशेष सावधान रहना चाहिए। यम ऊर्जाओं के वातावरण में व्याप्त होने के कारण इस समय किये गए अच्छे-बुरे कर्मों का फल कई गुना व त्वरित गति से प्राप्त होता है। योग-साधकों द्वारा यमुना-स्नान का अर्थ अपने को यम-नियम में अच्छी तरह स्थित करके भी लिया जाता है। दूसरी ओर साधारण मनुष्यों के मन में भी कामादि विकार उत्पन्न न हों और वे अच्छे कर्मों में प्रवृत्त हों, इसलिए उन्हें इस दिन अपनी बहन के घर जाने और वहां भोजन करने का विधान बनाया गया है। यम द्वितीया के दिन भाई दूज का त्योहार इसी आध्यात्मिक उद्देश्य की पूर्ति व जन-कल्याण हेतु सामाजिक प्रावधान है। इसी दिन भाइयों के यमुना स्नान का भी विधान है। यमुना भगवान श्रीकृष्ण की आठ प्रमुख रानियों में से एक हैं और श्रीकृष्ण से उनके इस सामीप्य से यमुना को मनुष्यों को कर्म-बंधन से मुक्त करने की शक्ति प्राप्त है। वास्तव में यमुना व कृष्ण अलग नहीं हैं, एक ही हैं। भाई दूज के दिन जब साधक पुरुष (भाई) का पूजन एक पूज्या स्त्री (बहन) द्वारा किया जाता है तो दोनों के मन में पवित्रता का संचार होता है। इस पवित्र प्रेम का प्रभाव उनके व पूरे समाज के मन पर पड़ता है। इस दिन समाज के दोनों वर्ग पवित्रता की आध्यात्मिक यमुना में सराबोर होकर पवित्र कर्मों में प्रवृत्त होते रहें, यही इस त्योहार का वास्तविक उद्देश्य है।*

- आचार्य अज्ञात दर्शन

रंगोली से प्रसन्न होते हैं 'शिव'

दिवाली *पर अनेक घरों में रंगोली देख कर मन प्रसन्न होता है। यह त्योहार, व्रत, पूजा, उत्सव, विवाह आदि शुभ अवसरों पर सूखे और प्राकृतिक रंगों से बनाई जाती है। इसमें साधारण चित्र और आकृतियां हो सकती हैं या फिर देवी-देवताओं की आकृतियां । रंगोली में बने स्वस्तिक, कमल का फूल, लक्ष्मी जी के पदचिह्न देख कर मन प्रफुल्लित होता है। ये चिह्न समृद्धि और मंगलकामना का भी संकेत करते हैं। इसीलिए घरों, देवालयों में हर दिन रंगोली बनाई जाती है। घर की महिलाएं बड़े प्रेम के साथ इस भावना से रंगोली बनाती हैं कि यह भी ईश्वर की पूजा का ही हिस्सा है। रंगोली में रासायनिक रंगों का प्रयोग ठीक नहीं है। रंगोली शब्द संस्कृत के शब्द 'रंगावली' से लिया गया है। इसे 'अल्पना' भी कहा जाता है। भारत में इसे सिर्फ त्योहारों पर ही नहीं, बल्कि शुभ अवसरों, पूजा आदि पर भी बनाया जाता है। इससे जहां आने वाले अतिथियों का स्वागत होता है, वहीं भगवान के प्रसन्न होने की कल्पना भी की जाती है। रंगोली कब अस्तित्व में आई? इसके बारे में प्रायः एक प्राचीन कथा सुनने को मिलती है। एक बार भगवान शंकर हिमालय दर्शन के लिए चल पड़े। प्रस्थान के समय पार्वती जी से कहा- जब मैं वापस लौटूं तो मुझे घर और आंगन मन को प्रसन्न करने वाला मिलना चाहिए। अगर ऐसा ना हुआ तो मैं दुबारा हिमालय लौट जाऊंगा। यह सुन कर माता पार्वती चौंकी। उधर शंकर जी हिमालय की ओर चले गए। पार्वती जी ने घर में साफ-सफाई की और उसे स्वच्छ-सुंदर बनाने के लिए पूरा आंगन गोबर से लीपा भी। घर अभी पूरी तरह से सूखा भी नहीं था कि शंकर भगवान के आने की सूचना उनके पास पहुंची। पार्वती जी फूल हाथ में लिए उनके स्वागत के लिए जल्दी-जल्दी चलने के कारण वहीं फिसल गईं और उनके महावर लगे पैरों की सुंदर आकृति की छाप वहां बन गई। लाल रंग के महावर पर गिरे फूलों ने वहां का दृश्य अद्भुत बना दिया। तभी भगवान शंकर वहां आ पहुंचे और उसे देख कर मंत्रमुग्ध हो उठे। बड़ी प्रसन्नता से उन्होंने कहा कि जिन-जिन घरों में रंगोली से सुंदरता उत्पन्न होगी, वहां-वहां मेरा वास रहेगा और हर प्रकार की समृद्धि वहां हमेशा विराजमान रहेगी।*

- पं. भानुप्रताप नारायण मिश्र

तारा संस्थानः तीसरा वृद्धाश्रम

उदयपुर। तारा संस्थान की ओर से हिरण मगरी सेक्टर-14 में गत दिनों वृद्धजनों के आवास के लिए 'मां द्रौपदी देवी आनंद वृद्धाश्रम' का उद्घाटन किया गया। पांच मंजिला भवन में 150 वृद्धों की रहने की व्यवस्था रहेगी।

इस मौके पर नारायण सेवा संस्थान के संस्थापक डॉ. कैलाश मानव ने कहा कि तारा संस्थान का नवीन वृद्धाश्रम मानव सेवा में मील का पत्थर है। तारा संस्थान अध्यक्ष कल्पना गोयल ने बताया कि संस्थान का यह तीसरा वृद्धाश्रम है। इसमें ऊर्जा संरक्षण के लिए 36 किलो वाट का सोलर प्लांट लगाया गया है। भवन में 30 कमरे और 6 बड़े हॉल हैं। इसके साथ इसमें मॉडर्न किचन, बड़ा डायनिंग हॉल, हर फ्लोर पर लॉबी एरिया सहित कई सुविधाएं हैं। संस्थान के इससे पहले के जो दो आश्रम हैं उनमें 104-104 लोगों के रहने की व्यवस्था है। संस्थान के मुख्य कार्यकारी दीपेश मित्तल ने बताया कि वृद्धाश्रम सभी सुविधाओं से लेस व पूर्णत: निःशुल्क है। कार्यक्रम में भामाशाहों को सम्मानित किया गया। संचालन निदेशक विजय सिंह चौहान व अलका जैन ने किया।

प्रो. सारंगदेवोत अध्यक्ष मनोनीत

उदयपुर। जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ डीम्ड टू बी विवि के कुलपति प्रो. एसएस सारंगदेवोत को राष्ट्रीय श्रमिक शिक्षा एवं विकास बोर्ड की क्षेत्रीय सलाहकार समिति का अध्यक्ष मनोनीत किया गया है। अध्यक्ष बनने पर कुलपति सचिवालय में विद्यापीठ की तीनों यूनिटों के कार्यकर्ताओं ने प्रो. सारंगदेवोत का स्वागत किया। वे इस पद पर दो साल रहेंगे। जिसके अन्तर्गत उदयपुर, डुंगरपुर, बांसवाड़ा, प्रतापगढ़, राजसमंद, चित्तौड़, भीलवाड़ा, जोधपुर, पाली, नागौर, सिरोही, जालौर, बाड़मेर व जैसलमेर का कार्य क्षेत्र रहेगा।

गजल संग्रह 'कशिश' का विमोचन

उदयपुर। अंजुमन तरक्की उर्दू और गजल एकेडमी, के संयुक्त तत्वावधान में पूर्व केंद्रीय मंत्री डॉ गिरिजा व्यास द्वारा रचित गजल संग्रह 'कशिश' का विमोचन डिवीजल कमिश्नर राजेंद्र भट्ट द्वारा कुम्भा भवन में किया गया। कार्यक्रम में डॉ. देवेंद्र हिरण, डॉ. सरवत खान, डॉ. प्रेम भंडारी, शहर कांग्रेस अध्यक्ष गोपाल कृष्ण शर्मा, पूर्व विधायक त्रिलोक पूर्बिया, डॉ. मधुसूदन शर्मा, पंकज कुमार शर्मा, इकबाल सागर, सुरेश पंड्या, कपिल टोडावत, डॉ. विजय लक्ष्मी चौहान आदि उपस्थित थे। उल्लेखनीय है कि इससे पूर्व डॉ. गिरिजा की 4 पुस्तकें दर्शन शास्त्र पर, दो गज़ल संग्रह तथा एक अंग्रेजी कविता संग्रह भी प्रकाशित हो चुकें हैं। अखिल भारतीय कांग्रेस के मुख पत्र ' संदेश ' की प्रमुख संपादिका डॉ. व्यास के विभिन्न विषयों पर देशी-विदेशी, पत्र- पत्रिकाओं में आलेख भी प्रकाशित हुये हैं। इस अवसर पर डॉ. व्यास ने कहा कि ख्यालों की दुनियों में जब हम जीते हैं तो कितने ही अच्छे-बुरे ख्याल दिलों-दिमाग में आते-जाते रहते हैं। इन्हीं ख्यालों को कागज पर एक अलग तरीके से व्यक्त करना ही 'शायरी' है। उन्होंने उन सभी लोगों का धन्यवाद ज्ञापित किया जिन्होंने उनकी की रचना यात्रा में सहयोग किया।

नोबल्स प्राइमरी विंग का उद्घाटन

उदयपुर। भूपाल नोबल्स संस्थान ने शताब्दी वर्ष में भूपाल नोबल्स पब्लिक स्कूल की जूनियर विंग के नवीन भवन का उद्घाटन गत दिनों किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथि विद्या प्रचारिणी सभा के सचिव डॉ. महेंद्र सिंह आगरिया, प्रबंध निदेशक मोहब्बत सिंह रूपाखेड़ी, गजेंद्र सिंह बांसी की उपस्थिति

में विद्यालय के चेयरमैन हनुमंत सिंह बोहेड़ा ने रिबन काट कर किया। इस अवसर पर नन्हें-मुन्नों द्वारा विभिन्न रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। संचालन मीनाक्षी राठौड़, संस्कृति नरूका, ऋतु देवड़ा ने किया। संयोजिका संगीता शर्मा थी।

होण्डा एक्टिवा का प्रीमीयम मॉडल लॉन्च

उदयपुर। होण्डा मोटर साइकिल एवं स्कूटर इण्डिया प्रा.लि. की ओर से अधिकृत विक्रेता लेकसिटी होण्डा शोरूम पर गत दिनों एक्टिवा के प्रीमियम मॉडल को निदेशक वरूण मुर्डिया ने लॉन्च कर बिक्री के लिए उतारा। मुर्डिया ने बताया कि यह प्रीमियम मॉडल रेड मेटालिक, पर्ल शाइन ब्लू,मेट मार्शल ग्रीन मेटेलिक व गोल्डन रंग के 3 डी लोगो, सेंडल ब्राउन सीट कवर,गोल्डन फ्रंट ग्रनिश व अन्य खूबियों के साथ उपलब्ध है। लॉन्चिग अवसर पर 4 ग्राहकों को प्रीमियम मॉडल की चाबियां प्रदान की गई।

चिरंजीव सिंह अध्यक्ष, अमरपालसिंह सचिव

उदयपुर। गुरू नानक पब्लिक स्कूल सभा उदयपुर की कार्यकारिणी के चुनाव में अध्यक्ष चिरंजीवसिंह ग्रेवाल, सचिव अमरपाल सिंह पाहवा को बनाया गया। उपाध्यक्ष अजीतसिंह पाहवा और सह सचिव पद पर नरेंद्रसिंह पाहवा का निर्वाचन किया। समिति के चुनाव सीएम कच्छावा के सानिध्य में हुए।

प्रो. त्रिवेदी प्रधान, डॉ. जैन अध्यक्ष

उदयपुर। राजस्थान राज्य भारत स्काउट व गाइड स्थानीय संघ परिषद के चुनाव में सर्वसम्मति से सुविवि के कुलपति प्रो. आईवी त्रिवेदी को प्रधान निर्विरोध निर्वाचित किया गया। कार्यकारिणी में अध्यक्ष डॉ लोकेश जैन, सचिव सैम्युल फ्रांसिस, उपप्रधान (पुरूष) जगदीश अरोड़ा, हेमंत श्रीमाली, अनिल शर्मा सीपीएस, मुकेश चौधरी, उपप्रधान (महिला) राजकुमारी मीणा, पूनम राठौड़, प्रभारी सहायक जिला कमिश्नर स्काउट ललित दक, सहायक जिला कमिश्नर संजय दत्ता, खेलशंकर व्यास, सुरेंद्र रावल, चेतन पानेरी, कला करणपुरिया, आरती शर्मा, विवि प्रतिनिधि धर्मपाल डूडी एमपीयूटी, संयुक्त सचिव किरण पोखरना को बनाया गया।

शर्मा प्रदेश उपाध्यक्ष मनोनीत

कोटा। विप्र फाउंडेशन में सुरेन्द्र शर्मा प्रदेश उपाध्यक्ष मनोनीत किए गए हैं। उनकी नियुक्ति पर कोटा में पदाधिकारियों ने माल्यार्पण कर उनका अभिनंदन किया। इस अवसर पर समाज के पदाधिकारी विकास शर्मा, अजय चतुर्वेदी दीपक शर्मा, बृज सुंदर शर्मा समेत अन्य लोग मौजूद रहे।

डीटीओ डॉ. कल्पना का बडोला कार्स ने किया सम्मान

उदयपुर। हुंडई डीलर बडोला कार्स की महिला टीम ने पिछले 4 वर्ष से जिला परिवहन विभाग में अद्वितीय सेवा देने पर राज्य स्तर पर सम्मानित राज्य की पहली महिला जिला परिवहन अधिकारी डॉ. कल्पना शर्मा का उपरणा व पगड़ी पहनाकर स्वागत-सम्मान किया। अनामिका तलेसरा ने उनके योगदान की जानकारी दी।

दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं

52 साल के राजसिंह ने पास की 10वीं की परीक्षा

पिता, पुत्र और पुत्री ने एक साथ अर्जित की यह सफलता

डॉ. कमलेश शर्मा

इंसान ठान ले और कुछ कर गुजरने का जुनून हो तो कोई भी लक्ष्य प्राप्त कर सकता है। पढ़ने और सीखने की कोई उम्र नहीं होती, बस जज्बा ही काफी है। इसी बात को चरितार्थ कर दिखाया है, जिले के मारूवास वाण की भागल गाँव निवासी 52 वर्षीय राज सिंह सदाणा ने दसवीं की परीक्षा उत्तीर्ण करके। संयोग की बात यह है कि उनके पुत्र किशन सिंह ने नियमित अध्ययन कर करते हुए तथा पुत्री ममता कंवर व पिता राज सिंह ने 10वीं ओपन के माध्यम से दसवीं परीक्षा उत्तीर्ण कर एक अनूठा उदाहरण प्रस्तुत किया है।

इस वर्ष अपने बेटे और बेटी के साथ लक्ष्य प्राप्ति करने वाले राजसिंह उदयपुर सूचना केंद्र में लाइब्रेरी बियरर के पद पर 1991 से कार्यरत हैं। पारिवारिक ज़िम्मेदारी के चलते आज से 35 वर्ष पहले राज सिंह की पढाई छूट गई थी। वक्त का पहिया घूमाता रहा और राजसिंह 52 साल के हो गए। विभागीय अधिकारियों के मार्गदर्शन से उन्होंने 10वीं की परीक्षा का फॉर्म भरा और परीक्षा पास की। राज सिंह अब उच्च माध्यमिक और फिर स्नातक परीक्षा में प्रवेश के लिए भी उत्साहित हैं। ईश्वर उनके जुनून को देखते हुए उनकी यह मंशा भी पूरी करेंगे।

ऐसे मिला प्रेरणा

राज सिंह बताते हैं कि प्रतिदिन सूचना केन्द्र वाचनालय में 150–200 स्टूडेंट्स विभिन्न परीक्षाओं की तैयारी करने पहुँचते हैं। इस बीच वे अनुशासन बनाए रखने एवं अन्य कार्यालयीय व्यवस्थाएं संभालते हैं। जब उन्होंने प्रतिदिन इन स्टूडेंट्स को ललक के साथ यहाँ पढ़ते देखा, तो उनके मन में भी विचार आया कि क्यों न अपनी भी पढाई आगे बढाई जाए। ऐसे में वे कभी वाचनालय में स्टूडेंट्स के साथ, तो कभी अपने बेटा–बेटी के साथ पढने बैठने लगे। देखते ही देखते साल बीत गया और उन्होंने राजस्थान स्टेट ओपन स्कूल से माध्यमिक शिक्षा की परीक्षा पास की। राज सिंह बताते हैं कि जीवन में लेट ही सही, आखिरकार दसवीं पास करने का सपना पूरा हुआ।

मन्नत हुई पूरी, पदयात्रा की

राजसिंह ने अपनी मेहनत और लगन के साथ भाग्य को भी आजमाया। उन्होंने मन्नत मांगी थी कि यदि वे उम्र के इस पड़ाव में दसवीं की परीक्षा उत्तीर्ण कर लेते हैं तो वे जिला मुख्यालय उदयपुर से 50 किमी दूर मारूवास–कठार स्थित इष्टदेव आणना बावजी के मंदिर तक पदयात्रा कर उनका आशीर्वाद प्राप्त करेंगे। मन्नत पूर्ण होते ही उन्होंने पद यात्रा के संकल्प को पूरा करते हुए अपने इष्टदेव के श्रीचरणों में धोक दिया।

राजस्थान में अकादमियों का गठन

बाल साहित्य की नई अकादमी

प्रत्यूष/जयपुर ब्यूरो

राजस्थान सरकार ने 22 अगस्त देर रात आदेश जारी कर राजस्थान की विभिन्न अकादमियों का गठन कर दिया। अभी अध्यक्षों ने कार्यभार संभाला है। उनकी कार्यप्रणाली अथवा व्यक्तित्व कृतित्व पर कोई टिप्पणी जल्दबाजी होगी।

जवाहर लाल नेहरू बाल साहित्य अकादमी: अध्यक्ष- इकराम राजस्थानी (जयपुर), सदस्य- बुलाकी शर्मा (बीकानेर), सत्यदेव सवितेन्द्र (जोधपुर), गोविन्द शर्मा (संगरिया), अब्दुल समद (सोजत), अंजीन अंजुम (उदयपुर), डॉ. ओमप्रकाश भाटिया (जैसलमेर), भगवती प्रसाद गौतम (कोटा), विमला भंडारी (उदयपुर)।

राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी: अध्यक्ष- शिवराज छंगाणी (बीकानेर), सदस्य- राजेन्द्र जोशी (बीकानेर), डॉ. भरत ओला (हनुमानगढ़), घनश्याम नाथ कच्छावा (चूरू), मीनाक्षी बोराणा (जोधपुर), सुखदेव राव (नागौर), आईदान सिंह भाटी (जोधपुर), दिनेश पांचाल (बांसवाड़ा), अम्बिका दत्त (कोटा), वीना जोशी (जयपुर), डॉ. शारदा कृष्ण (जयपुर)

राजस्थान संस्कृत अकादमी : अध्यक्ष- डॉ. सरोज कोचर (जयपुर), सदस्य- रामप्रसाद जी महाराज (जोधपुर), डॉ. सीएम कोली (भरतपुर), डॉ. राजेश्वरी भट्ट (जयपुर), राजकुमार (जयपुर), अवधेश कुमार शर्मा, प्रो. गणेशी लाल सुथार (जोधपुर), प्रो. मंगलाराम विश्नोई (जोधपुर)।

राजस्थान ब्रज भाषा अकादमी: अध्यक्ष- डॉ. रामकृष्ण शर्मा (भरतपुर), सदस्य- गोपाल लाल गुप्ता (भरतपुर), ब्रह्मानंद दाढ़ीवाला (भरतपुर), आरडी शर्मा, रमेश वर्मा (सवाई माधोपुर), बृजभूषण गोस्वामी (बीकानेर), डॉ. सीताराम लहरी (भरतपुर), श्याम प्रकाश देवपुरा (नाथद्वारा), डॉ. सीता शर्मा (जयपुर), रामबाबू शर्मा (भरतपुर), वित्त समिति के सदस्य- डॉ. अशोक गुप्ता (भरतपुर)।

राजस्थान संगीत नाटक अकादमी: अध्यक्ष- बिनाका मालू (जोधपुर), सदस्य- अनिता ओरडिया (जयपुर), गगन मिश्रा (जयपुर), रमेश भाटी (जोधपुर), कांति भाई (अलवर), अभिषेक ढेनवाल (बीकानेर), राज्य के प्रसिद्ध कलाकार- योबी जार्ज नाट्यकर्मी (अजमेर), अनवर / खां मांगणियार (बाड़मेर), कार्यकारिणी मंडल सदस्य- प्रेम भंडारी (उदयपुर). शब्बीर हुसैन (जोधपुर), वित्त समिति के सदस्य विपिन पुरोहित (बीकानेर)।

राजस्थान उर्दू अकादमी :अध्यक्ष- डॉ. हुसैन रजा खान (जयपुर), सदस्य- हबीब कैफी (जोधपुर), डॉ. पुरुषोत्तम (करौली), इरशाद अजीज (बीकानेर), डॉ. हुस्न आरा (कोटा), गुलाम जीलानी नज्मी (सीकर), डॉ. निसार राही (जोधपुर), बृजेश अम्बर (जोधपुर), मुफ्ती खालिद अय्यूब मिस्बाही (जयपुर), असद अली (बीकानेर), शाहिस्ता महजबी (जयपुर), शाहीद अजीज (उदयपुर), डा. जाहिदा शबनम (जयपुर), डॉ. सर्वतुन्निसा खान (उदयपुर), लोकेश कुमार सिंह (जयपुर), रजिया बानो (करौली) ।

राजस्थान ललितकला अकादमी: अध्यक्ष- लक्ष्मण व्यास (जयपुर), सदस्य- मदन मीणा (कोटा), शाहीद परवेज (उदयपुर), मनोज टेलर (वनस्थली, निवाई), मूलाराम गहलोत (जोधपुर), अजय सक्सेना (जयपुर) वित्त समिति सदस्य- चन्द्रशेखर सेन (जयपुर)।

प्रत्यूष
प्रत्यूष पत्रिका में विज्ञापन देने के लिए सम्पर्क करें
75979 11992, 94140 77697

Happy Diwali

Universal
Power Industries

Engineers & Manufacturer :

✦ Monoblock Pump ✦ Power Fector Correction ✦ AMF Panel ✦ Synchronizing of DG ✦ Switch Gear LT/HT ✦ Power Control Panel ✦ Motor Control Panel ✦ Stone Process Machine Panel ✦ Automation Panel ✦ Automatic Power Fector Panel

1, SPL. Com, Industrial Estate, Pratap Nagar, Udaipur-313 001
Ph. : 0294-2490230 (W) 2490373 (R)

Telemecanique
Square D
Merlin Gerin

Authorised Service Contractors
Schneider Electric India Pvt. Ltd.

मानवीय मूल्यों के पतन से ही समस्याओं की उपज

डॉ. दीपक आचार्य

बीमारियों का मूल कारण बैक्टीरिया, कीटाणुओं का संक्रमण और अंग-उपांगों की किसी भी प्रकार की खामी होने से कहीं अधिक है मन और मस्तिष्क की हलचलें। अधिकांश लोग साध्य-असाध्य बीमारियों के त्रस्त रहते हैं या शारीरिक अस्वस्थता के कारण परेशानी का अनुभव करते रहते हैं।

इनमें से कुछ अपवादों को छोड़ दिया जाए तो अधिकांश मामलों में बीमारियों का मूल कारण हमारे दिल और दिमाग से सीधे तौर पर जुड़ा हुआ है। असंयम, जीवनचर्याहीन कर्म और मर्यादाहीनता के साथ ही इंसान के दिल और दिमाग में उमड़ते-घुमड़ते और आकार पाने को उतावले रहने वाले विचार इंसान को उद्विगन बनाते रहे हैं।

हम अपनी बीमारियों की तह में जाकर गंभीरता और ईमानदारी से सोचे तो साफ-साफ सामने आएगा कि जिन लोगों के जीवन में काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मात्सर्य आदि षट्विकारों के साथ आधुनिक विकिरणदायी उपकरणों का अति प्रयोग होता है वे ही बीमार अवस्था से शुरू होकर असाध्य रोगियों की अवस्था को प्राप्त हो जाते हैं।

कुछ लोग पूर्वजन्मार्जिता पापों और किसी न किसी प्रारब्ध को भोगने के लिए जन्म लेते हैं और इनका क्षय हो जाने पर वापस चले जाते हैं। बीमारियों से मुक्ति पाने के लिए औषधियों और परहेज के साथ ही यदि हम इन बीमारियों की जड़ों को समाप्त करने की कोशिश करें तो रोगों से जल्दी छुटकारा पाया जा सकता है।

चित्त जितना अधिक स्थिर, शांत और मस्त होता है उतनी इंसानी शक्तियां अधिक जागृत और नियमित रहती हैं तथा अपने-अपने काम आसानी से करती रहती हैं। लेकिन जैसे ही शरीर और मन-मस्तिष्क अपनी मर्यादा रेखाओं और मानवीय परिधियों को लांघ कर अनुचित एवं अव्यावहारिक करने की कोशिश करने लगते हैं तब इसे स्पष्ट रूप से मर्यादा या अनुशासन के उल्लंघन की श्रेणी में माना जाता हैं और यह पूर्ण रूप से संस्कारहीनता और उच्छृंखलता है। उस अवस्था में अंग-उपांग और नाड़ी तंत्र इसका आरंभिक विरोध करते हुए शरीर-मन और मस्तिष्क को संतुलित बनाए रखने का प्रयत्न करते हैं लेकिन जब इंसान अपनी मलीनताओं, स्वार्थ और ऐषणाओं की पूर्ति के लिए मर्यादा, संस्कार और अनुशासन को त्याग देता है तब शरीर को ज्ञानेन्द्रियां और कर्मेन्द्रियां भी बगावत करने लग जाती हैं और विवश होकर अपना अनुशासन छोड़ देती हैं। और यहीं से शुरू होता है इंसान की बीमारियों का खेल। भगवान ने जो शरीर दिया है उसका हिसाब से उपयोग किया जाए, जगत के कल्याण में लगाया जाए तभी तक यह काम का बना रहता है अन्यथा शरीर इंसान का साथ छोड़ देना शुरू कर देता है। हम इंसानों की मानसिक और शारीरिक दुर्गति का सबसे बड़ा कारण यही है कि इंसान की जिन्दगी के लिए निर्धारित की गई तमाम वर्जनाओं को अनुशासन को दरकिनार कर स्वेच्छाचारिता को अपना लेते हैं। और यह उन्मुक्तता आवारगी की हद तक इस तरह हो गई है कि हम अपने वैयक्तिक स्वार्थों को पूरा करना ही जिन्दगी का परम और चरम लक्ष्य मान बैठे हैं और इस लक्ष्य को पाने में हमें किसी भी प्रकार के रास्तों और षड़यंत्रों को अपनाने से कोई गुरेज नहीं है। मानवीय मूल्यों और नैतिक संस्कारों का यह अप्रत्याशित पतन ही आज व्यक्ति से लेकर विश्व समुदाय तक की समस्याओं और गिरावट के लिए प्रमुख रूप से जिम्मेदार है।

अनोखी है हमारी सरजमीं

धरती की आबो-हवा को सही-सलामत रखना होगा, तभी इस पर जीवन पनपेगा-खिलखिलाएगा।

स्याह रातों में कभी तारों भरा आसमान देखा है आपने? अगर हां, तो आसमान में आर-पार फैली कहकशां और बेशुमार तारों को भी जरूर देखा होगा। उन्हीं तारों में से एक तारा हमारा है। हमारा आफताब, हमारा सूर्य। इसके गिर्द जो आठ प्लेनेट घूम रहे हैं, उनमें से एक है हमारी अनोखी सरजमीं, हमारी पृथ्वी। अनोखी इस मायने में कि साइंसदानों ने आयनात में जहां तक खोजबीन की है, उससे पता लगा है कि सिर्फ हमारी सरजमीं में ही जिंदगी की शमा रोशन है। बाकी कहीं जिंदगी के निशां नहीं मिले हैं। ऐसी क्या बात है कि जिंदगी का चिराग बस यहीं रोशन हुआ? वजह यह कि हमारी सरजमीं सूरज से ठीक इतनी दूरी पर है कि न यहां बेतहाशा गरमी पड़ती है और न ही बेहद सर्दी कि जिंदगी पनप ही न सके। दूसरी वजह है- इसका एटमॉस्फियर। यानी, इसके चारों ओर 800 किलोमीटर की ऊंचाई तक फैली हवा की परत। यह हमारी सांसों का खजाना है। कुदरत ने इसमें हमारी सांसे बड़ी हिफाजत से जमा की हुई हैं। हम इसी हवा में सांस लेते हैं। इस हवा में नाइट्रोजन है, ऑक्सीजन है और कार्बन डाइ ऑक्साइड गैस भी है। ओजोन और नियॉन गैसें भी हैं। साथ ही पानी की बूंदे भी इसमें हैं। कुदरत ने इन्हें नाप-तौलकर सही मिकदार में रखा था। जिंदा रहने की बाकी जरूरतें हमारी जमीं पूरा कर देती है। यह हमें खाने की चीजें, पीने के लिए पानी देती है। और हिफाजत से रहने के लिए हम इसी पर अपना आशियाना बनाते हैं... और इस तरह हम जिंदा है।

प्रस्तुति : देवेन्द्र मेवाड़ी

दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं

कन्हैयालाल जैन
राकेश जैन (बंटी)

फोन :- 0294-2429053

राजस्थान मेडिकल स्टोर

महाराणा भूपाल राजकीय चिकित्सालय के सामने, उदयपुर

न्यायमूर्ति ललितः बार से सीधे शीर्ष अदालत तक

न्यायमूर्ति उदय उमेश ललित को भारत के 49वें प्रधान न्यायाधीश के रूप में 27 अगस्त 2022 को राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मू ने राष्ट्रपति भवन में आयोजित एक संक्षिप्त समारोह में शपथ दिलवाई। न्यायमूर्ति ललित ने न्यायमूर्ति एनवी रमना का स्थान ग्रहण किया, जो 26 अगस्त को सेवानिवृत्त हुए। न्यायमूर्ति ललित का भारत की न्यायपालिका के प्रमुख के रूप में 74 दिनों का संक्षिप्त कार्यकाल होगा। वे 8 नवम्बर को सेवानिवृत्त हो जाएंगे। न्यायमूर्ति ललित स्वतंत्र भारत के इतिहास में महज दूसरे प्रधान न्यायाधीश हैं, जो सीधे बार से सर्वोच्च न्यायालय तक पहुंचे। उनसे पहले न्यायमूर्ति एसएम सीकरी जनवरी 1971 में जब देश के 13वें प्रधान न्यायाधीश बने थे तो वह वकालत से सीधे उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश नियुक्त होने वाले पहले न्यायाधीश थे। गर्वनमेंट लॉ कॉलेज, मुंबई से कानून की पढ़ाई करने वाले न्यायमूर्ति यूयू ललित का परिवार पिछली एक सदी से कानून और न्यायपालिका से जुड़ा है। उनका जन्म महाराष्ट्र के शोलापुर में यूआर ललित के यहां नौ नवम्बर 1957 को हुआ। उनके पिता बंबई उच्च न्यायालय की नागपुर पीठ के अतिरिक्त न्यायाधीश रहे हैं और सर्वोच्च न्यायालय में वरिष्ठ वकील के तौर पर वकालात भी करते रहे हैं। उनके दादा रंगनाथ ललित भी वकालत के पेशे से जुड़े थे।

न्यायमूर्ति यूयू ललित के वकालत के शुरुआती दिनों की बात करें तो पढ़ाई पूरी करने के बाद जून 1983 में वह महाराष्ट्र और गोवा बार काउंसिल में पंजीकृत हुए और एडवोकेट एमए राणे के साथ वकालत शुरू की। वर्ष 1985 में वह दिल्ली चले आए और सीनियर एडवोकेट प्रवीन के पारेख के साथ जुड़ गए। वर्ष 1986 से 1992 के बीच उन्होंने भारत के पूर्व अटार्नी जनरल सोली सोराबजी के साथ काम किया। तीन मई 1992 को उन्होंने उच्चतम न्यायालय के एडवोकेट ऑन रिकॉर्ड के रूप में पंजीकरण हासिल किया और 29 अप्रेल 2004 को उन्हें उच्चतम न्यायालय के सीनियर एडवोकेट का दर्जा दिया गया। वर्ष 2011 में उच्चतम न्यायालय के न्यायमूर्ति जीएस सिंघवी और न्यायमूर्ति अशोक कुमार गांगुली की पीठ ने उन्हें 2 जी स्पेक्ट्रम मामलों में केन्द्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) का विशेष लोक अभियोजक नियुक्त किया। उनकी नियुक्ति के समय कहा गया था कि उनकी पेशेवर समझ, कानूनी सवालों को धैर्य के साथ स्पष्ट करने का गुण और मामले को बड़े सरल अंदाज, में लेकिन पूरी दृढ़ता के साथ पेश करने का उनका हुनर उन्हें इस पद के लिए योग्य बनाता है। जुलाई 2014 में उच्चतम न्यायालय के कोलेजियम ने न्यायमूर्ति यूयू ललित को उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश के तौर पर पदोन्नत करने की सिफारिश की और उन्हें 13 अगस्त 2013 को न्यायाधीश नियुक्त किया गया। वकालत से सीधे उच्चतम न्यायालय में न्यायाधीश के पद तक पहुंचने वाले वह मात्र छठे वकील हैं। न्यायाधीश के तौर पर उन्होंने ऐसे फैसले सुनाए जो उनकी कानूनी बारीकियों की समझ के साथ ही सामाजिक दायित्वों के निर्वाह की मिसाल बन गए।

-गौरव शर्मा

अध्ययन

पहली बार दवा से कैंसर के इलाज में 100 प्रतिशत सफलता

कैंसर जैसी जानलेवा और लाइलाज बीमारी में पहली बार दवाइयों से 100 फीसदी सफलता मिलने के संकेत मिले हैं। न्यूयॉर्क टाइम्स में पिछले दिनों प्रकाशित एक रिपोर्ट के अनुसार 18 मरीजों के एक छोटे समूह पर किए अध्ययन में कमाल की कामयाबी मिली है। इससे वैज्ञानिकों में इस लाइलाज बीमारी के इलाज में बड़ी सफलता मिलने की उम्मीद जगी है। अध्ययन का आकार भले ही अपेक्षाकृत छोटा हो पर इसके नतीजे को गेम चेंजर माना जा रहा है। अब आगे इसका बड़े पैमाने पर व्यापक अध्ययन किया जाएगा। उम्मीद है कि इससे कैंसर का पूरी तरह इलाज करने में निश्चित ही सफलता मिलेगी। रिपोर्ट के अनुसार परीक्षण समूह में सभी को एक जैसी दवा दी गई। छह महीने में इसके चौंकाने वाले नतीजे सामने आए। स्टडी की को-ऑथर डॉक्टर एंड्रिया सर्सेक मेमोरियल स्लोन केटरिंग कैंसर सेंटर में ऑन्कोलॉजिस्ट है। उन्होंने कहा कि यह अविश्वसनीय सफलता है। इस स्टडी में शामिल रोगियों के खुशी भरे ई-मेल प्राप्त हुए हैं। वे कैंसर से पूरी तरह मुक्त हो चुके हैं।अध्ययन में शामिल सभी रोगियों की बड़ी आंत में कैंसर (रेक्टर कैंसर) का पता चला था। उन्हें कीमोथैरेपी, रेडिएशन और लाइफ अल्टरिंग सर्जरी की गई थी। इसके बावजूद सभी ऐसा सोचने लगे थे कि कुछ ठीक नहीं होने वाला है।

-शिल्पा नागदा

दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं

।। श्री कृष्णा ।। ।। श्री गणेशाय नमः ।। ।। ॐ हनुमन्ते नमः ।।

बीकानेर मावा भण्डार

BMB

घीदार मावा एवं मीठा मावा के विक्रेता

शादी पार्टी में मावा के आर्डर बुक किए जाते हैं।

4, मेहतों का पाड़ा, धानमण्डी स्कूल मार्ग, उदयपुर (राज.)

Mobile - 9468704600, 9782704600

हैड ऑफिस :- डी.एस. बीकानेर

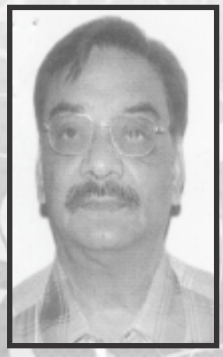

दीपावली की हार्दिक शुभकामनाओं सहित

Nalwaya Mineral Industries Pvt. Ltd.

:: Head Office ::

Plot No. C-164, Road No 3, Madri Industrial Area,
Near G.N. Dal Mill, Udaipur (Raj.)

:: Residence ::

33, Pologround, Udaipur-313 001 (Raj.) Ph. : 91-294-2560628, 2521387

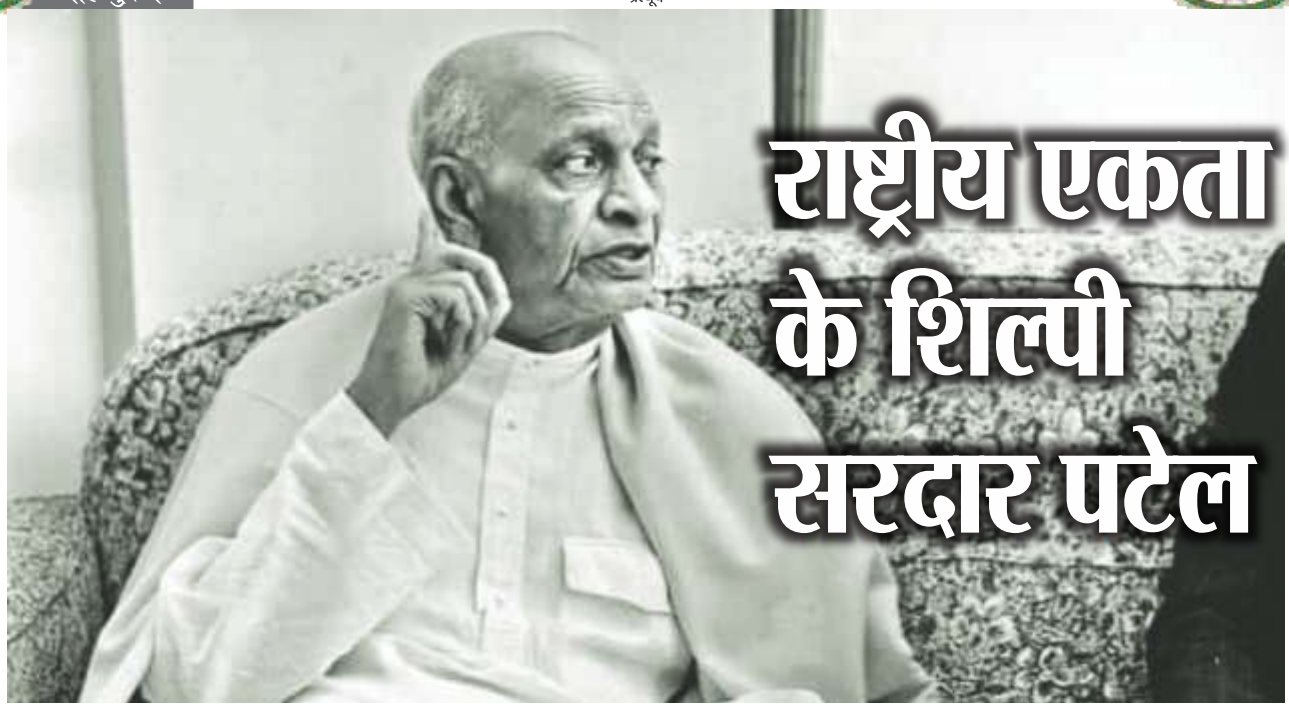

राष्ट्रीय एकता के शिल्पी सरदार पटेल

गोपाल जाट

सरदार पटेल ने देश को एकता के सूत्र में बांधा। एकता का यह मंत्र हमारे जीवन में संस्कार की तरह है और भारत जैसे विविधताओं वाले देश में हमें हर स्तर, हर डगर, हर मोड़ और हर पड़ाव पर इस मंत्र को दृढ़ता के साथ आत्मसात करना है।

स्वतंत्र भारत के प्रथम उप प्रधानमंत्री व गृहमंत्री सरदार वल्लभभाई पटेल भारतीय स्वाधीनता संग्राम के अग्रणी योद्धा व भारत सरकार के आधार स्तंभ थे। आजादी से पहले भारत की राजनीति में इनकी दृढ़ता और कार्यकुशलता ने इन्हें स्थापित किया और आजादी के बाद भारतीय राजनीति में उत्पन्न विपरीत परिस्थितियों को देश के अनुकूल बनाने की क्षमताओं ने सरदार पटेल का कद काफी बड़ा कर दिया। वल्लभभाई पटेल का जन्म गुजरात के नडियाद (ननिहाल) में 31 अक्टूबर 1875 को हुआ। उनका पैतृक निवास स्थान गुजरात के खेड़ा के आनंद तालुका में करमसद गांव था। वे पिता झवेरभाई पटेल तथा माता लाडबा देवी की चौथी संतान थे। उनका विवाह 16 साल की उम्र में झावेरबा पटेल से हुआ। उन्होंने नडियाद, बड़ौदा व अहमदाबाद से प्रारंभिक शिक्षा लेने के उपरांत इंग्लैंड मिडल टैंपल से लॉ की पढ़ाई पूरी की व 22 साल की उम्र में जिला अधिवक्ता की परीक्षा उत्तीर्ण कर बैरिस्टर बनें। सरदार पटेल ने अपना महत्वपूर्ण योगदान 1917 में खेड़ा किसान सत्याग्रह, 1923 में नागपुर झंडा सत्याग्रह, 1924 में बोरसद सत्याग्रह के उपरांत 1928 में बारदोली सत्याग्रह में देकर अपनी राष्ट्रीय पहचान कायम की। 1930 के गांधीजी के नमक सत्याग्रह और सविनय अवज्ञा आन्दोलन की तैयारी के प्रमुख शिल्पकार सरदार ही थे। इसी वारदोली सत्याग्रह में उनके सफल नेतृत्व से प्रभावित होकर महात्मा गांधी और वहां के किसानों ने वल्लभभाई पटेल को 'सरदार' की उपाधि दी। वहीं 1922, 1924 तथा 1927 में सरदार पटेल अहमदाबाद नगर निगम के अध्यक्ष चुने गये। 1930 के गांधी जी के नमक सत्याग्रह और सविनय अवज्ञा आन्दोलन रणनीतिकार भी सरदार पटेल ही थे। 1931 के कांग्रेस के कराची अधिवेशन में सरदार पटेल को अध्यक्ष चुना गया। सविनय अवज्ञा आंदोलन में सरदार पटेल को जब 1932 में गिरफ्तार किया गया तो उन्हें गांधी जी के साथ 16 माह जेल में रहने का अवसर मिला। 1939 में हरिपुरा कांग्रेस अधिवेशन में जब देशी रियासतों को भारत का अभिन्न अंग मानने का प्रस्ताव पारित किया गया तभी से सरदार पटेल ने भारत के एकीकरण की दिशा में कार्य प्रारंभ कर दिया तथा अनेक देशी रियासतों में प्रजा मण्डल और अखिल भारतीय प्रजा मण्डल की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने अंग्रेजों की सारी कुटिल चालों पर पानी फेरकर नवंबर 1947 तक 565 देशी रियासतों में से 562 देशी रियासतों का भारत में शांतिपूर्ण विलय करवा लिया। भारत की आजादी के बाद भी 18 सितंबर 1948 तक हैदराबाद अलग ही था लेकिन लौह पुरूष सरदार पटेल ने हैदराबाद के निजाम को पाठ पढ़ा दिया और भारतीय सेना ने हैदराबाद को भारत के साथ रहने का रास्ता खोल दिया। निश्चित ही भारत के 2/5 भाग क्षेत्रफल में बसी देशी रियासतों जहां तत्कालीन भारत के 42 करोड़ भारतीयों में से 10 करोड़ 80 लाख की आबादी निवास करती थी, उसे भारत का अभिन्न अंग बना देना कोई मामूली बात नहीं थी। सरदार पटेल की तुलना बिस्मार्क से भी कई आगे की जाती है क्योंकि बिस्मार्क ने जर्मनी का एकीकरण ताकत के बल पर किया और सरदार पटेल ने ये विलक्षण कारनामा दृढ़ इच्छशक्ति व साहस के बल पर कर दिखाया। उनके इस अद्वितीय योगदान के कारण 1991 में मरणोपरांत उन्हें भारत रत्न के सर्वोच्च सम्मान से अलंकृत किया गया। 2018 में केन्द्र सरकार ने गुजरात के नर्मदा नदी पर सरदार वल्लभभाई पटेल की 132 मीटर यानी 597 फीट ऊंचाई वाली गगनचुंबी मूर्ति (दुनिया की सबसे ऊंची विशालकाय मूर्ति) 'स्टैच्यू ऑफ यूनिटी' को मूर्त रूप देकर राष्ट्रीय एकता के प्रतीक पुरूष व देश का गौरव बढ़ाया। टाईम. मैगजीन ने दुनिया के 100 महत्वपूर्ण पर्यटन स्थलों में स्टैच्यू ऑफ यूनिटी को भी अहम स्थान दिया है। देश की एकता और आपसी सद्भावना को सशक्त करने के लिए हमारा समाज हमेशा से बहुत सक्रिय और सतर्क रहा है। सरदार पटेल ने मौलिक अधिकारों को सुनिश्चित करने का भी महत्वपूर्ण कार्य किया, ताकि जाति और संप्रदाय के आधार पर होने वाले किसी भी भेदभाव की गुंजाइश न बचे।

जे पी ऑर्थोपेडिक हॉस्पिटल
उदयपुर

27 वर्षों से
आपके लिए

For More Visit Us : www.jporthohospital.com

24x7 HELPLINE No: +91 7229933999

Facilities

- ICU, Modular Theater
- Digital X-Ray
- Modular Plaster Room
- C-ARM Machine
- Physiotherapy
- All Kinds Of Orthopadic Surgery
- Nailing
- Plating
- Prosthesis,
- Fixator etc.

100, Main MB College Road, Kumharon Ka Bhatta,
Udaipur-313001 Tel : 0294-2413606
E-mail : jp_taruna@yahoo.co.in

नासा ने चुन ली चांद पर पार्किंग

328
फीट के दायरे में चंद्रयान सुरक्षित उतर सकेगा

2009
में नासा ने एलआरओ को चांद पर भेजा था

2025
तक नासा इन साइटों पर अंतरिक्ष यात्री उतारेगा

डॉ. प्रीतम जोशी

अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा एक बार फिर इंसानों को चांद पर भेजने की तैयारी कर रहा है। नासा ने चांद की सतह पर रॉकेट पार्किंग की जगह भी तलाश ली है। नासा के मुताबिक, चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर 13 साइट का चयन किया गया है, जहां सुरक्षित लेंडिग कराई जा सकती है। नासा के वैज्ञानिक पहली बार चंद्रमा के अंधेरे वाले हिस्से में उतरेंगे। यह चन्द्रमा के दक्षिणी ध्रुव का वह हिस्सा है, जो पृथ्वी से दिखाई नहीं देता।

नासा के मुताबिक, उसने जिन 13 लेंडिंग क्षेत्रों को चुना है वे दक्षिणी ध्रुव के अक्षांश के छह डिग्री के भीतर मौजूद हैं। नासा ने बताया कि इन सुरक्षित स्थानों का चयन लूनर टोही आर्बिटर (एलआरओ) के डाटा के आधार पर किया गया है। नासा के वैज्ञानिकों ने बताया कि चांद के दक्षिणी ध्रुव में कुछ ऐसे क्षेत्र भी हैं, जहां स्थायी रूप से अंधेरा छाया रहता है। एजेंसी ने चन्द्रमा के दक्षिणी ध्रुव के पास जिन 13 जगहों को चिह्नित किया है, उनके नाम जारी कर दिए हैं। हर क्षेत्र में आर्टेमिस-3 की लैंडिंग के लिए कई संभावित साइट है। नासा ने बताया कि इस बार मिशन में चंद्रमा पर कदम रखने वाली पहली महिला भी चालक दल का हिस्सा होगी। एलआरओ को चांद पर 2009 में लैंडिंग कराई गई थी।

अपोलो मिशन के स्पॉट का इस्तेमाल नहीं होगा

नासा के मुख्य अन्वेषण वैज्ञानिक जैकब ब्लॉचर के अनुसार नासा अपोलो मिशन के बाद दोबारा चांद पर इंसानों को भेज रहा है। इस बार लैंडिंग के लिए उन स्थानों का चयन नहीं करेगा, जो अपोलो मिशन के दौरान किए गए थे। अपोलो मिशन की लैंडिंग साइट मध्य भाग में थी जबकि आर्टेमिस की लैंडिंग बिलकुल अलग होगी।

लॉचिंग स्थगित

नासा को मून मिशन आर्टेमिस-1 की लॉचिंग एक बार फिर टालनी पड़ी। रॉकेट को 3 सितम्बर को रात 11 बजकर 47 मिनट पर उड़ान भरना था, लेकिन ईंधन के रिसाव को बंद करने में सफलता नहीं मिल सकी। इसके बाद लॉचिंग को टाल दिया गया। इससे पहले 29 अगस्त को तकनीकी गड़बड़ी के कारण लॉचिंग को टालना पड़ा था।

पांच साल में खुल जाएगा होटल

- अगर किसी के पास पैसा हो तो आज भी संभव है अंतरिक्ष की सैर।
- अमेरिकी कंपनी ओर्बिटल असेंबली कॉरपोरेशन (ओएसी) अंतरिक्ष में साल 2027 तक होटल बना लेगी।
- इस होटल या अंतरिक्ष स्टेशन पर गुरुत्वाकर्षण को कृत्रिम रूप से बढ़ाया या घटाया जा सकेगा।
- लंबे समय तक अंतरिक्ष में रहने के लिए गुरुत्वाकर्षण को कम या ज्यादा करना जरूरी होगा।
- इस स्पेस स्टेशन पर 44 आपातयान भी होंगे, जो जरूरत पड़ने पर यात्रियों को वापस पृथ्वी पर ला सकेंगे।
- अंतरिक्ष की सैर कराने वाली वर्जिन गेलेक्टिक कंपनी के अनुसार 600 लोग अंतरिक्ष यात्रा के इंतजार में है।
- गेलेक्टिक के पास अभी दो यान हैं। वह ज्यादा यान तैयार कर रही है, हर साल 400 उड़ानों की योजना है।

इन जगहों पर सुरक्षित उतर सकेंगे अंतरिक्ष यात्री

13 क्षेत्रों में फौस्तिनी रिम-ए, पीक नियर शेकलेटर, कनेक्टिंग रिज, कनेटिंग रिज एक्सटेंशन, डे गेरलेश रिम 1, डे गेरलेश रिम 2, डे गेरलेश कोचेर मैसिफ, हावर्थ, मालापेर्ट मैसिफ, लेबनिट्ट बेटा प्लूटो, नोबील रिम 1, नोबील रिम 2, एमंडसेन रिम शामिल है।

2030 तक ये सपने होंगे साकार

600
अरब डॉलर से ज्यादा का हो जाएगा दुनिया में वैश्विक अंतरिक्ष उद्योग

440
लोग एक साथ रह सकेंगे एक अमेरिकी कंपनी के स्पेस सेंटर में

- अंतरिक्ष या चांद की सैर एक सामान्य बात हो जाएगी।
- अंतरिक्ष यात्रा पर ले जाना, ले आना एक बहुराष्ट्रीय उद्यम होगा।
- कई देश या उद्यम इसके लिए मिलकर प्रयास या व्यवसाय करेंगे।
- मानव के जीनोम में अंतरिक्षक के अनुरूप बदलाव हो जाएंगे।
- चांद पर जल के लिए सफलतापूर्वक खनन करने लगेंगे हम।
- अंतरिक्ष में कुछ चीजों का विनिर्माण भी संभव हो जाएगा।
- शून्य गुरुत्वाकर्षण में चिकित्सा के नए पहलू सामने आएंगे।

Happy Diwali

Mahesh Chandra Sharma
Director

Lakecity Buildtech Pvt. Ltd.

Office : 3rd Floor, 2-B, Hazareshwar Colony, Court Road, Udaipur-313 001
Residence : "Kaustubh", 1A, Navratna-Modern Link Road, Udaipur-313 001
(M) +91 9829040569 (O) +91 294- 2413003 (R) +91 294 2980030
E-mail : mcsharma.lakecitybuildtech@gmail.com

दीपावली पर खीर का स्वाद खुशबू के साथ

खीर की खुशबू आते ही सभी का मन ललचा जाता है। खीर भला कौन खाना नहीं चाहता। दूध और चावल से बनी खीर तो आपने कई बार खाई है, लेकिन इस बार दीपावली पर चावल की बजाय कुछ अलग ही तरह की खीर का आनंद लें।

रेणु शर्मा

आलू की खीर

आवश्यक सामग्री

- दूध: 1/2 लीटर
- आलू:1
- शक्कर: स्वादानुसार
- केसर: चुटकी भर
- कटे हुए ड्राईफ्रूट्स:आवश्यकतानुसार

कैसे बनाएं: सबसे पहले दूध को गाढ़ा होने तक उबाल लें। साथ ही आलू को मीडियम साइज में काट लें। फिर घी में लाइट फाई करें। केसर व शक्कर मिलाकर शक्कर के पिघलने तक पकाएं। फ्राई किए हुए आलू व ड्राईफ्रूट्स मिलाकर 5 मिनट तक पकाएं। अब आलू की खीर को फ्रिज में ठंडा करने के लिए रखें।

नारियल की खीर

सामग्री:

- कच्चा नारियल :1
- दूध: 1 लीटर
- काजू: 6–7
- किशमिश: 10–12
- चीनी: 1 कप
- इलायची पाउडर: 1/2 चम्मच
- बादाम– 6–7

विधि: एक भारी तले के बर्तन में दूध को उबालने रख दें। नारियल के ऊपर की ब्राउन परत को चाकू से खुरच लें और नारियल को कद्दूकस कर लें। दूध में उबाल आने पर कद्दूकस किया हुआ नारिवल दूध में डाल दें और दूध में फिर से उबाल आने तक इसे चमचे से चलाते रहें।। दूध में फिर से उबाल आने के बाद आग मध्यम करके खीर को धीरे–धीरे पकने दें। प्रत्येक 2 से 3 मिनिट में इसे चलाते रहें। इसी दौरान मेवे काटकर तैयार कर लें। काजू को छोटे टुकड़ों और बादाम को लंबा बारीक कतर लें। छोटी इलायची को कूटकर पाउडर बना लें। खीर के गाढ़ा होने पर कटे हुए मेवे इसमें डाल दें। कतरे हुए बादाम खीर की गार्निशिंग के लिए बचा लें। किशमिश भी डाल कर मिला दें। खीर को गाढ़ा होने तक मध्यम आग पर पकाएं। थोड़ी–थोड़ी देर में चलाते रहें ताकि खीर तले से लग कर जले नहीं। जब नारियल और दूध एकसार हो जाएं तो समझ लें कि नारियल खीर बन चुकी है। गैस बन्द कर दें। इसमें चीनी और इलाइची डाल कर मिला दें।

लौकी की खीर

सामग्री:–

- दूध:1 लीटर
- लौकी: 500 ग्राम
- घी: 1 चम्मच
- काजू :10
- किशमिश: 25–30
- चीनी: 100 ग्राम
- इलायची पाउडर: 1/2 चम्मच

विधि: सबसे पहले भारी तले के बर्तन में दूध को गरम करने के लिए रख दें। लौकी को छीलकर, धोकर, कद्दूकस कर लें और इसके बीज हटा दें। अब लौकी का पानी निचोड़ कर निकाल दें। कद्दूकस की हुई लौकी को कढ़ाही में घी डालकर फाई कर लें। दूध में उबाल आने के बाद भुनी लौकी को दूध में डालकर मिक्स कर दें। खीर को गाढ़ा होने तक पकने दें। काजू और किशमिश को दूध में डाल कर उबाल आने तक चमचे से चलाएं। गैस धीमी कर दें। खीर को प्रत्येक 3–4 मिनिट में चमचे से चलाते रहें। खीर को तब तक पकने दें जब तक कि खीर को चमचे से गिराने पर लौकी और दूध एक साथ न गिरने लगे । खीर में चीनी डाल कर 3–4 मिनिट तक पकने दें। लौकी की खीर बन कर तैयार है। गैस बन्द कर दें। खीर में इलाइची पाउडर डाल कर मिला दें। खीर को प्याले में निकाल कर कतरे हुए बादाम ऊपर से डाल कर सजाएं।

कद्दू की खीर

सामग्री :
- दूध :2 लीटर
- चीनी : 8 चम्मच
- चावल :1 बड़ा चम्मच
- कद्दूकस किया हुआ कद्दू :1 कप
- केसर के धागे :5–6
- बादाम :10
- इलायची पाउडर :1/2 चुटकी
- गुलाब जल :2 चम्मच

विधि : दूध व चावल गाढ़े होने तक पकाएं। कद्दू और चीनी डालें और 2–3 उबाल आने के बाद आंच से उतार लें। केसर, इलायची पाउडर, काजू, किशमिश व बादाम मिलाएं। गुलाब जल छिड़क कर सर्व करें।

गुलाब की खीर

सामग्री :–
- दूध : 4 कप
- चावल: 1 कप
- इलायची पावडर: 1/2 चम्मच
- चीनी : 1 कप
- पिस्ता किशमिश: 10
- गुलाबजल :1 चम्मच
- गुलाब की पंखुड़ियां :1 चम्मच
- गुलकंद :10 ग्राम

विधि : दूध को गहरे पैन में डालें। जब वह उबलने लगे तब उसमें चीनी और चावल मिक्स करें। ऊपर से इलायची पावडर डाल कर दूध को 10 मिनट और पकाएं। इसे बीच–बीच में चलाती रहें। मिश्रण को तब तक पकाएं जब तक कि चावल टूट कर पूरी तरह से पक न जाए। अब खीर को आंच से उतार कर ठंडा कर के फ्रिज में रख दें। इसमें गुलाब की पंखुड़ियां, गुलाबजल और गुलकंद मिक्स करें। इसे खूबसूरत से कांच के बाउल में सर्व करें।

Happy Diwali

Aashirwad Minerals & Marbles

Mfg. of Soap Stone Powder (Talc Powder), Calcium Carbonate Powder
China Clay Powder, Silica Powder & Dolomite Powder

Office :
E-93, Pratap Nagar,
Udaipur - 313001 (Raj.) INDIA

Factory :
Jyoti Mineral Industries
Plot No. G-1-80, IID Centre
RIICO Ind. Area, Kaladwas, Udaipur (Raj.)

Telefax : 0294-2490194 | E-mail : ashirwadtalc@yahoo.com | www.ashirwadminerals.com

दीप मन के जल, निरंतर जल

कालिमा तेरी मिटेगी दीप मन के जल,
निरंतर जल।।
बिन जले तुझ पर जमाने का तिमर छाता रहेगा,
जुल्म तेरी बेबसी पर हर निमिष छाता रहेगा,
और ऐसा भी कहीं पर चल रहा होगा मुसाफिर-
बिन जले तेरे, स्वयं को जो ठुकराता रहेगा।
हर सितारे की नजर खामोश तुझ से कह रही है,
भोर का वरदान तेरी रोशनी में, रात का अवसान।
कालिमा तेरी मिटेगी दीप, मन के जल,
निरंतर जल।।
जो प्रलय-रथ हांकते हैं, वे सृजन के सारथी है,
आन पर वे जान की बाजी लगाकर झूमते हैं,
ताज ज्वाला का पहन कर शीश पर वे मुस्कुराते,
वे अमरता के कपोलों को अचानक चूमते हैं।
चांद-सूरज भी उन्हीं की प्रेरणा के दूत जल-जल
कर रहे हैं, तू न बूझ जाना मनुज की सृष्टि के वरदान।।
आरती तेरी जियेगी तू प्रलय में पल,
निरंतर जल।।
कालिमा तेरी मिटेगी दीप, मन के जल,
निरंतर जल।।
आज तेरी, हर अंधेरी रात को रोशन बनाना,
हर भटकते पांव को खोई हुई मंजिल बताना,
आज तेरी, आदमी की धुंध पलकों से छुड़ाकर,
जिंदगी की गोर में सोए सवेरे को जगाना।
स्नेह में सम्पूर्ण अपने को डुबाकर तू जलन के,
आँक के चुम्बन लजीले गाल पर और ओठ पर मुस्कान।
तू बनेगा प्यार का मधु-स्रो बेहद गल, निरंतर गल
कालिमा तेरी मिटेगी दीप मन के जल, निरंतर जल।।
ठीक है, तुझको बुझाने को हवाओं का सितम है,
और तेरी जिंदगी का बस अकेला ही कदम है,
किंतु तेरी ज्योति के प्यासे यहां कुछ नेत्र भी हैं,
ले दुआ, आशीष उनसे उम्र हो सकती न कम।
राह की लम्बी उमर, खामोश तुझसे कह रही है,
पीठ पर तू अर्थियां मत ढो विगम, वक्ष आगे तान।
मंजिले तुझको मिलेगी चल, निरंतर चल।
कालिमा तेरी मिटेगी दीप मन के जल, निरंतर जल।।

डॉ. जयप्रकाश भाटी 'नीरव'

पाठक-पीठ

'प्रत्यूष' के सितम्बर अंक में मध्य के रंगीन पृष्ठों पर प्रकाशित इस माह के महत्वपूर्ण पर्वों पर सूर्यकांत द्विवेदी व प्रिशा शर्मा के आलेख अच्छे लगे। नवरात्रि अनुष्ठान के मंत्रों व विधि की जानकारी के साथ श्राद्ध पक्ष में बालिकाओं द्वारा मांडी जाने वाली 'सांझी' की जानकारी अच्छी थी।

विपिन माहेश्वरी,
जिला परिवहन अधिकारी

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि प्रत्यूष अपनी प्रकाशन यात्रा के इसी माह 20 वर्ष पूर्ण कर रहा है। यह ऐसी पत्रिका है, जिसमें हर आयुवर्ग और रूचि के पाठक सन्तुष्ट हो सकते हैं। ज्ञान-विज्ञान, खेल, स्वास्थ्य, ज्वलंत मसलों पर सटीक सम्पादकीय, राजनैतिक विश्लेषण, गृहस्थी की बातें, सम-सामयिक आलेख आदि पर अच्छी सामग्री होती है।

सुरेन्द्रसिंह विश्नोई,
तहसीलदार

'प्रत्यूष' का सितम्बर-22 का अंक मिला। वेदव्यास का 'संकीर्ण मानसिकता सबसे बड़ा दुर्भाग्य' आलेख मौजूदा हालातों पर चिंतन-मंथन की आवश्यकता प्रतिपादित करता है। वास्तव में आज की बड़ी चुनौती गरीबी और असमानता से फलते-फूलते धर्म-जाति की एकाधिकारवादी तानाशाही ही है।

विरेन्द्रसिंह चम्पावत, उद्योगपति

सितम्बर-22 के प्रत्यूष अंक में सुरसा के आकार की तरह बढ़ती महंगाई व उस पर नियंत्रण के लिए उमेश शर्मा व शिक्षक तैयार करने की चुनौती के सन्दर्भ में प्रकाशित संजयकुमार मिश्र का आलेख अच्छा लगा।

गिरिराज भावसार,
उद्यमी

नियुक्ति

बाल साहित्य अकादमी के इकराम राजस्थानी अध्यक्ष

जयपुर/प्रत्यूष ब्यूरो। लब्ध प्रतिष्ठित साहित्यकार इकराम राजस्थानी ने पिछले दिनों यहां अकादमी संकुल में पहली बार बनी पं. जवाहरलाल नेहरू बाल साहित्य अकादमी के अध्यक्ष पद का कार्यभार संभाल लिया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने जिस भावना और विश्वास से उन्हें यह दायित्व सौंपा हैं, उसे निभाने में कोई कमी नहीं रखेंगे। बच्चे हमारे देश के भावी कर्णधार हैं। उन्हें नेहरूजी के जीवन मूल्यों और आदर्शों के अनुरूप रचनात्मक प्रवृत्तियों से जोड़ने के लिए सभी संभव कदम उठाए जाएंगे। रचनात्मक दृष्टि से उन्हें समृद्ध बनाया जाएगा। इस अवसर पर

ललित कला अकादमी के नव निर्वाचित अध्यक्ष लक्ष्मण व्यास, राजस्थान मेला प्राधिकरण के उपाध्यक्ष रमेश बोराणा, मुख्यमंत्री के विशेषाधिकारी फारूक आफरीदी और गणमान्य लोग मौजूद रहे।

उदयपुर। इकराम राजस्थानी के बाल साहित्य अकादमी के अध्यक्ष मनोनीत होने पर साहित्यकारों ने यहां खुशी व्यक्त की। विष्णु शर्मा हितैषी ने कहा कि इकराम भाई की दीर्घावधि व विविध विधाओं की सृजन यात्रा बाल साहित्य को समृद्ध करने में सहायक बनेगी। किशन दाधीच, डॉ. उग्रसेन राव, विमला भंडारी, ज्योतिपुंज, शकुन्तला सरूपरिया, डॉ. जयप्रकाश भाटी, रामदयालल मेहरा, जगदीश तिवारी, नरोत्तम पंड्या आदि ने भी उनकी नियुक्ति पर हर्ष जताया।

प्रत्यूष

इस माह आपके सितारे

पं. शोभालाल शर्मा

मेष

अटके काम पूरे होंगे। व्यवसाय के क्षेत्र में पूर्ण सफलता मिलेगी और कम प्रयास से अधिक लाभ मिलेगा। दाम्पत्य सुख उत्तम रहेगा, स्थान परिवर्तन एवं दूर की यात्राएं मन को अशांत एवं असंतुष्ट कर सकती हैं, वरिष्ठजनों के सहयोग से कार्य संपादन करें। कॅरियर में सकारात्मक परिणाम मिलेंगे।

वृषभ

कष्टों का सामना करना पड़ सकता है। बड़े फैसले सोच समझ कर लेंवे। पारिवारिक समस्या का समाधान होगाा। व्यवसायिक क्षेत्र में सफलता, परंतु कार्याधिक्य से मानसिक बैचेनी बढ़ेगी। यात्राओं के योग बनेंगे। भौतिक साधनों में वृद्धि से मानसिक संतोष मिलेगा। स्वास्थ्य ठीक रहेगा।

मिथुन

मानसिक तनाव के साथ रिश्तों में भी दरार आ सकती है। इस दौरान सतर्क रहने की आवश्यकता है। यात्रा एवं वाहन संचालन के दौरान सावधानी बरतें। संतान पक्ष के सहयोग से सफलता मिलेगी। व्यापारी वर्ग सट्टेबाजी, लॉटरी या अन्य अनैतिक कार्यों से बचें। स्वास्थ्य पक्ष उत्तम है।

कर्क

माह लाभकारी सिद्ध होने वाला है, सेहत संबंधित परेशानियों से भी मुक्ति मिलेगी। धन लाभ के योग हैं। नौकरी पेशा के लिए समय अच्छा है, सामाजिक मान–प्रतिष्ठा में कमी, पुरुषार्थ बनाए रखे। भाग्य पूर्ण रूप से साथ देगा।

सिंह

आर्थिक परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है, कोई भी फैसला सोच–समझ कर लें। पुरुषार्थ और मित्रों के सहयोग से स्थितियों को नियंत्रण में कर लेंगे। दैनिक जीवन में सरसता आएगी। विचारों एवं कार्यशैली में बदलाव अतिआवश्यक है। स्थिर कार्यों की ओर अधिक ध्यान दें।

कन्या

यह माह आपके लिए सामान्य रहने वाला है। आय के पर्याप्त अवसर प्राप्त होंगे, लेकिन खर्चों की अधिकता भी बनी रहेगी। कुटुम्बीजनों से मताभिन्नता हो सकती है। मान–सम्मान एवं प्रतिष्ठा पर आंच आ सकती है। राजकीय एवं शासकीय सहयोग प्राप्त होगा। रूके हुए कार्य पूरे होंगे। व्यवसाय में विस्तार संभव।

तुला

जीवन में सकारात्मकता आएगी। विदेश जाने के अवसर प्राप्त हो सकते हैं। कोई शुभ समाचार प्राप्त होगा। समाज में प्रतिष्ठा बढ़ेगी। परिवार में मांगलिक कार्य संभव। माह के उत्तरार्द्ध में क्रोध पर नियंत्रण रखें एवं भाषा पर संयम। स्वास्थ्य के प्रति सजग रहें। विशेष कर परिवार में वरिष्ठजनों की सेहत का ख्यात रखना जरूरी है।

इस माह के पर्व/त्योहार

2 अक्टूबर	आश्विन शुक्ला सप्तमी	महात्मा गांधी/ शास्त्री जयंती
3 अक्टूबर	आश्विन शुक्ला अष्टमी	दुर्गामहाष्टमी
5 अक्टूबर	आश्विन शुक्ला दशमी	विजया दशमी (दशहरा)
9 अक्टूबर	आश्विन शुक्ला पूर्णिमा	शरद् पूर्णिमा/कार्तिक स्नान प्रारंभ
11 अक्टूबर	कार्तिक कृष्णा द्वितीया	श्री गुरू रामदास जयंती
13 अक्टूबर	कार्तिक कृष्णा चतुर्थी	करवा चौथ
17 अक्टूबर	कार्तिक कृष्णा सप्तमी	अहोई अष्टमी
22 अक्टूबर	कार्तिक कृष्णा द्वादशी	धनवंतरी जयंती
23 अक्टूबर	कार्तिक कृष्णा त्रयोदशी	दीपदान
24 अक्टूबर	कार्तिक कृष्णा चतुर्दशी	दीपावली
25 अक्टूबर	कार्तिक कृष्णा अमावस्या	सूर्यग्रहण
26 अक्टूबर	कार्तिक शुक्ल प्रथमा	गोवर्धन पूजा
27 अक्टूबर	कार्तिक शुक्ल द्वितीया	भाईदूज
28 अक्टूबर	कार्तिक शुक्ल तृतीया	श्री दूर्वा गणपति व्रत
30 अक्टूबर	कार्तिक शुक्ल षष्ठी	छठ पूजन
31 अक्टूबर	कार्तिक शुक्ल सप्तमी	सहस्त्रार्जुन/ सरदार पटेल/ इंदिरा गांधी जयंती

वृश्चिक

आय के साधनों में वृद्धि। धन से संबंधित परेशानियां दूर होंगी, घर में खुशनुमा माहौल रहेगा। व्यवसाय में सफलता मिलेगी। अनचाहे आगंतुकों से परेशानी बढ़ेगी। राजकीय एवं शासकीय कार्यों में लाभ मिलेगा। नई कार्य योजना को मूर्त रूप दे सकते हैं। स्वास्थ्य संबंधी परेशानी हो सकती है।

धनु

नए अवसर प्राप्त होंगे। व्यापारियों को व्यापार में गति मिलेगी, परेशानियों से मुक्ति मिलेगी। कला एवं बौद्धि क्षेत्र के लोगों को समाज में मान सम्मान प्राप्त होगा। अनैतिक धन की प्राप्त संभव। पूंजी निवेश के लिए समय उत्तम है। वैवाहिक जीवन आनंदमय रहेगा। पारिवारिक यात्रा संभव।

मकर

यह माह थोड़ा कष्टकारी है। वाद–विवाद से बचें। ऑफिस में सहकर्मियों के साथ संबंध बिगड़ सकते हैं, पेट एवं त्वचा संबंधित बीमारियां परेशान कर सकती हैं। परिवार में सौहार्द्र रहेगा। आय–व्यय में संतुलन बनाए रखें। कार्य क्षेत्र में भाई–बहिनों का सहयोग अनुकूल रहेगा।

कुम्भ

आर्थिक परेशानियां चिंता का कारण बनेंगी। जीवन साथी का स्वास्थ्य मानसिक तनाव दे सकता है। अदालती मामलों में असफलता से मन खिन्न रह सकता है। व्यर्थ की भागदौड़ बनी रहेगी। संबंधियों एवं इष्ट मित्रों से संबंधों में बिगाड़ संभव। स्वकेन्द्रित विचार हानि दे सकता है। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

मीन

नए अवसरों की प्राप्ति होगी। निवेश से अच्छा लाभ प्राप्त होगा। अविवाहितों के लिए विवाह प्रस्ताव आ सकते हैं। विरोधी हर कार्य में अड़चनें पैदा करेंगे। साझेदारी के कार्य लाभप्रद सिद्ध होंगे। व्यवसाय विस्तार के लिए। समय अनुकूल है। नौकरी पेशा का स्थानांतरण संभव।

फिर बनेगा भारत विश्व गुरू: त्रिवेदी

उदयपुर। भारतीय जनता पार्टी व नगर निगम के संयुक्त तत्वावधान में गत दिनों मोहनलाल सुखाड़िया रंगमंच पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के शासकीय राजनीति के 20 वर्ष पूर्ण होने पर प्रबुद्धजन प्रकोष्ठ की सभा में राज्यसभा सदस्य एवं भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता डॉ. सुधांशु त्रिवेदी ने कहा कि भारत 2047 तक फिर से जगदगुरू, विश्वगुरू और सोने की चिड़िया बनेगा। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने इसका संकल्प लिया है और उनकी सरकार ने इस दिशा में प्रयत्न तेज कर दिए हैं। सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए नेता प्रतिपक्ष गुलाबचंद कटारिया ने कहा कि भ्रष्टाचार को जड़ से समाप्त करने का नाम है मोदी। राष्ट्र को स्वाभिमानी बनाने का नाम है मोदी। रामराज्य की प्रतिस्थापना का पर्याय है मोदी। अभूतपूर्व व्यक्तित्व के धनी नरेन्द्र मोदी ने अन्तराष्ट्रीय स्तर पर भारत का स्वाभिमान बढ़ाने में जो योगदान दिया है वह अद्वितीय है। नगर निगम महापौर गोविंद सिंह टांक ने स्वागत तथा शहर जिला अध्यक्ष रविन्द्र श्रीमाली ने मुख्य वक्ता सुधांशु त्रिवेदी का परिचय दिया। कार्यक्रम का संचालन प्रबुद्धजन प्रकोष्ठ के शहर संयोजक राजकुमार फत्तावत ने तथा आभार उपमहापौर पारस सिंघवी द्वारा ज्ञापित किया गया। इस दौरान शहर महामंत्री किरण जैन, गजपाल सिंह राठौड़ , मनोज मेघवाल, प्रबुद्धजन प्रकोष्ठ के सहसंयोजक भरत मेहता, डॉ साधना कोठारी आदि ने त्रिवेदी का मेवाड़ी परम्परा के अनुसार पगड़ी, उपरणा, शॉल, श्रीफल तथा स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मान किया। कार्यक्रम में पूर्व कुलपति प्रो बीएल चौधरी, उमाशंकर शर्मा, परमेन्द्र दशोरा भी उपस्थित थे।

माइनिंग पर ज्यादा ध्यान दें: जाट

उदयपुर। राजस्व मंत्री रामलाल जाट ने कहा कि माइनिंग आर्थिक स्थिति में रीढ़ की हड्डी है, लेकिन इस पर कम ध्यान दिया जाता है, जबकि राजस्थान में कृषि के बाद माइनिंग ही एक मात्र ऐसा क्षेत्र है, जहां अधिक रोजगार उपलब्ध हैं। वे गत दिनों उदयपुर में माइनिंग इंडस्ट्रीज के तीन दिवसीय सेमिनार के समापन समारोह को संबोधित कर रहे है थे। उन्होंने कहा कि देश की मजबूती व ग्रोथ में खनन का बहुत बड़ा योगदान है। राज्य सरकार ने खान नीति में कई बदलाव किए हैं जिस कारण आज खनन क्षेत्र में विकास के साथ ही राजस्व में बढ़ोतरी हो रही है। विशिष्ट अतिथि आरएसएमएम के निदेशक अखिलेश जोशी ने कहा कि माइनिंग बड़ा अनुसंधान का क्षेत्र हैं, जहां प्रतिदिन कुछ नया सीखने को मिलता है। विशिष्ट अतिथि खान एवं भू विज्ञान विभाग के अतिरिक्त निदेशक महेश माथुर ने कहा कि पर्यावरण को सुरक्षित रखते हुए किस प्रकार खनन किया जाए, यह हमारे लिए चुनौती है।

सिंघानिया विवि व इंडो-गल्फ मैनेजमेंट के बीच एमओयू

उदयपुर। सर पदमपत सिंघानिया विश्वविद्यालय उदयपुर और इंडो-गल्फ मैनेजमेंट एसोसिएशन ने समझौता ज्ञापन (एमआयू) पर हस्ताक्षर किए। कुलपति और अध्यक्ष एस पीएसयू प्रो. पद्मकली बनर्जी और डॉ. मोहनलाल अग्रवाल, अध्यक्ष इंडो गल्फ मैनेजमेंट एसोसिएशन दुबई की उपस्थित में हस्ताक्षर हुए। एमओयू का उद्देश्य सहयोगात्मक कार्यक्रमों, लाइव शोध परियोजनाओं, क्षमता निर्माण, कॉर्पोरेट प्रशिक्षण कार्यक्रमों ,इंटर्नशिप, संकाय और छात्र विनिमय कार्यक्रमों के रूप में रणनीतियों और गतिविधियों को विकसित करना है। डॉ. मोहनलाल अग्रवाल ने स्कूल ऑफ मैनेजमेंट के छात्रों के साथ प्लेसमेंट और इंटर्नशिप के अवसरों को साझा किया और 'इंटरएक्टिव' सिमुलेशन गेम फॉर मैनेजमेंट स्टूडेंट्स पर सत्र लिया। प्रो. सदानंद प्रुस्टी प्रोवोस्ट, डॉ. संजय मिश्रा रजिस्ट्रार, नंद कुमार ढाके निदेशक (प्रवेश और मार्केटिंग) भी मौजूद थे।

प्रवीण सुथार की लोकसभा अध्यक्ष से भेट

उदयपुर। फोर्टी शाखाओं के को-चेयरमैन युवा उद्यमी प्रवीण सुधार ने दो दिवसीय कोटा दौरे के दौरान लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला से शिष्टाचार भेटकर श्रीनाथजी की छवि भेंट की। कोटा क्लब में उनकी अध्यक्षता में फोर्टी कोटा संभाग के व्यापारियों की बैठक भी हुई।

भंसाली पुनः चेयरमैन

उदयपुर। इंडियन रेड क्रॉस सोसायटी जिला शाखा उदयपुर (सत्र 2022-25) तक के कार्यकारिणी चुनाव अतिरिक्त जिला कलेक्टर (प्रशासन) ओपी बुनकर के नेतृत्व में हुए। जिसमें चेयरमैन पद पर गजेंद्र भंसाली को निर्विरोध निर्वाचित किया।

सेंट एंथोनी स्कूल में सांस्कृतिक कार्यक्रम

उदयपुर। सैंट एंथोनी सेकेंडरी स्कूल में शिक्षक दिवस पर कार्यक्रम हुए। प्राचार्य विलियम डिसूजा ने बताया कि सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन के जन्मदिन को मनाया गया। विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हुए। विद्यार्थियों ने समूह गान, नृत्य, भाषण प्रतियोगिता में भाग लिया।

सोशल मीडिया जिलाध्यक्षों की नियुक्ति

उदयपुर। राजस्थान प्रदेश कांग्रेस सोशल मीडिया में जिला अध्यक्षों की नियुक्तियां हुई। प्रदेश कांग्रेस सोशल मीडिया कोऑर्डिनेटर डॉ. संजीव राजपुरोहित ने बताया कि संतोष प्रजापत को उदयपुर शहर जिला कांग्रेस सोशल मीडिया अध्यक्ष एवं रंजना साहू को महासचिव नियुक्त किया गया। राजपुरोहित ने दोनों की नियुक्ति पर प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष डोटासरा का आभार जताया।

जिम्नेजियम एवं एडवांस स्पोर्ट्स रिहेब लैब का उद्घाटन

उदयपुर। पेसिफिक मेडिकल एंड हॉस्पिटल में नवीनीकृत जिम्नेजियम एवं एडवांस स्पोर्ट्स रिहेब लैब का उद्घाटन पीएमसीएच के चेयरमैन राहुल अग्रवाल, प्रीति अग्रवाल, अमन अग्रवाल, सीइओ शरद कोठारी, फिजियोथैरेपी कॉलेज के प्रिंसिपल डॉ. जफर खान एवं संचालक अमन खान ने किया।

डॉ. अरविंदर का नाम वर्ल्ड बुक रिकॉर्ड में

उदयपुर। अर्थ ग्रुप के डायरेक्टर व सीइओ डॉ. अरविंदर सिंह का नाम वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्ड में शामिल किया गया। डॉ. अरविंदर पोस्ट ग्रेजुएट मेडिकल डॉक्टर हैं जिन्होंने मेडिकल साइंस के अलावा विभिन्न क्षेत्रो में भी नाम कमाया है। डॉ. सिंह ने अभी हाल ही में इंस्टिट्यूट ऑफ एस्थेटिक मेडिसिन, कॉस्मेटोलॉजी व लेजर की स्थापना भी की है जिसको लंदन से मान्यता व यूसए से रजिस्ट्रेशन प्राप्त है।

डॉ. दिव्यानी का थाईलैंड में सम्मान

उदयपुर। सेव द गर्ल चाइल्ड उदयपुर की ब्रांड एंबेसडर और देश की पहली आदिवासी मॉडल डॉ. दिव्यानी कटारा का थाईलैंड में सम्मान किया गया। डॉ. दिव्यानी ने थाईलैंड में अंतरराष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता में विशिष्ट अतिथि और जज के रूप में शिरकत की। उन्हें आदिवासी क्षेत्र में महिला रोजगार, चाइल्ड एज्युकेशन सहित विभिन्न सेवा कार्यों के लिए क्राउन पहना कर सम्मानित किया गया।

दुर्गाराम व सुनीता को राष्ट्रपति पुरस्कार

उदयपुर। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने शिक्षक दिवस 5 सितम्बर को नई दिल्ली के विज्ञान भवन में उदयपुर जिले के राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय, पारगियापाड़ा के शिक्षक दुर्गाराम मुवाल व बीकानेर के राजकीय उच्च माध्यमिक मूक बधिर विद्यालय की विज्ञान की व्याख्याता सुनीता गुलाटी को नेशनल टीचर्स अवॉर्ड से सम्मानित किया। इसके बाद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने देशभर के सम्मानित शिक्षकों से चर्चा की।

उल्लास से मनाई दधिची जयंती

उदयपुर। महर्षि दाधिची जयंती पर सेक्टर 4, स्थित महर्षि संस्थान भवन में समारोह सम्पन्न हुआ। संस्थान अध्यक्ष सुधीर जोशी ने बताया कि सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ, रक्तदान, वरिष्ठ समाज जन सम्मान, मेधावी छात्र-छात्राओं व प्रतियोगिता में विजेताओं को पुरस्कार वितरण किया गया। समाज के सचिव राधेश्याम दाधीच, शशि जोशी, उमेश दाधीच, जीवन प्रकाश, कैलाश शर्मा, मनमोहन बहड़, मनोहर शंकर दाधीच, शंकर त्रिवेदी, महेश जोशी, रूचि व्यास, सुनील दाधीच भी उपस्थित थे।

रेडीमेड एवं होजरी एसोसिएशन के चुनाव

उदयपुर। उदयपुर रेडीमेड एंड होजरी एसोसिएशन के चुनाव हाल ही में सम्पन्न हुए। चुनाव अधिकारी आलोक पगारिया ने बताया कि अध्यक्ष पद पर राजमल जैन और महामंत्री अक्षय जैन निर्विरोध चुने गए।

रॉकवुड्स में वॉक्स पोपुलाई का उद्घाटन

उदयपुर। रॉकवुड्स स्कूल में राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न विषयों पर वाद-विवाद स्पर्धा वॉक्स पोपुलाई हुई। ग्वालियर, अजमेर, जोधपुर और स्थानीय स्कूलों के 350 विद्यार्थियों ने भाग लिया। विद्यार्थियों ने 15 अलग-अलग विषयों की कमेटियों में अपने विचार पक्ष-विपक्ष में रखे। मुख्य अतिथि राजसमंद सांसद दीप्ति माहेश्वरी थी। संस्था निदेशक दीपक शर्मा ने बताया कि अपने विषय को बेबाकी से बताना वॉक्स पोपुलाई का उद्देश्य है।

शिल्पी इकबाल को डॉक्टरेट की मानद उपाधि

उदयपुर। इकबाल सक्का को हॉप इन्टरनेशनल वर्ल्ड रिकॉर्ड्स और हॉप फाउंडेशन महाराष्ट्र ने डॉक्टरेट की मानद उपाधि से सम्मानित किया। सक्का को यह सम्मान आर्ट ऑफ मिनिएचर के क्षेत्र में सोने से निर्मित विश्व की सबसे छोटी 90 सूक्ष्मतम कलाकृतियां बनाकर गिनीज बुक इत्यादि में दर्ज कराने पर दिया गया।

हृदय रोग में एमआरआई की सटीकता से रोगियों को नवजीवन

उदयपुर। रेडियोडायग्नोसिस विभाग, आरएनटी मेडिकल कॉलेज एवं उदयपुर चैप्टर ऑफ रेडियोलॉजी के संयुक्त तत्वावधान में कार्डियक एमआरआई पर कार्यशाला हुई। डॉ मोना भाटिया फॉर्टिस नई दिल्ली, डॉ रंगराजन राजगोपाल एम्स जोधपुर एवं ऋषि अवस्थी सीमेंस इंडिया ने हृदय रोगों में एमआरआई की उपयोगिता पर व्याख्यान दिया। उद्घाटन मुख्य अतिथि डॉ लाखन पोसवाल प्राचार्य एवं नियंत्रक आरएनटी मेडिकल कॉलेज, डॉ सुभाष टेलर इंडियन रेडियोलॉजिकल एसोसिएशन राजस्थान चैप्टर, डॉ आनंद गुप्ता अध्यक्ष उदयपुर चैप्टर ऑफ रेडियोलॉजी ने किया। डॉ. पोसवाल ने एमआरआई मशीन की हृदय के विभिन्न रोगों में उपयोगिता पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का आयोजन डॉ. कुशाल गहलोत, विभागाध्यक्ष रेडियोडायग्नोसिस विभाग एवं सचिव उदयपुर चैप्टर ऑफ रेडियोलॉजी द्वारा किया गया।

नेशनल तैराकी में युग को ब्रॉन्ज मेडल

उदयपुर। उदयपुर के युग चेलानी गुवाहाटी में सीनियर्स वर्ग में 4:10.63 मिनट के समय के साथ ब्रॉन्ज जीता। 400 मी, फ्री स्टाइल में मेडल जीतने वाले युग प्रदेश के पहले तैराक हैं। गोल्ड दिल्ली के विशाल ग्रेवाल (4:03-55) व सिल्वर कर्नाटक के शिवांक विश्वनाथ (4:09.02) ने जीता।

भानु कपिल सलाहकार समिति में

उदयपुर। जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय जोधपुर में संचालित गांधी अध्ययन केंद्र के व्यवस्थित कार्य संचालन के लिए सलाहकार समिति का गठन किया गया। इसमें उदयपुर के बीएन विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ भानु कपिल को सदस्य मनोनीत किया गया।

पूर्बिया 'नर्सेज रत्न' से सम्मानित

उदयपुर। एमबी हॉस्पिटल के सीनियर नर्सिंग ऑफिसर नरेश पूर्बिया को जल संसाधन मंत्री महेंद्रजीत मालवीया ने नर्सेज रत्न से सम्मानित किया। आरएनए जिलाध्यक्ष प्रवीण चरपोटा ने बताया कि नर्सिंग समुदाय व पीड़ित मानवता के हित में कार्य करने एवं नर्सेज एसोसिएशन के प्रति समर्पण भाव को नरेश पूर्बिया सहित 10 सीनियर नर्सिंग ऑफिसर को नर्सेज रत्न सम्मान दिया गया। इंटक प्रदेशाध्यक्ष जगदीश राज श्रीमाली, डीसी राजेन्द्र भट्ट, आरएनटी मेडिकल कॉलेज प्रिंसिपल डॉ. लाखन पोसवाल, एमबी हॉस्पिटल अधीक्षक डॉ. आरएल सुमन मौजूद रहे।

'अपना घर' फोल्डर का विमोचन

उदयपुर। अपना घर आश्रम, आयड़ की गतिविधियों की जानकारी देने वाले फोल्डर का विमोचन गत दिनों डॉ. प्रदीप कुमावत, डॉ. दिलीपसिंह यादव, डॉ. विष्णु बंशीवाल, रेवा शंकर माली, धारेंद्र सालगिया व दुर्गा शंकर नागदा ने किया।

एयरपोर्ट जैसा दिखेगा सिटी स्टेशन

उदयपुर। देश दुनिया के प्रमुख पर्यटन शहरों में शुमार उदयपुर का सिटी रेलवे स्टेशन 3 साल में एयरपोर्ट की तरह दिखेगा। इसे अत्याधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित किया जाएगा। ताकि हर पर्यटक और अधिक आरामदायक और सुरक्षित महसूस कर सके। प्रोजेक्ट के तहत होने वाले 305 करोड़ के कामों का शिलान्यास गत दिनों किया गया। दरअसल, देशभर में 125 स्टेशनों के पुनर्विकास की योजना के तहत उदयपुर स्टेशन को भी शामिल किया गया है। इसमें दोनों गेट पर रेलवे स्टेशन का काया कल्प होगा। पैदल मार्गों के नेटवर्क से वाणिज्यिक भूमि से आईएसबीटी के साथ कनेक्टिविटी, स्टेशन में प्रवेश और निकास के लिए अलग व्यवस्था सहित यात्रियों के लिए आसान साइनेज भी शामिल हैं। करीब 40000 स्क्वायर मीटर में 1 व 2 नंबर गेट पर री-डवलपमेंट ऑफ स्टेशन बनेगा। एआरओ बीपी स्वामी एवं विष्णु प्रकाश आर पुंगलिया लिमिटेड के निदेशक कमल पुंगलिया ने नए कामों के लिए भूमि पूजन किया।

हमजा की देश में 108 वीं रैंक

उदयपुर। सेंट एंथोनी स्कूल के मोहम्मद हमजा ने नीट परीक्षा में देश में 108 वां एवं उदयपुर में पहला स्थान पाया। प्राचार्य विलियम डिसूजा ने कहा कि हमजा के शानदार प्रदर्शन से विद्यालय गौरवान्वित है।

एसेंट रेस के पोस्टर का विमोचन

उदयपुर। प्रतिभाओं के प्रोत्साहन के लिए एसेंट कॅरियर पॉइंट कोचिंग संस्थान की मेजबानी में एसेंट रेस परीक्षा 2023 होगी। इस की बुकलेट एवं पोस्टर का विमोचन गत दिनों हिरण मगरी स्थित सक्षम कैम्पस में हुआ। कार्यक्रम में निदेशक मनोज बिसारती एवं मुकेश बिसारती मौजूद रहे। निदेशक मनोज बिसारती ने बताया कि इस परीक्षा में शामिल होकर विद्यार्थी कोचिंग शुल्क में रियायत पाकर अपने नीट व जेईई के सपने पूरा कर सकते हैं। श्रेष्ठ स्थान पाने वाले विद्यार्थियों को 1.5 करोड़ छात्रवृत्ति व नकद पुरस्कार दिए जाएंगे।

साहित्य अकादमी के नवनियुक्त अध्यक्ष का स्वागत

उदयपुर। राजस्थान साहित्य अकादमी के नव नियुक्त अध्यक्ष दुलाराम सहारण ने कहा कि राजस्थान साहित्य अकादमी साहित्य के उत्थान और साहित्यकारों को सम्मान देने की दिशा में निरंतर समर्पित रहेगी। सहारण ने गत दिनों अकादमी अध्यक्ष का पदभार ग्रहण करने के बाद अपने अभिनन्दन के उत्तर में यह बात कही। उनके साथ सरस्वती सभा सदस्य मीठानाथ मीठेश निर्मोही एवं किशन दाधीच ने भी पदभार ग्रहण किया। सहारण ने कहा कि अकादमी में साहित्य की दिशा में वर्षों से कार्य कर रहे एवं अपना जीवन साहित्य के क्षेत्र में समर्पित कर देने वाले व्यक्तित्वों का सम्मान होगा। इस मौके पर राजस्थान लोक सेवा आयोग के पूर्व अध्यक्ष आर डी सैनी, अकादमी सचिव बसंत सिह सोलंकी, डॉ. विमला भण्डारी, डॉ. ज्योतिपुंज, विष्णु शर्मा हितैषी, गोविन्द माथुर, कुंदन माली, चेतन औदिच्य, शिवदान सिंह जोलावास, पंकज कुमार शर्मा, डॉ. शकुन्तला सरूपरिया, श्रीकृष्ण जुगनू, डॉ. गिरीशनाथ माथुर, जगदीश तिवारी, राम दयाल मेहरा व खुर्शीद हुसैन भी मौजूद थे।

अहमदाबाद में बने गुजराती समाज भवन

उदयपुर। गुजराती समाज भवन में अखिल राजस्थान गुजराती समाज की बैठक संपन्न हुई। विश्व गुजराती समाज के महामंत्री सुधीर भाई रावल ने कहा कि अखिल राजस्थान गुजराती समाज जो कार्य कर रहा हैं, वह प्रशंसनीय है। उदयपुर गुजराती समाज के अध्यक्ष राजेश बी मेहता ने कहा कि गुजरात के बाहर हर जगह गुजराती समाज हैं, लेकिन अहमदाबाद में गुजराती समाज का भवन नहीं है। ऐसे में अहमदाबाद में गुजराती समाज का भव्य भवन निर्मित किया जाना चाहिए। बैठक में अखिल राजस्थान गुजराती समाज के अध्यक्ष जीडी पटेल, अखिल राजस्थान गुजराती समाज के कार्यवाहक अध्यक्ष डॉ पंकज शाह, उदयपुर गुजराती समाज के सचिव दिनेश भाई पटेल, अखिल राजस्थान गुजराती समाज के सचिव मुकेश भाई पटेल एवं निलेश भाई पटेल उपस्थित थे।

इलाज की हर पद्धति में कारगर फिजियोथैरेपी: डॉ. पाईवाल

उदयपुर। उदयपुर सोसायटी ऑफ रेकग्नाइज्ड फिजियोथैरेपिस्ट्स के अध्यक्ष और सीनियर स्पाइन व जॉइंट पेन स्पेशलिस्ट डॉ. गौरव पाईवाल बताते हैं कि अब फिजियोथैरेपी इलाज की हर पद्धति में कारगर है। देश में 1990 के दशक में शुरू हुई इस चिकित्सा पद्धति का उद्देश्य जोड़-मांसपेशियों की कार्यक्षमता को बढ़ाकर शरीरिक दर्द में आराम देना और लकवे जैसी बीमारियों में शरीर को वापस काम करने योग्य बनाना था। उन्होंने बताया कि आज हर घर में कमर या गर्दन में दर्द के मरीज हैं। बुजुर्ग घुटनों में दर्द से पीड़ित हैं। फिजियोथैरेपी से ऐसे मरीजों को ऑपरेशन से बचाकर दर्द से आराम दिया जा सकता है।

नई टक्सन की लॉन्चिग

उदयपुर। हुंडई मोटर इंडिया लि. ने स्थानीय अधिकृत डीलर बड़ोला हुंडई शोरूम पर न्यू टक्सन लॉन्च की। इस मौके पर डीआइजी एंटी करप्शन राजेन्द्र प्रसाद गोयल और एडीएम ओ.पी बुनकर मुख्य अतिथि थे। कार्यक्रम में कंपनी के टीएसएम संजय शर्मा, निदेशक रोहित बडोला सहित कई लोग मौजूद थे। रोहित बडोला ने बताया कि न्यू टक्सन की एक्स शोरूम कीमत 27,69,700 से शुरू हैं। इस कार में एडीएएस फीचर युक्त, फ्रन्ट एलईडी, बोस प्रीमियम साउण्ड, 8 स्पीकर सिस्टम, हेंड्सफ्री स्मार्ट पावर टेल गेट, ड्राईवर पावर सीट मेमोरी फंक्शन, इलेक्ट्रिक पार्किंग ब्रेक, रेन सेन्सिंग वाइपर जैसे कई फिचर्स है।

सिंघवी अध्यक्ष बने

उदयपुर। दिगम्बर जैन बीसा नरसिंहपुरा तेरापंथ समाज की वार्षिक आम सभा नेमिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में हुई। इसमें समाज की कार्यकारिणी के त्रिवर्षीय चुनाव भी हुए। अध्यक्ष उप महापौर पारस सिंघवी चुने गए।

वाधवानी सिंधी पंचायत अध्यक्ष

उदयपुर। पूज्य सिंधी खानपुर पंचायत की आम सभा में किशन वाधवानी अध्यक्ष निर्वाचित हुए। कोषाध्यक्ष इन्द्र रामेजा ने पंचायत का आय-व्यय प्रस्तुत किया। वाधवानी ने सलाहकार मण्डल में महेश नारवानी, अर्जुन रामेजा, बखत कुमार आहुजा, प्रकाश तलरेजा, ओमप्रकाश माधवानी, प्रताप कारडा, सुरेश रामेजा को मनोनीत किया।

सनाढ्य प्रतिभा सम्मान

कोटा। सनाढ्य ब्राह्मण समाज की प्रतिभाओं को गत दिनों सम्मानित किया गया। अखिल राजस्थान सनाढ्य ब्राह्मण महासभा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष सुरेन्द्र शर्मा, कोटा (दक्षिण) के विधायक संदीप शर्मा तथा कोटा ओपन यूनिवर्सिटी के पूर्व वाइस चांसलर अशोक शर्मा ने प्रतिभाओं को सम्मानित किया। सुरेन्द्र शर्मा ने बताया कि समाज का यह पांचवा प्रतिभा सम्मान समारोह था।

शंकराचार्य स्वरूपानंद का निधन: गंगा आश्रम में भू-समाधि

देश की चार प्रमुख पीठों में शामिल ज्योतिषमठ एवं द्वारकाशारदा पीठ के शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानंद सरस्वती का 11 सितम्बर अपराह्न मध्यप्रदेश के नरसिंहपुर जिले में स्थित गोटे गांव के समीप झोतेश्वर धाम में निधन हो गया। वे अपने जीवन के 98 वर्ष पूरे कर चुके थे। अंतिम समय में शंकराचार्य के अनुयायी और शिष्य उनके समीप थे। उनका जन्म राज्य के महाकौशल अंचल के ही सिवनी जिले के दिघौरी में 1924 में हुआ था।

लम्बे समय से थे बीमार: स्वरूपानंद सरस्वती को हिंदुओं का सबसे बड़ा धर्मगुरु माना जाता था।

शंकराचार्य लम्बे समय से बीमार चल रहे थे। उनका बेंगलुरू में इलाज भी हुआ था। मृत्यु से कुछ दिन पूर्व ही वे आश्रम लौटे थे। स्वामी स्वरूपानंद सरस्वती को 12 सितम्बर को शाम 5 बजे परमहंसी गंगा आश्रम में भू-समाधि दी गई। स्वामी शंकराचार्य आजादी की लड़ाई में जेल भी गए थे। उन्होंने राम मंदिर निर्माण के लिए लंबी कानूनी लड़ाई भी लड़ी थी।

शिष्यों को जिम्मेदारी: उनके दो शिष्यों को अलग-अलग मठों की जिम्मेदारी सौंपी गई है। स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद ज्योतिष पीठ, जबकि स्वामी सदानंद शारदापीठ के प्रमुख बनाए गए हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराजसिंह चौहान, कांग्रेस नेता राहुल गांधी सहित अनेक नेताओं-धर्माचार्यों ने उनके निधन पर शोक व्यक्त किया है।

उदयपुर। बड़गांव निवासी श्रीमती अम्बाबाई सुथार का 24 अगस्त को देहावसान हो गया। वे अपने पीछे शोक विह्वल पुत्र देवेन्द्र, टीटू सुथार (प्रवक्ता देहात कांग्रेस), पौत्र जय व शिवांश सहित समृद्ध व सम्पन्न परिवार छोड़ गई हैं।

उदयपुर। श्री नंदरामजी माली निवासी खारोल कॉलोनी का 29 अगस्त को देहावसान हो गया। वे अपनी पीछे शोकाकुल पुत्र पुष्करराज (स्वामी जीवन देवमणि) हेमशंकर, कैलाश, पुत्री मंजू सैनी व उनका समृद्ध परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। श्री सत्य नारायणजी साहू का 1 सितम्बर को आकस्मिक स्वर्गवास हो गया। वे अपनी पीछे शोकाकुल पुत्र मनीष, रोहित साहू व पुत्री पिंकी नैणावा तथा भाई-भतीजों का वृहद परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। श्रीमती कमला शर्मा धर्मपत्नी श्री लक्ष्मीकांत जी शर्मा का 10 सितम्बर को आकस्मिक देहावसान हो गया। वे अपने पीछे शोकसन्तप्त पति, श्रीमती सीता देवी सासु मां, पुत्र विजय व प्रवीण सहित भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं।

उदयपुर। श्रीमती विमला देवी जी मंत्री का 6 सितम्बर को आकस्मिक स्वर्गवास हो गया। वे अपने पीछे धर्मपरायण शोकसन्तप्त पुत्र मुकेश, लोकेश, संजय व पंकज मंत्री, पौत्र-पौत्रियों, भाई-भतीजों का वृहद व सम्पन्न परिवार छोड़ गई हैं।

उदयपुर। श्री मनोहर लाल जी मेहता (मंगलम ज्वेलर्स) का 25 अगस्त को स्वर्गवास हो गया। वे अपने पीछे शोक सन्तप्त पुत्र विनोद, पौत्र जाग्रत, पुत्रियां अंजलि मोतियानी, सपना गाबरा, दिशा टेकवानी, सौम्या बाहिरवानी व भाई-भतीजों का सम्पन्न परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। श्री शंकरलाल जी मंगरोरा (साहू) सोकरोदा वाला का 4 सितम्बर को निधन हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल पुत्र किशन, प्रकाशचन्द्र व शेखर, पुत्री श्रीमती ललिता कुराड़िया सहित भाई-भतीजों, पौत्र-पौत्रियों, दोहित्र-दोहित्रियों का सम्पन्न परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। श्रीमती रामकुमारी त्यागी पत्नी स्व. श्री रघुनाथ सिंह जी त्यागी का 6 सितम्बर को देहावसान हो गया। वे अपने पीछे व्यथित हृदय पुत्र शक्ति सिंह, विनय कुमार, पुत्रियां श्रीमती अनुराधा व डॉ. साधना सहित पौत्र-पौत्रियों दोहित्र-दोहित्रियों का भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं।

उदयपुर। श्री गणपत लाल जी बाफना मिर्चीवाला का 22 अगस्त को आकस्मिक निधन हो गया। वे अपने पीछे भाई-भतीजों का वृहद परिवार छोड़ गए हैं।

'प्रत्यूष' की हार्दिक श्रद्धांजलि

कन्हैयालाल साहू
डायरेक्टर
9660846518

दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं

जितेन्द्र साहू
डायरेक्टर
9928521329

RS

RAMJI SWEETS

शादी एवं पार्टियों के ऑर्डर लिए जाते है

होलसेल व रिटेल : शुद्ध देशी घी की मावे की एवं बंगाली मिठाइयां, स्पेशल स्पंजी रसगुल्ला

युनिवर्सिटी मैन रोड, उदयपुर- 313001 (राज.)

BHUPAL NOBLES' SANSTHAN, UDAIPUR

Vidya Pracharini Sabha, Udaipur, Rajasthan (Estd. 1923)

www.bnsansthan.org

संस्थान स्थापना शताब्दी वर्ष 1923–2023

Pioneer Institute of Academic Excellence since last 100 years providing Quality Education and Career Base to students to become Noble Citizens of the Society.

Equipped with the latest and Hi-tech state-of-the-Art educational facilities. Post Matric Fellowship of State Govt. and other scholarships available.

Bhupal Nobles' P.G. College (Co-Education)

Bhupal Nobles' P.G. Girls' College, Udaipur

Faculty of Social Sciences & Humanities (Arts) (Contact - 9414163337)

B.A. • All subjects **B. Lib.** • **M. Lib.** • **M.S.W.** • **M.J.M.C.**

M.A. • Political Science, History, Sociology, English Lit., Hindi Lit. Geography Economics, Public Administration, Psychology, Drawing & Painting, Home Science

Ph.D. • Political Science, History, Sociology, English Lit., Geography Economics, Public Administration, Psychology, Visual Art, Home Science , Hindi Lit.

Faculty of Commerce & Management (Contact - 9413318919)

B.Com • **B.B.A** • **M.B.A**

Hotel Mgt. • BHM • B.Voc in Tourism and Hospitality M.T.T.M.

M.Com • ABST, Bus. Adm., Banking & Business Economics

Ph.D. • ABST, Bus. Adm., Banking & Bus. Economics

Faculty of Science (Contact - 9928996640)

B.Sc. • Botany, Mathematics, Computer Science, Biotech

B.Sc. Bio-Technology (Honours) B.C.A. • **PGDCA**

M.Sc. • Physics, Mathematics, Chemistry, Bio-technology, Botany, Zoology Computer Science, Microbiology, Statistics, Geology.

Ph.D. • Physics, Mathematics, Chemistry, Bio-technology, Botany, Zoology, Computer Science & Application.

Faculty of Pharmacy (Contact – 7230060842)

• **B.Pharma** • **D. Pharma**

• **Pharm D** • **Pharm D – (PB)**

M.Pharma • Pharmaceutics, Pharmacology, Pharm Chemistry Quality Assurance

Ph.D. • Pharmaceutics, Pharmacology, Pharm Chemistry, Pharmacognosy

Bhupal Nobles' College of Pharmacy

Ph.- 0294-2413182, 9829898106

Bhupal Nobles' Institute of Pharmaceutical Sciences

Ph. 0294-2410406, 9828232800

Faculty of Agriculture (Contact - 9414758036)

• **B.Sc. (Honours)** • Agriculture

• **B.Sc.** Community Science • **B.Sc. FND** • **M.Sc. HDFS**

Faculty of Education (Contact - 7230060844)

• **B.P.Ed., M.P.Ed., D.Y.Ed. Ph.D.** • Physical Education

• **B.A. B.Ed.** • **B.Sc. B.Ed.** • **B.Ed.**

• **M.A.** Yoga • **M.A.** Education

Faculty of Law (Contact -7014398673)

• **LLB** • **LLM** • **B.A. LLB** (Integrated)

Pratap Shodh Pratishthan (Contact - 9571601857)

Historical & Cultural Research Centre.

Bhupal Nobles' Sr. Sec. School (RBSE) (Contact - 7230060828)

Email : bnsss1923@gmail.com Ph. 0294-2423952

Bhupal Nobles' Public School (CBSE) English Medium

Email : bnpublicudaipur@rediffmail.com

Ph. 0294-2426018, 7014355344, **Nursery to XII Classes.**

Stream: Science ; Maths, Biology, Agriculture, Commerce and Humanities (Arts) All Subjects.

Bhupal Nobles' Girls' P.G. College, Rajsamand

(Affiliated to M.L.Sukhadia University, Udaipur)

Email: bngc.kankroli@gmail.com Ph. 02952-230707, 9414158352, 9828579061

B.A., B.Com, BBA, B.Sc., BCA, M.A., M.Sc. (Chemistry), M.Com.(Bus. Adm.) M.A. (Sociology, Geography, Sanskrit, Hindi Lit.)

Bhupal Nobles' Girls' College, Salumber

(Affiliated to M.L.Sukhadia University, Udaipur)

Email: bngirlssalumber@gmail.com Ph. 02906- 232411, 9829751253

B.A., B.Com.

Other Facilities

- Maharana Raj Singh Swimming Pool
- Maharana Mahendra Singh Gymnasium
- Bhupal Nobles' Sports Shooting Range
- Bhupal Nobles' Cricket Academy

Hostel Facility Available for Girls & Boys Separately

Contact : 0294-2417181, 9414313542, 7230060831

Bhupal Nobles' University

Email – registrar@bnuniversity.ac.in 0294- 2414497, 2414498 www.bnuniversity.ac.in

WITH BEST COMPLIMENTS

BANSWARA

A Global Player in the Business of Fashion offering integraged Textile Solution to leading Brands World-wide & An Ideal Garment Solution Provider to Domestic & Global Readymade Brands

BANSWARA SYNTEX LTD

Regd. Office & Mills:
Industrial Area, Dahod Road,
BANSWARA-327001 (RAJ).
Ph. +91-2962-257680, 9549894601-2
Fax: +91-2962-240692
Email: info@banswarasyntex.com

Mumbai Office
Gopal Bhavan (5th Floor)
199, Princess Street
MUMBAI – 400002
Phone: +91-22-66336571-76
Email: info@banswarasyntex.com

Visit us at :www.banswarasyntex.com

Garment Unit:
Banswara Garments
98/3, Village Kadaiya
Nani Daman (U.T.)
Phone: +91-260-2221345, 2221505
Email: info@banswarasyntex.com

Surat Unit:
Plot No.5-6, G.I.D.C. Apparel Park
SEZ Sachin
SURAT-394230 (GUJARAT)
Phone: +91-261-2390363
Email: info@banswarasyntex.com

With Best Compliments from:

Lipi Data Systems Limited

Company Overview:

Incorporated in 1986, Lipi is among the top 3 Indian IT peripheral companies of the country. For over 25 years, Lipi has been committed towards providing the best of technologies and services through indigenously designed products. Lipi has been the market leader in the Line Matrix & High-Speed Dot Matrix Printer categories for decades.

Lipi's current manufacturing product range includes-

- Wide range of High Speed Line & Dot matrix printers
- Card printers & Thermal printers
- Passbook Printers
- Automatic Teller Machines (ATM) & Multifunction Kiosk

Apart from manufacturing as mentioned above, Lipi also market, sale & support following high technology products in India through its branch offices & wide dealer network-

- Multi function Laser printers
- Laser printer Compatible Cartridges
- Banking Automation products
- Spare & Consumables for all above products.

Head Office: 1, Mittal Chambers, Nariman Point, Mumbai - 400021
Phone:+91-22-22882960 Fax.:+91-22-22873314
Website: http://www.lipidata.in, E-mail: sales.enquiry@lipidata.in

Lipi®

printing & automation solutions